गूजरात विद्यापीठ ग्रंथावली – पु० ५६

प्राचीन हिन्दी कविता

संपादक

गिरिराजकिशोर

अम्बाशंकर नागर



गूजरात विद्यापीठ

अहमदाबाद–१४

मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

प्रकाशक
मगनभाई प्रभुदास देसाई
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद – १४

पहली बार, प्रति १२००
दूसरी बार प्रति १०००

कीमत रु० १ ६२ सितम्बर, १९५

प्रकाशकका निवेदन

१९ वी सदीके प्रारंभ तक हिन्दी करीब करीब सारे देशकी राष्ट्रभाषा ही समझी जाती थी। इसका प्रचार सारे देशमें था। इसका श्रेय साधुसंतोंको है। ये लोग सारे देशमें घूमते थे और अपने पदों द्वारा जनतामें ज्ञान फैलाते थे। उस समय साधुसंतोंकी भाषा हिन्दी ही समझी जाती थी, और आज भी वैसा ही है। इससे बहुतसे अहिंदीभाषी साधुसंतोंने भी अपनी रचनायें हिन्दीमें की हैं। मगर अंग्रेजी राज्यकालमें अंग्रेजीके प्रचारसे हिन्दीकी राष्ट्रभाषाकी हैसियतको धक्का लगा, और दूसरी लिपिमें भी उसकी लिखावट शुरू होनेके कारण उसकी उर्दू शैली भी शुरू हुई। इससे राष्ट्रभाषा हिन्दीकी पुरानी विशालता जाती रही और हिन्दी उर्दू दोनोंमें संकुचितता और अलगपन-सा आ गया। जो देशके लोगोंकी एक सामान्य भाषा थी वह इस तरह छोटी एक प्रदेशभाषा बन गई। आजादीके जंगके जमानेमें गांधीजीकी कोशिशोंसे इस गलतीकी तरफ हमारा ध्यान गया और हिन्दी उर्दूको उनके इस संकुचित दायरेसे निकालकर देशने एक राष्ट्रभाषा बनानेका सोचा। हजारों भाईबहन इस भाषाको सीखने लगे। इसके फलस्वरूप हमारे विधानने तय किया कि हमारे देशके सब भाषाभाषी लोग मिलकर एक विशाल भाषा बनाकर अब अपने लिए राष्ट्रभाषा पायेंगे। इसके लिए हिन्दी उर्दूके साथ हमारी दूसरी प्रदेश-भाषायें भी इस व्यापक प्रयत्नकी मदद करेंगी।

यह संग्रह ऐसी राष्ट्रभाषा हिन्दीके अभ्यासके खयालसे तयार किया गया है।

प्राचीन कवितासे यह मतलब समझा गया है कि अंग्रेजी राज्य स्थापित होनेके पहले समय तककी कविता। जस ऊपर कहा है तब हिन्दी देशकी राष्ट्रभाषा थी। अनेक अहिन्दी साधुसंत भी इस भाषामें अपने भजन लिखते थे। ये भी राष्ट्रभाषा हिन्दीका एक पढ़नेके काबिल खजाना है। इस दृष्टिसे इसमें गुजराती और मराठी संतोंके लिखे हिन्दी पदोंको भी स्थान दिया गया है। यह इसकी एक ध्यान-पात्र विशेषता है। आशा है यह संग्रह राष्ट्रभाषाके प्रचारमें मदद रूप होगा। शाला महाशालाओंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका अभ्यास अब शुरू हो रहा है उसमें भी यह संग्रह पाठ्यपुस्तकके तौर पर काम देगा।

इस संग्रहके तैयार करनेमें कई हिन्दीप्रेमी प्रचारक भाई-बहनोंने मदद की है उन सबका मैं आभार मानता हूँ।

१०-४-'५४

सपादनके बारेमें

११ वी सदीके आसपास अपभ्रंश भाषाओंसे प्रांतीय भाषाओंका आरम्भ हुआ। हिन्दीकी शुरुआत भी इसी समय हुई। तबसे लेकर १९ वी सदीके मध्यके लगभग प्राचीन हिन्दी कविताका समय समझा जाता है कि जबसे खडी बोलीमें कविता लिखी जाने लगी। इस लम्बे अर्सेमें हिन्दी कविता भाषा और भावोंकी दृष्टिसे बडी विविध रही।

इस सग्रहमें कवियोंको हमने ऐतिहासिक क्रमसे लिया है। इससे भाषाके विकासका खयाल पाठकको आ जायेगा कि किस तरह से आदिकालकी अपभ्रंशके पुटकी हिन्दी धीरे धीरे मँजती गई और मुसलमानोंके हिन्दमें बस जानेसे अरबी फारसीका असर उस पर पडता गया, और व्रज काव्यकी भाषा बन गई। वस कबीर, नानक और दादू आदि सतोने सधुक्कडी भाषामें और जायसी और तुलसी आदि कवियोंने अवधीमें भी रचनायें कीं। जायसी और कुछ फारसी पढे लिखे कवियोंने तो हिन्दी भाषाको फारसी लिपिमें भी लिखना शुरू कर दिया।

यह बात तो भाषाके सबधकी रही। भावोके खयालसे प्राचीन कवितामें खूब विविधता है। मगर मुख्यत वीर, भक्ति और शृगार रसकी रचनायें ही इसमें हुई, और जिस समय जिस रसकी रचनाओंकी अधिकता रही वह समय उस रसके नामसे प्रसिद्ध हो गया।

यह सग्रह राष्ट्रभाषाके अभ्यासके खयालसे तैयार किया गया है। कवियों और उनकी रचनाओंके चुनावमें यह बात ध्यानमें रखी गई है कि ऐसे कवियों और काव्योंको लिया जाय कि जो अपना असर समाज पर छोड गये है। मगर सबका इस छोटेसे सग्रहमें

समावेश करना मुमकिन नही रहा, तो भी सग्रहके अतमें 'कविता-कुज' म कुछ मशहूर कवियोकी एक एक दो दो रचनायें बानगीके तौर पर ली गई ह जिससे उनका परिचय हो और पाठक उनको पढनेके लिए उत्सुक हो। हरएक कविकी बहुत सक्षेपमें जीवनी दी गई है और उनकी प्राप्त मशहूर रचनाओके नाम दिये गये ह, जिससे पाठकोको अभ्यासमें मदद मिले।

बहुतसे अहिन्दी भाषी सतोने हिन्दीमें पद रचे है और राष्ट्रभाषा हिन्दीको समृद्ध किया है। ऐसे सतोकी रचनायें भी इस सग्रहमें ली गई है।

पुरानी हिन्दी और आजकलकी हिन्दीमें काफी अतर है और बहुतसे शब्दकोशोमें पुरानी हिन्दीके शब्द नही मिलते। पाठकोकी इस मुश्किलको खयालमें रखकर सग्रहके अतमें शब्दोके अर्थ दिये गये ह।

इस सग्रहको भाषाके अभ्यासकी दृष्टिसे ज्यादासे ज्यादा उपयोगी बनानेकी कोशिश की गई है। अगर इसकी उपयोगिता बढानेके सबधमें पाठक सुझाव पेश करेंगे तो हम उनके आभारी होगे।

गूजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद
ता० १०-४- ५४

गिरिराजकिशोर
अम्बाशङ्कर नागर

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्रकाशकका निवेदन	३
	संपादनके बारेमें	५
१	चंदवरदाई	१
२	अमीर खुसरो	३
३	विद्यापति	६
४	कबीर	८
५	रैदास	१४
६	गुरु नानक	१६
७	दादू दयाल	१८
८	मलूकदास	२१
९	जायसी	२३
१०	गोस्वामी तुलसीदास	२७
११	सूरदास	३५
१२	मीराबाई	४०
१३	नन्ददास	४६
१४	रसखान	४८
१५	रहीम	५१
१६	केशवदास	५५
१७	बिहारी	६०
१८	भूषण	६४
१९	नामदेव	६७
२०	अखा	६९
२१	मनोहरदास	७१
२२	दयाराम	७३
२३	कविता-कुंज	७६
	कठिन शब्दार्थ	८२

१

चदबरदाई

चदबरदाई हिन्दीके आदि कवि माने जाते है। कहा जाता है कि इनका और पृथ्वीराजका जन्म एक ही दिन हुआ और मृत्यु भी एक ही दिन हुई। ये पृथ्वीराजके राजकवि होनेके साथ ही साथ उनके मित्र और सामन्त भी थे। ये अनेको विद्याओ और भाषाओके महान पडित थे। इनका रचना-काल ई० सन् १२०० के आसपास माना जाता है। इस महाकविने पृथ्वीराजके वर्णनमें अपना प्रसिद्ध ग्रथ 'पृथ्वीराज रासो' लिखा है।

'रासो' बहुत बडा महाकाव्य है। इसमें पृथ्वीराजके जन्मसे लेकर मृत्यु तककी सब घटनाओका वर्णन विस्तारसे किया गया है। जैसे सस्कृतके कवि बाणभट्टकी 'कादम्बरी'का अतिम भाग उसके पुत्रने पूरा किया उसी प्रकार रासोका अतिम भाग चदके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया है।

'रासो' की भाषा हमारे लिए कठिन है। यह उस समयकी भाषा है जब अपभ्रशका अत हो रहा था और हिन्दी तथा दूसरी प्रातीय भाषाएँ अपना रूप धारण कर रही थी। 'रासो' में अरबी और फारसी शब्दोका भी उपयोग हुआ है। इससे मालूम होता है कि चदके समय तक हिंदुओ और मुसलमानोमें काफी मेलजोल हो गया था कि जिसके कारण मुसलमानोकी भाषाका असर हिन्दी पर पडा।

सजमरायका आत्मत्याग

[नीचेकी कवितामें आल्हा और पृथ्वीराजके युद्धमें पृथ्वीराजके मूर्छित होने पर गिद्धनीका उसकी आख निकालनेका और युद्ध-भूमिमें घायल गिरे हुए सजमरायका उसे अपना मांस देकर राजाको बचानेका वर्णन है।]

कवित्त

लोह लागि चहुँवान परे मूरछा ह्व धरतिय।
उड गीधनि बठिक चुञ्च याहति विरित्तिय।।
देख्यो सजमराय नृपति दग दाढ़ति पछिन।
अपने तनको मास काटि भखु दियो ततच्छिन।।
अपन सुनयन देख्यो नृपति अन्त समै भ्रम पल्लिमय।
आये बिवान बकुठके देह सहत धरि चल्लियव।।

दूहा

गीधनिको पल भखु दियौ, नृपके नन बचाय।
देह हँसत बैकुठ कौ, पहुँच्यो सजमराय।।

(महोवा-खडसे)

पद्मावतीका सौंदर्य

[रासाके पद्मावती-समयमें पृथ्वीराज और पद्मावतीके विवाहका वर्णन है। पद्मावती समुद्रशिखरके राजा पद्मसेनकी कन्या थी।]

कुट्टिल केस सुदेस, पौहप रचियत पिक्कसद।
कमल गन्ध वय सन्ध, हस गति चलत मन्द मन्द।।
सेत वस्त्र सोह सरीर, नख स्वाति बुंद जस।
भमर भँवहि भुल्लहि सुभाव, मकरद वास रस।।
नन निरखि सुख पाय सुक, यह सदिन मूरति रचिय।
उमा प्रसाद हर हेरियत, मिलहि राज प्रथिराज जिय।।

(पद्मावती-समयसे)

२

अमीर खुसरो

'हिन्दी' शब्दके जन्मदाता और खडीबोलीके प्रथम कवि खुसरोका जन्म १२५६ ई० में हुआ और मृत्यु १३२५ ई० में हुई। इन्होने अपने जीवनकालमें ११ बादशाहोंको दिल्लीके तख्त पर बठत देखा, जिनमें से ये सातके दरबारमें रहे। कहा जाता है कि इन्होने ९४ ग्रथ लिखे, मगर मिलते है केवल २२।

खुसरो काव्य, गायन और वादनके माने हुए उस्ताद थे। ये बडे मिलनसार, रसिक विनोदी और सभाचतुर व्यक्ति थे। अरबी, फारसी और देश भाषाओके बडे विद्वान थे पर इन्होंने लोगोंके हितके लिए बोलचालकी साधारण भाषामें ही कविता की। खुसरोकी भाषाका ढाँचा ब्रजका है, पर उसमें इन्होंने अरबी फारसीके प्रचलित शब्दोका प्रयोग बडी सुन्दरता और सावधानीसे किया है। इससे हिन्दीमें एक अजीब प्रकारका लुत्फ पैदा हो गया।

इनकी पहेलिया, मुकरियाँ, सुखना, दो सुखना, और गीत लोक-शिक्षाकी दृष्टिसे बडे महत्त्वकी रचनायें है। इस समयमे हिन्दू-मुसलमान दोनो एक दूसरेकी भाषा सीखने लगे थे। इस काममें लोगोको मदद मिले, इस विचारसे इन्होने 'खालिक बारी' नामका एक शब्दकोश लिखा। इसमें फारसी तुर्की और अरबी शब्दोके हिन्दी पर्याय बडी कुशलतासे दिये गये है। यह कोश लोगोंके लिए बडा मददगार साबित हुआ।

खालिक़ बारी

रसूल पैग़म्बर जान बसीठ। यार दोस्त बोले जा ईठ।।
मद मनस जन है इस्तरी। कहत अकाल बवा ह मरी।।

बिआ बिरादर, आओ रे भाई। बिनशीं मादर, बैठ री माई।।
तुरा बगुपतम मैं तुझ कह्या। कुजा बिमादी, तू कित रह्या।।
राह तरीक सबील पहचान। अथ तेहुका मारग जान।।

पहेलियाँ

एक पुरुष बहुत गुन भरा, लेटा जागे सोवे खड़ा।
उलटा होकर डाले बेल, यह देखो करतारका खेल।।
(चरखा)

श्याम बरन और दांत अनेक, लचकत जैसे नारी।
दोनो हाथसे खुसरो खींचे, और कहे तू आरी।।
(आरी)

बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कछु काम न आया।
खुसरो कह दिया उसका नाव, अर्थ करो या छोड़ो गाँव।।
(दिया)

एक नार तरवरसे उतरी मा सो जनम न पायो।
बापको नाँव जो वासो पूछयो आधो नाँव बतायो।।
आधो नाव बतायो खुसरो कौन देसकी बोली।
याको नाँव जो पूछयो मने अपने नाव न बोली।।
(निबोली)

बीसोका सिर काट लिया। ना मारा ना खून किया।।
(नाखून)

फारसी बोली आई ना। तुर्की ढूढ़ी पाई ना।।
हिन्दी बोली आरसी आये। मुह देखे जो उसे बताये।।
(आरसी)

दानाई से दाँत उस प लगाता नहीं कोई।
सब उसको भुनाते हैं प खाता नहीं कोई।।
(रुपया)

श्याम बरन पीताम्बर कांधे, मुरलीधर नहीं होय।
बिन मुरली वह नाद करत है, विरला बूझ कोय॥

(भौंरा)

मुकरियाँ

वह आवे तब शादी होय। उस बिन दूजा और न कोय॥
मीठे लाग वाके बोल। ऐ सखि साजन, ना सखी ढोल॥
जब माँगू तब जल भर लावे। मेरे मनकी तपन बुझावे॥
मनका भारा तनका छोटा। ऐ सखी साजन, ना सखी लोटा॥
जब मोरे मंदिरमें आवे। सोते मुझको आन जगावे।
पढ़त फिरत वह बिरहके अच्छर। ऐ सखी साजन, ना सखी मच्छर॥
सारि रैन मोरे संग जागा। भोर भई तब बिछुड़न लागा।
वाके बिछुड़त फाटे हिया। ऐ सखी साजन, ना सखी दिया॥

सुखना

पान सड़ा क्यों? घोड़ा अड़ा क्यों?	—फेरा न था।
जूता क्यों न पहना? समोसा क्यों न खाया?	—तला न था।
अनार क्यों न चक्खा? वज़ीर क्यों न रक्खा?	—दाना न था।
सितार क्यों न बजा? औरत क्यों न नहाई?	—परदा न था।
पंडित क्यों पियासा? गदहा क्यों उदासा?	—लोटा न था।

दो सुखना

सौदागर राचे मी बायद—बूचे को क्या चाहिये? दो कान।
तिश्ना रावे मी बायद—मिलाप को क्या चाहिये? चाह।
शिकार बचे मी बायद कर्द—कूवते मग़ज़को क्या चाहिये? बादाम।

गीत

अम्मा, मेरे बाबाको भेजो जी, कि सावन आया।
बेटी, तेरा बाबा तो बुड्ढा री, कि सावन आया॥

अम्मा, मेरे भाई को भजो जी, कि सावन आया।
बेटी, तेरा भाई तो वाला री, कि सावन आया॥
अम्मा, मेरे मामूको भेजो जी, कि सावन आया।
बेटी, तेरा मामू तो बाँका री, कि सावन आया॥

दोहा

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस॥

३

विद्यापति

मथिल-कोकिल विद्यापति ईसाकी पन्द्रहवी शताब्दीके शुरूमें हुए। इन्होंने राधा और कृष्णके सम्बन्धमें पूर्वी हिन्दीमें बडे ही अनठे श्रृंगारिक पद लिखे ह। विद्यापतिने पूर्वी अपभ्रंशमें भी कुछ रचनाएँ की ह। तिरहुतके राजा कीर्तिसिंहकी प्रशंसामें लिखी गई 'कीर्तिलता' और 'कीर्ति पताका' ऐसी ही संस्कृत और प्राकृत मिश्रित मथिलीकी रचनाएँ ह। कीर्तिलता में अपनी भाषाके प्रति कविने स्वयं कहा ह—

देसिल वअना सबजन मिट्ठा।
त तैसन जम्पआ अवहट्ठा॥

(देशी भाषा सब लोगोको मीठी लगती है यही जानकर मने अवहट्ठ भाषामें रचना की ह।)

बंगभाषा भाषी इन्हें अपना आदि कवि और बंगभाषाका प्रवतक कहते हैं। हिन्दीवाले इन्हें पुरानी हिन्दीकी पूर्वी शाखाका कवि मानते हैं। और मथिल भाषा भाषी इन पर अपना ही अधिकार जमाते ह। इससे विद्यापतिकी भाषाकी विविधता और लोकप्रियताका पता चलता ह।

(१)

सरसिज बिनु सर
सर बिनु सरसिज
की सरसिज बिनु सूरे।
जौवन बिनु तन
तनु बिनु जौवन
की जौवन पिय दूरे।
सखि हे मोर बड़ दव विरोधी॥

(२)

माधव, हम परिनाम निरासा।
तुहु जगतारन दीन दयामय अतए तोहर बिसवासा॥
आध जनम हम नींद गमायनु जरा सिसु कत दिन गेला।
निधुवन रमनि रभस रंग मातनु तोहे भजब कओन बेला॥
कत चतुरानन मरि मरि जाओत न तुअ आदि अवसाना।
तोहे जनमि पुन तोहे समाओत सागरि लहर समाना॥
भनइ विद्यापति सेष समन भय तुअ बिनु गति नहीं आरा।
आदि अनादि नाथ कहाओसि अब तारन भार तोहारा॥

(३)

ऐ हरि, बन्दों तुअ पद नाय।
तुअ पद परिहरि पाप-पयोनिधि
पारक कओन उपाय॥
जावत जनम नहि तुअ पद सेविनु
जुबती मति मयँ मेलि।
अमत तजि हलाहल किए पीअल
सम्पद अपदहि भेलि॥

भनइ विद्यापति नेह मने गनि
कहल कि बाढब काजे।
साझक बेरि सेवकाई मँगइत
हेरइत तुअपद लाजे॥

४

कबीर

इनके जन्मके सम्बन्धमें अनेको कथाएँ प्रचलित है। मगर पता यह चलता है कि इनका जन्म हिन्दू घरानेमें और लालन-पालन मुसलमान परिवारमें हुआ। दोनो ही जातियोके धार्मिक संस्कारोकी छाप इनके काव्यमें साफ दिखाई देती है। इनका जन्म सन् १४०० में हुआ और मृत्यु १५१९ में हुई।

कबीरने एक ओर रामानन्दजीसे दीक्षा ली तो दूसरी ओर शेख तकी साहबका भी असर इन पर पड़ा। कबीर पढ़े लिखे नही थे पर सत्संग और सारे देश में घूमनेसे इनके ज्ञान और भाषाका भंडार काफी समृद्ध हो गया था। इन्होने अपने समयकी माँगको अच्छी तरह समझा था और अनुभव किया था कि हिन्दू और मुसलमानोके आपसी झगड़ोका मुख्य कारण धर्मभेद ही है। यह समझकर इन्होने एक सामान्य धर्म और भक्तिका मार्ग हिन्दुओ और मुसलमानोंके लिए खोला, जिसमें न ऊँच-नीचका भेद था न जात-पातका। इन्होने उस समयके सभी धर्मों और उपासना पद्धतियोका समन्वय अपने धर्ममें किया।

कबीर बड़े ही अक्खड़, फक्कड़ और मनमौजी संत थे। इन्होने हिन्दुओ और मुसलमानोको उनकी कुरीतियोंके लिए खूब फटकारा है। हिन्दुओके श्राद्ध, तीर्थ और मूर्तिपूजाकी जहाँ इन्होने हँसी उड़ाई है वहाँ मुसलमानोके रोजा, नमाज, और हजकी भी इन्होने कड़ी आलोचना की है।

कबीरकी भाषा सधुक्कडी भाषा है, जिसमें अरबी, फारसी, राजस्थानी, पजाबी, अवधी, पूर्वी हिन्दी और ब्रजके शब्दोंका अनूठा मिश्रण देखनेको मिलता है। व्याकरण, पिंगल और अलकार शास्त्रकी भलाके बावजूद कबीरकी वाणीमें उनकी प्रतिभाका अनोखा चमत्कार दिखलाई पडता है।

साखी

(१)

सात समदकी मसि करौं, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, हरि-गुण लिख्या न जाइ।।

(२)

सो साईं तनमें बसे, ज्यू पुहपनमें बास।
कस्तूरीके मिरग ज्यू, फिरि फिरि सूघ घास।।

(३)

गुरु गोबिन्द दोनू खडे, काके लागू पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोबिन्द दिया बताय।।

(४)

पोथी पढ़ि पढि जग मुआ, पडित हुआ न कोय।
ढाई अच्छर प्रेमका, पढ़ सो पडित होय।।

(५)

हँसि हँसि कत न पाइये, जिन पाया तिन रोय।
जे हाँसे ही हरि मिले, नहीं दुहागिनि कोय।।

(६)

साझ पडी दिन आँथयो, चकई दीनो रोय।
चल चकवा वा देसमें, रैन कबे नहि होय।।

(१५)

पान झड़ता यूं कहै, सुनि तरवर बनराइ।
अबके बिछुड़े ना मिलै, दूरि पड़ैंगे जाइ॥

(१६)

काची काया मन अथिर, थिर थिर काम करंत।
ज्यूं-ज्यूं नर निधड़क फिरै, त्यूं-त्यूं काल हँसंत॥

(१७)

चलती चक्की देखि करि, दिया कबीरा रोइ।
दो पाटनके बीच मैं, बाकी बचा न कोइ॥

(१८)

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इव पड़ंत।
कहै कबीर गुरु ग्यान तैं, एक-आध उबरंत॥

(१९)

कबीर ऐसा बीज बो, बारह मास फलंत।
सीतल छाया, गहर फल, पंखी केलि करंत॥

(२०)

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिनु पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥

(२१)

मूंड मुंडाये हरि मिलैं, सब कोइ लेइ मुंडाय।
बार बार के मूड़ते, भेड़ न बैकुंठ जाय॥

(२२)

दिन भर रोजा रहत है, राति हनत है गाय।
यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुसी खुदाय॥

(२३)

इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहूका नाँहि।
घरकी नारी को कह, तनकी नारी जाँहि ॥

(२४)

लाली मेरे लालकी, जित देखो तित लाल।
लाली देखन म गई, हो गइ म भी लाल ॥

(२५)

जलमें कुभ कुभमें जल ह, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुभ जल जलहि समाना, यह तत कथी गियानी ॥

सबद

(१)

पानी बिच मीन पियासी।
मोहि सुनि-सुनि आवत हाँसी ॥

आतम ग्यान बिना सब सूना, क्या मथुरा क्या कासी।
घरमें वस्तु धरी नहि सूझे, बाहर खोजन जासी ॥

म्रिगकी नाभि माहि कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सहज मिल अबिनासी ॥

(२)

मन फूला फूला फिर जगतमें कैसा नाता रे ॥
माता कह यह पुत्र हमारा बहिन कह बिर मेरा।
भाई कह यह भुजा हमारी नारि कह नर मेरा ॥
पेट पकरिके माता रोव बाह पकरि क भाई।
लपटि झपटिके तिरिया रोव हस अकेला जाई ॥
जब लगि माता जीव रोव बहिन रोव दस मासा।

तेरह दिन तक तिरिया रोव फेर कर घर वासा ॥
चार गजी चरगजी मँगाया चढ़ा काठको घोडी।
चारो कोने आग लगाया फूक दियो जस होरी ॥
हाड जरं जस लाकडी कोइ केस जर जस घासा।
सोना ऐसो काया जरि गइ कोई न आयो पासा ॥
घरकी तिरिया देखन लागी ढूढ़ि फिरी चहुँ देसा।
कह कबीर सुनो भाई साधो छाडो जगकी आसा ॥

(३)

करम गति टार नाहिं टरी।
मुनि वसिष्ठसे पडित ज्ञानी सोधिके लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथको बनमें बिपति परी ॥
कहँ वह फद कहाँ वह पारिधि कहँ वह मिरग चरी।
सीताको हरि लगो रावन सुबरन लक जरी ॥
नीच हाथ हरिचन्द बिकाने, बलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगिट जोनि परी ॥
पाडव जिनके आपु सारथी, तिन पर बिपति परी।
दुरजोधनको गरब घटायो जदुकुल नास करी ॥
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा विधि सजोग परी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होके रही ॥

(४)

हमन हैं इस्क मस्ताना हमनको होसियारी क्या ?
रहे आजाद या जगमें हमन दुनियासे यारी क्या ?
जो बिछुडे है पियारेसे भटकते दरबदर फिरते।
हमारा यार है हममें हमनको इंतिजारी क्या ?
खलक सब नाम अपनेको बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरु नाम साँचा है हमन दुनियासे यारी क्या ?

न पल बिछुड़ें पिया हमसे न हम बिछुड़ें पियारेसे।
उन्होंसे नेह लागी है हमनको बेकरारी क्या?
कबीरा इश्कका माता दुईको दूर कर दिलसे।
जो चलना राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या?

(५)

साधो यह तन ठाठ तँबूरेका।
ऐंचत तार मरोरत खूटी, निकसत राग हजूरेका।
टूटे तार बिखर गई खूटी हो गया धूरम धूरेका॥
या देहीका गरब न कीजै उड़ि गया हंस तँबूरेका।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अगम पंथ कोइ सूरेका॥

५

रैदास

ये कबीरके समकालीन और रामानन्दजीके बारह शिष्योंमें से एक थे। जातिके चमार थे। आपके पद बड़े भावपूर्ण और सरस हैं। सगुण नामोंसे निर्गुणकी भावना बड़े सुन्दर ढंगसे इन्होंने व्यक्त की है।

धन्ना और मीराबाईने इनका नाम बड़े आदरसे लिया है। इनका लिखा कोई ग्रंथ नहीं मिलता। फुटकर पद बहुत हैं जो भाषा और भावकी दृष्टिसे बड़े मर्मस्पर्शी हैं। यह १५ वीं सदीके संत हैं। इनके जन्म और मृत्युकी बाबत कुछ पता नहीं चलता।

(१)

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ। फल अरु मूल अनूप न पाऊँ॥
थनहर दूध जो बछरू जुठारो। पुहुप भँवर जल मीन बिगारी॥
मल्यागिरि बेधियो भुअंगा। विष अमृत दोउ एक संगा॥

मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊँ सहज सरूप।।
पूजा अरचा न जानू तेरी। कह रदास कवन गति मेरी।।

(२)

सांची प्रीत हम तुम संग जोडी, तुम संग जोडि अवर सग तोडी।।
जो तुम बादर तो हम मोरा, जो तुम चद हम भये चकोरा।
जो तुम दीया तो हम बाती, जो तुम तीरथ तो हम जात्री।।
जहाँ जाऊँ तहँ तुम्हरी सेवा, तुम सा ठाकुर और न देवा।
तुम्हरे भजन कटे भय फाँसा, भक्ति हेतु गाव रदासा।।

(३)

प्रभुजी सगति सरन तिहारी।
जगजीवन राम मुरारी।।
गली गली को जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो।
सगतके परताप महातम नाम गगोदक पायो।।
स्वाति बूद बरस फनि ऊपर सीस विष होइ जाई।
वही बूद क मोती निपज सगतकी अधिकाई।।
तुम चन्दन हम रेड बापुरे निकट तुम्हारे आसा।
सगतके परताप महातम आव बास सुबासा।।
जाति भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा कसब हमारा।
नीचेसे प्रभु ऊँच कियो है कह रदास चमारा।।

६

गुरु नानक

इनका जन्म लाहौरके एक खत्री परिवारमें सन १४७० में हुआ और मृत्यु १५४० ई० में हुई। छोटी उमरमें ही इनका विवाह हो गया और दो पुत्र भी हुए।

बचपनसे ही नानककी रुचि भगवद् भक्तिकी ओर थी। कहते हैं एक बार इनके पिताने व्यवसायके लिए इन्हें धन दिया, मगर इन्होंने उसे संतोंमें ही बांट दिया। नानक अनेक देवी-देवताओंकी पूजामें विश्वास नहीं करते थे। ये एक ईश्वरकी ही आराधना करते थे। हिंदुओं और मुसलमानोंके झगड़ोंका अंत करनेके विचारसे इन्होंने निर्गुण संतमतको धारण किया।

इनके भजन संसारकी अनित्यता, भगवद् भक्ति और सत्-स्वभावकी बातोंसे संबंधित हैं। पद इतने मार्मिक और भावपूर्ण हैं कि वे आज भी मंत्रोंकी भांति सम्मानित हैं। इन भावपूर्ण पदोंका संग्रह 'गुरुग्रंथ साहब' के नामसे किया गया है जो सिक्खोंका पूज्य धर्मग्रंथ है।

गुरु नानकके पदोंकी भाषा कहीं पंजाबी, कहीं व्रज और कहीं हिन्दी है। भाषाकी विविधता निर्गुणी संतोंकी सदासे एक विशेषता रही है। गुरु नानककी भाषा सरल और सरस है। पदोंके भाव बड़े असरकारक हैं।

(१)

इस दमदा मनू कीवें भरोसा,
आया आया, न आया न आया।
यह संसार रैन दा सुपना,
कहीं देखा, कहीं नाहि दिखाया॥

सोच विचार करे मत मनमें,
जिसने ढूढ़ा उसने पाया।
नानक भक्तनदे पद परसे,
निस दिन रामचरन चित लाया।।

(२)

सुमरन कर ले मेरे मना।
तेरि बिति जाति उमर हरि नाम बिना।।
कूप नीर बिन धेनु छीर बिन मंदिर दीप बिना।
जसे तरुवर फल बिन हीना तसे प्राणी हरनाम बिना।।
देह नैन बिन रैन चंद बिन धरती मेह बिना।
जसे पंडित वेद विहीना तसे प्राणी हरनाम बिना।।
काम क्रोध मद लोभ निहारो छाड़ दे अब संत जना।
कहे 'नानकशा' सुन भगवता या जगमें नहिं कोइ अपना।।

(३)

काहे रे बन खोजन जाई।
सव निवासी सदा अलेपा, तोही संग समाई।।
पुष्प मध्य ज्यो वास बसत है, मुकर माहि जस छाई।
तसे ही हरि बसे निरंतर, घट ही खोजो भाई।।
बाहर भीतर एक जानो, यह गुरु ज्ञान बताई।
जन 'नानक' बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रमकी काई।।

७

दादू दयाल

इनका जन्म अहमदाबादमें सन् १५४५ में और मृत्यु राजस्थानमें १६०४ ई० में हुई। इनकी जातिके बारेमें बड़ा मतभेद है। कुछ लोग इन्हें धुनिया या मोची मानते हैं और कुछ गुजराती ब्राह्मण। दादू पंथका प्रधान केन्द्र राजस्थान रहा, क्योंकि इनके जीवनका अधिक अंश राजस्थानमें ही बीता।

दादूजीकी वाणीमें लगभग ५००० पदोंका संग्रह है जिनमें देवी गुरु मिलन वियोग, सत्य विश्वास और प्रार्थना आदि मुख्य विषय हैं। भाषा राजस्थानीसे प्रभावित पश्चिमी हिन्दी है। कुछ पद गुजरातीमें भी मिलते हैं। यह बड़े ऊँची कोटिके सन्त हुए हैं।

दोहा

(१)

घीव दूधमें रमि रह्या, व्यापक सबही ठौर।
'दादू' बकता बहुत है, मथि काढ़ै ते और॥

(२)

'दादू' दीया है भला, दिया करो सब कोय।
घर में धरा न पाइये, जो कर दिया न होय॥

(३)

केते पारिख पचि मुये, कीमति कही न जाइ।
'दादू' सब हैरान है, गूंगे का गुड़ खाइ॥

(४)

यह मसीत यह देहरा, सतगुरु दिया दिखाइ।
भीतर सेवा बंदगी, बाहिर काहे जाइ॥

(५)

जहा राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम।
'दादू' महल बरीक है, द्वै को नाहीं ठाम।।

(६)

मिसरी मांहै मेल करि, मोल बिकाना बंस।
यौं 'दादू' मौंहगा भया, पारब्रह्म मिलि हंस।।

(७)

काया कठिन कमान है, खींचै बिरला कोइ।
मारै पाचौं मिरगला, 'दादू' सूरा सोइ।।

(८)

हस्ती छूटा मन फिरै, काहु न बांध्या जाइ।
बहुत महावत पचि गये, 'दादू' कछू न बसाइ।।

(९)

क्या मुह लै हँसि बोलिये, 'दादू' दीजै रोइ।
जनम अमोलक आपणा, चले अकारथ खोइ।।

(१०)

कहि कहि मेरी जीभ रहि, सुणि सुणि तेरे कान।
सतगुरु बपुरा क्या करै, चेला मूढ़ अजान।।

(११)

जिहि घर निंदा साधुकी, सो घर गए समूल।
तिनकी नींव न पाइये, नाँव न ठाँव न धूल।।

(१२)

सुखका साथी जगत सब, दुखका नाहीं कोय।
दुखका साथी साइयाँ, 'दादू' सतगुरु होय।।

(१)

तुम बिन ऐसे कौन करै।
गरीबनेवाज गुसाईं मेरो माथै मुकुट धरै।।
नीच ऊँच ले करै गुसाईं, टारियो हूँ न टरै।।
हस्तकमलकी छाया राखै, काहु थै न डरै।।
जाकी छोति जगतको लागै, तापरि तू हि ढरै।
अमर आप ले करै गुसाईं, मारयो हूँ न मरै।।
नामदेव, कबीर जुलाहो, जन रैदास तिरै।
'दादू' बेगि बार नहिं लागै हरि सो सबै सरै।।

(२)

मनरे राम रटत क्यू (न) रहिये।
यहु तत बार बार क्यू न कहिये।।
जब लग जिभ्या बाणी। तौ लौं जपिले सारंगपाणि।।
जब पवना चलि जावै। तब प्राणी पछतावै।।
जब लग श्रवण सुणीजे। तौ लौं साधसबद सुनि लीजे।।
श्रवणौं सुरति जब जाई। ए तब का सुणि है भाई।।
जब लग ननहु पेखै। तौ लौं चरनकँवल क्यू न देखै।।
जब ननहु कछू न सूझै। ये तब मूरिख क्या बूझै।।
जब लग तन मन नीका। तौ लौं जपिले जीवनि जीका।।
जब 'दादू' जीव आवै। तब हरिके मनि भावै।।

(३)

अल्ला तेरा जिकर फिकर करते है।
आशिक मुश्ताक तेरे तस तस मरते है।।

खलक खेश दिगर नेस बठे दिन भरते ह।
दायम दरबार तेरे गर महल डरते ह॥
तन शहीद मन शहीद रात दिवस लडते ह।
ग्यान तेरा ध्यान तेरा इश्क आग जलते ह॥
जान तेरा जिद तेरा पावो सिर धरते ह।
'दादू' दीवान तेरा जर खरीद घरके ह॥

८

मलूकदास

'अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम।
'दास मलूका' कहि गये सबके दाता राम॥"

आलमियाके इस मूलमन्त्रके लेखक मलूकदासका जन्म इलाहाबादके एक खत्री परिवारमें सन् १५७५ मे हुआ और मत्यु १६८३ ई० में। ये औरगजेबके समयके प्रसिद्ध निर्गुणी सत थे। इनकी गद्दिया सारे भारतमें थी। कहते ह इन्होने अपनी सिद्धिके बल पर एक बार डूबते जहाजको बचा लिया था और रुपयोका लाडा गगाजीमे तैरा दिया था। इनकी भाषामे अरबी फारसीके शब्दोकी बहुतायत है। कुछ पद तो ठेठ खडी बोलीके प्रतीत होते ह। इनके दो प्रसिद्ध ग्रथ ह—'रत्नखान' और 'रत्नबोध'।

(१)

दीनबधु दीनानाथ मेरी तन हेरिये।
भाई नाहि बधु नाहि कुटुम्ब परिवार नाहि,
ऐसा कोई मित्र नाहि जाके ढिग जाइये।
सोनेकी सलया नाहि रूपेका रुपया नाहि,
कौडी पसा गाँठ नाहि जासे कछु लीजिये॥

खेती नाहिं बारी नाहिं बनिज ब्योपार नाहिं,
ऐसा कोई साहु नाहिं जासा कछु माँगिये।
कहत मलूकदास छाड दे पराई आस,
राम धनी पाइक अब काको सरन जाइये॥

(२)

तेरा म दीदार दिवाना।
घडी घडी तुझे देखा चाहूँ सुन साहेब रहमाना॥
हुआ अल्मस्त खबर नहीं तनकी पीया प्रेम पियाला।
ठाढ़ होऊँ तो गिरि गिरि परता तेरे रग मतवाला॥
खडा रहूँ दरबार तुम्हारे ज्यो घरका बदाजादा।
नेकीकी कुलाह सिर दीये गले परहन साजा॥
तौजी और निमाज न जानू ना जानू धरि रोजा।
बाँग जिकिर तबहीं से बिसरी जबसे यह दिल खोजा॥
कहै मलूक अब कजा न करिहौं दिल ही सो दिल लाया।
मक्का हज्ज हियमें देखा पूरा मुरसिद पाया॥

(३)

बीर रघुबीर पयगम्बर खुदाय मेरे,
कादिर करीम काजी मायर मत खोई ह।
राम मेरे प्रान रहमान मरे दीनिमान,
भूल गयो भया सब लोकलाज धोई ह।
कहत मलूक म तो दुविधा न जानौं दूजो,
जोई मेरे मनमें ह ननमें सोई ह।
हरि हजरत मोंहि माधव मुकुन्दकी सौं
छाँडि केशवराय मेरो दूसरो न कोई ह॥

भील कद करी थी भलाई जिया आप जान,
फील कद हुआ था मुरीद कहु किसका।
गीध कद ज्ञानकी किताबका किनारा छुआ,
व्याध और बधिक निसाफ कहु तिसका।
नाग कद माला लेके बदगी करी थी बठ,
मुझको भी लगा था अजामिलका हिसका।
ऐते बदराहोको बदी करी थी माफजन,
मलूक अजाती पर एती करी रिस का।।

९

जायसी

इनके जन्म और मृत्युके समयका ठीक ठीक पता नही। शेरशाहके राज्यकालमें सन् १५२० में इन्होने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पद्मावत' लिखी थी, ऐसा अनुमान ह।

मलिक मुहम्मद जायसी जायसके रहनेवाले थे। इनके गुरु शेख मुहीउद्दीन एक प्रसिद्ध सूफी फकीर थे। जायसी काणे और अत्यन्त कुरूप थे। ये अपने समयके प्रसिद्ध फकीरोमें गिने जाते थे।

जायसीकी कीर्तिका आधार इनका प्रसिद्ध ग्रथ 'पद्मावत ह। 'पद्मावत' के अलावा 'अखरावट' और 'आखरी कलाम', दो पुस्तकें इन्होने और लिखी ह।

जायसी प्रेममार्गी कवियोके प्रतिनिधि है। ये अपनी रचनाओमें अपने समकालीन कवियोसे बहुत आगे निकल गये ह। 'पद्मावत' में इन्होने ऐतिहासिक और पौराणिक तत्त्वोका मेल करके एक अनूठी

प्रतिभा और काव्य कौशलका परिचय दिया है। 'पद्मावत'का प्रेमकथामें सासारिक और आध्यात्मिक दोना तत्त्वोका सुदर समन्वय हुआ है।

ज्ञानमार्गी कवीरकी डाट फटकारने यद्यपि यह सिद्ध कर दिया था कि राम रहीम, मदिर मस्जिद और काबा-कैलासका झगडा व्यर्थ है पर प्रत्यक्ष जीवनमे उस एकताके स्वरूपको रखनेकी समस्या बनी हुई थी। प्रेममार्गी कवियोने यह काम हिंदुओकी कहानियाका हिंदुओकी भाषामें कह कर ही कर दिखाया। जो काम कवीरकी डाट फटकारमे नही बन पाया था वह जायसीके प्रेमपूर्ण व्यवहारसे बन गया।

'पद्मावत' फारसी मसनवियोकी शैली पर फारसी लिपिमें लिखा गया है। भाषा ठेठ अवधी है। काव्य और भाषाकी दृष्टिसे जायसी और उनका 'पद्मावत' प्रेममार्गके अद्वितीय रत्न हैं।

सदेश

म एहि अरथ पडित ह बूझा। कहा कि हम्ह किछु और न सूझा॥
चौदह भुवन जो तर उपराहीं। ते सब मानुपके घट माहीं॥
तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल, बुधि पदमिनि चीन्हा॥
गुरु सुआ जेइ पथ देखावा। बिन गुरु जगत को निरगुन पावा?
नागमती यह दुनिया धधा। बाचा सोइ न एहि चित बधा॥
राघव दूत सोइ सैतानू। माया अलाउदीं सुलतानू॥
प्रेमकथा एहि भाति बिचारहु। बूझि लेहु जौ बूझै पारहु॥

तुरकी, अरबी, हिंदुई, भाषा जेती आहि।
जेहि महँ मारग प्रेमकर, सबै सराहै ताहि॥

मुहमद कबि यह जोरि सुनावा। सुना सो पीर प्रेमकर पावा॥
जोरी लाइ रक्त क लेई। गाढि प्रीति नयनन्ह जल भेई॥
औ म जानि गीत अस कीन्हा। मकु यह रहै जगतमँह चीन्हा॥
कहाँ सो रतनसेन अब राजा? कहाँ सुआ अस बुधि उपराजा?

कहा अलाउदीन सुलतानू ? कहा राघव जेइ कीन्ह बखानू ?
कहँ सुरूप पदमावति रानी ? कोइ न रहा जग रही कहानी।
धनि सोई जस कीरति जासू। फूल मरै, पै मरै न बासू॥

केइ न जगत जस बेंचा, केइ न लीन्ह जस मोल।
जो यह पढ़ै कहानी हम्ह सँवरै दुइ बोल॥

मुहमद बिरिध बैस जो भई। जोबन हुत सो अवस्था गई॥
बल जो गएउ कै खीन सरीरू। दिस्टि गई नैनहिं देइ नीरू॥
दसन गए कै पचा कपोला। बैन गए अनरुच देइ बोला॥
बुधि जो गई देइ हिय बौराई। गरब गयउ तरहुँत सिरनाई॥
सरवन गए, ऊँच जो सुना। स्याही गई सीस भा धुना॥
भँवर गए केसहि देइ भूवा। जोबन गएउ जीति लेइ जूवा॥
जौ लहि जीवन जोबन साथा। पुनि सो मीचु पराए हाथा॥

बिरध जो सीस डोलाव, सीस धुनै तेहि रीस।
"बूढ़ी आऊ होहु तुम्ह", केइ यह दीन्ह असीस॥

बसंत वर्णन

प्रथम बसंत नवल ऋतु आई। सुऋतु चैत बसाख सोहाई॥
चंदन चीर पहिरि धनि अंगा। सेंदुर दीन्ह बिहँसि भरि मंगा॥
कुसुम हार औ परिमल बासू। मलियागिरि छिरका कबिलासू॥
सौंर सुपेती फूलन डासी। धनि औ कंत मिले सुखबासी॥
पिउ सँजोग धनि जोबन बारी। भौंर पुहुप सँग करहिं धमारी॥
होइ फाग भलि चाँचरि जोरी। बिरह जराइ दीन्ह जस होरी॥
धनि ससि सरिस, तपै पियसूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू॥

जिन्ह घर कंता ऋतु भली, आव बसंत जो नित्त।
सुख भरि आवहिं दिवसनिसि, दुख न जानैं कित्त॥

(षड्ऋतु-वर्णनम्)

असाढ़

चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा॥
धूम साम, धौरे घन छाए। सेत धजा बग-पाँति देखाए॥
खड़ग बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुंद-बान बरसहिं घनघोरा॥
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी। कंत! उबारु मदन हौं घेरी॥
दादुर मोर कोकिला पीऊ। गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ॥
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाह, मंदिर को छावा॥
आद्रा लाग, लागि भुइँ लेई। मोहिं बिनु पिउ को आदर देई॥

जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्ब।
कंत पियारा बाहिर, हम सुख भूला सर्ब॥

फागुन

फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा॥
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा॥
तरिवर झरहिं झरहिं बन ढाखा। भई ओनंत फूलि फरि साखा॥
करहिं बनसपति हिये हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू॥
फागु करहिं सब चाचरि जोरी। मोहिं तन लाइ दीन्हि जस होरी॥
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत मरत मोहिं रोष न आवा॥
राति दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे॥

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै कंत धरै जहँ पाँव॥

जेठ

जेठ जरै जग, चलै लुवारा। उठहिं बवंडर, परहिं अँगारा॥
बिरह गाजि हनुवँत होइ जागा। लंकादाह करै तनु लागा॥
चारिहु पवन झकोरै आगी। लंका दाहि पलंका लागी॥
दहि भइ साम नदी कालिंदी। बिरह क आगि कठिन अति मंदी॥

उठ आगि औ आव आंधी। नन न सूझ, मरौं दुख बाधी।।
अधजर भइऊँ, मासु तन सूखा। लागेउ बिरह काल होइ भूखा।।
मास खाइ अब हाडन्ह लागे। अबहुँ आउ, आवत सुनि भागे।।

गिरि, समुद्र, ससि, मेघ, रवि, सहि न सकहिं वह आगि।
मुहमद सती सराहिए, जरै जो अस पिउ लागि।।

(बारहमासा-वर्णनसे)

१०

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामीजीका जन्म सन् १५३३ और मृत्यु सन् १६२४ में हुई। ये युक्तप्रान्तके बांदा जिलेके निवासी थे। इनके पिताका नाम आत्माराम और माताका नाम हुल्सी था। इनका बचपन बड़े संकटमें बीता। पर बाबा नरहरिदास और शेष सनातनजीके सत्संगसे इन्होंने सब विषयोंका ज्ञान प्राप्त कर लिया। इनकी प्रतिभाको देखकर एक ब्राह्मणने अपनी रूपवती और गुणवती कन्या रत्नावलीका विवाह इनसे कर दिया।

तुलसीदासजी अपनी पत्नीसे बहुत प्रेम करते थे। एक बार उसके मायके चले जाने पर वे इतने बेचैन हो उठे कि चढ़ी हुई नदीको पार करके उससे मिलने पहुँचे। स्त्रीने इनकी आसक्तिको देखकर कहा "जितना प्रेम आप मुझसे करते हैं उतना यदि भगवानसे करते तो आप संसारके बंधनोंसे मुक्त हो जाते।" तुलसीदासजीके मन पर इस बातका बड़ा असर हुआ। उन्हें तबसे वैराग्य हो गया और वे घरबार छोड़कर विरक्त हो गये।

गोस्वामीजी सगुण धाराकी रामभक्ति-शाखाके प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होंने अपने आराध्यदेव मर्यादा-पुरुषोत्तम रामका गुणगान अपने

काव्यमें किया है। कहते हैं कि इन्होंने बीस-पचीस ग्रंथ लिखे हैं, पर कुल १२ ग्रंथ मिलते हैं जिनमें 'रामचरितमानस' 'विनयपत्रिका', 'गीतावली' 'दोहावली', 'कवितावली', और 'रामाज्ञा प्रश्नावली' ये छः बड़े ग्रंथ हैं। गोस्वामीजीकी कीर्ति उनके 'रामचरित-मानस' के कारण है। इनका यह ग्रंथ आज भी प्रत्येक हिंदू घरमें आदर पाता है। काव्य प्रियताकी दृष्टिसे 'तुलसी' और उनके 'मानस' को हिन्दीमें प्रथम स्थान प्राप्त है।

गोस्वामीजीका ब्रज और अवधी दोनों ही भाषाओं पर समान अधिकार था और दोनों ही भाषाओंमें उन्होंने रचनायें की हैं। भाषाका मँजा हुआ रूप हिन्दीमें सबसे पहले तुलसीकी रचनाओंमें ही देखनेको मिलता है। मानस अवधी भाषाका सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है।

वनगमनके लिए सीताका आग्रह

कहि प्रियबचन बिबेकमय, कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगटि बिपिन गुनदोष॥
मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भाँति जिय जनि कछु गुनहू॥
आपन मोर नीक जो चहहू। बचनु हमार मानि गृह रहहू॥
आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥
एहि तें अधिक धरम नहिं दूजा। सादर सासु ससुर-पद-पूजा॥
जब जब मातु करिहिं सुधि मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी। सुंदरी समुझायेहु मृदु बानी॥
कहउँ सुभाय सपथ सत मोही। सुमुखि मातुहित राखउँ तोही॥
गुर श्रुति संमत धरम फलु, पाइअ बिनहिं कलेस।
हठबस सब संकट सहे, गालव नहुष नरेस॥
मैं पुनि करि प्रमान पितुबानी। बेगि फिरब सुनि सुमुखि सयानी।
दिवस जात नहिं लागहि बारा। सुंदरी सिखवनु सुनहु हमारा॥
जो हठ करहु प्रेमबस बामा। तो तुम्ह दुख पाउब परिनामा॥

कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम बारि बयारी॥
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना॥
चरनकमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे॥
कंदर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा॥

भूमि सयन बलकल बसन, असन कंद फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं, समय समय अनुकूल॥

नरअहार रजनीचर चरहीं। कपटवेष बिधि कोटिक करहीं॥
लागइ अति पहार कर पानी। बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि-नर चोरा॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आयें। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभायें॥
हंसगवनि तुम नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहिं देइहि लोगू॥
मानस-सलिल-सुधा प्रतिपाली। जिअइ कि लवन पयोधि मराली॥
नवरसाल बन बिहरन सीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला॥
रहहु भवन अस हृदय बिचारी। चंदबदनि दुख कानन भारी॥

सहज सुहृद-गुरु-स्वामि सिख, जो न करइ सिरमानि।
सो पछताइ अघाइ उर, अवसि होइ हितहानि॥

सुनि मृदुबचन मनोहर पियके। लोचन ललित भरे जल सियके॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसे। चकइहि सरदचंद निसि जैसे॥
उतरु न आव बिकल बैदेही। तजन चहत सुचि स्वामि सनेही॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी। धरि धीरज उर अवनिकुमारी॥
लागि सासुपग कह कर जोरी। छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई। जेहि बिधि मोर परम हित होई॥
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं। पिय बियोग-सम दुख जग नाहीं॥

प्राणनाथ करुनायतन, सुंदर सुखद सुजान।
तुम्ह बिनु रघु कुल-कुमुद बिधु, सुरपुर नरक समान॥

मातुपिता भगिनी प्रिय भाई। प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई॥
सासु ससुर गुर सजन सहाई। सुत सुंदर सुसील सुखदाई॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु तें ताते॥
तनु धनु धामु धरनि पुरराजू। पति बिहीन सबु सोक समाजू॥
भोग रोग सम, भूषन भारू। जम जातना सरिस संसारू॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद बिमल बिधु-बदनु निहारे॥

खग मृग परिजन, नगरु बनु, बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुर-सदन-सम, परनसाल सुख मूल॥

बनदेवीं बनदेव उदारा। करिहहिं सासु-ससुर-सम-सारा॥
कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध-सत सरिस पहारू॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे॥
प्रभु-बियोग लव लेस-समाना। सब मिलि होहिं न कृपानिधाना॥
अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि। लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुनामय उर-अंतर-जामी॥

राखिअ अवध जो अवधि लगि, रहत जानिअहिं प्रान।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील-सनेह निधान॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहउँ। मारग जनित सकल स्रम हरिहउँ॥
पाय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं॥
स्रमकन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें॥
सम महि तृन-तरु पल्लव डासी। पाय पलोटिहि सब निसि दासी॥
बार बार मृदुमूरति जोही। लागिहि ताति बयारि न मोही॥

को प्रभुसंग मोहि चितवनिहारा। सिंघ-बधुहि जिमि ससक सिआरा॥
मैं सुकुमारि नाथु बन जोगू। तुम्हहि उचित तप मोकहुँ भोगू॥

ऐसेउ बचन कठोर सुनि, जौं न हृदय बिलगान।
तौ प्रभु बिषम बियोग-दुख, सहिहहिं पाँवर प्रान॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोग न सकी सँभारी॥
देखि दसा रघुपति जियँ जाना। हठि राखें नहिं राखिहि प्राना॥
कहेउ कृपाल भानु-कुल-नाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा॥
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू। बेगि करहु बन-गवन-समाजू॥
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई। लगे मातुपद आसिष पाई॥
बेगि प्रजा दुख मेटब आई। जननी निठुर बिसरि जनि जाई॥
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी। देखिहउँ नयन मनोहर जोरी॥
सुदिन सुघरी तात कब होइहि। जननी जिअत बदन बिधु जोइहि॥

बहुरि बच्छ कहि लालु कहि, रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बोलाइ लगाइ हिय, हरषि निरखिहउँ गात॥

(अयोध्याकाण्ड)

पद

(१)

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंज हारी॥
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो?
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितु मेरो॥
तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै।
ज्यों-त्यों तुलसी कृपालु, चरन-सरन पावै॥

(२)

ममता तू न गई मेरे मन तें।
पाके केस जनमके सायो, लाज गई लोचन तें ।।
तन थाके कर कपन लागे जोति गई नैनन तें।
सरवन बचन न सुनत काहु के बल गये सब इंद्रिन तें ।।
टूटे दसन बचन नहिं आवत सोभा गई मुखन तें।
कफ पित बात कंठ पर बैठे सुतहिं बुलावत कर तें ।।
भाइ बंधु सब परम पियारे नारि निकारत घर तें।
'तुलसिदास' बलि जाउँ चरन तें लोभ पराये धन तें ।।

(३)

रघुबर तुमको मेरी लाज।
सदा सदा मैं सरन तिहारी तुमहि गरीब निवाज ।।
पतित उधारन बिरद तुम्हारो, स्रवनन सुनी अवाज।
हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ।।
अघ खंडन दुख भंजन जनके, यही तिहारो काज।
'तुलसिदास' पर किरपा कीजै, भगति-दान देहु आज ।।
(विनयपत्रिकासे)

(४)

सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भौंहें।
तून-सरासन-बान धरे, तुलसी, बन-मारगमें सुठि सोहैं ।।
सादर बारहि-बार सुभाइ चितै तुम त्यों, हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्राम-बधू सिय सों, कहो, सांवरे से सखि! रावरे को हैं?

(५)

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसकाइ चली ।।

तुलसी, तेहि औसर सोह सब अवलोकति लोचन-लाहु अली।
अनुराग-तडागमें भानु उव बिगसीं मनोमजुल कज-कली।।
(कवितावलीमे)

राम सतसई

(१)

जहाँ राम तहँ काम नहिं, जहाँ काम नहिं राम।
तुलसी कबहूँ होत नहिं, रवि रजनी इक ठाम।।

(२)

गगा यमुना सरसुती, सात सिन्धु भरपूर।
तुलसी चातकके मते, बिन स्वाती सब धूर।।

(३)

तुलसी बिलम्ब न कीजिये, भजि लीज रघुबीर।।
तन तरकस तें जात है, स्वाँस सार सी तीर।।

(४)

असन बसन सुत नारि सुख, पापिहुँ के घर होइ।
सत-समागम रामधन, तुलसी दुलभ दोइ।

(५)

तुलसी राम सनेह करु, त्याग सकल उपचारु।
जसे घटत न अक नव, नवके लिखत पहारु।।

(६)

तुलसी सत सुअबु तरु, फूलि फलहिं परहेत।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

(७)

गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन धन खान।
जब आवत सतोष धन, सब धन धूरि समान।।

(८)

दुर्जन दर्पन सम सदा, करि देखो हिय गौर।
सन्मुखकी गति और है, विमुख भये पर और॥

(९)

रामनाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार॥

(१०)

मन्त्री, गुरु, अरु वैद्य जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन, तीन कर, होइ बेगिही नास॥

(११)

वीरघ रोगी दारिदी, कटु बच लोलुप लोग।
तुलसी प्रान समान जो, तऊ त्यागिवे योग॥

(१२)

तुलसी जो कीरति चहहिं, परकीरति को खोइ।
तिनके मुह मसि लागि है, मुये न मिटि है धोइ॥

(१३)

आवत ही हरषे नहीं, ननन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह॥

(१४)

रैनको भूषन इन्दु है, दिवसको भूषन भान।
दासको भूषन भक्ति है, भक्तिको भूषन ज्ञान।

(१५)

ज्ञानको भूषन ध्यान है, ध्यानको भूषन त्याग।
त्यागको भूषन शांतिपद, तुलसी अमल अदाग॥

११

सूरदास

कृष्णभक्ति शाखाके प्रमुख कवि सूरदासका जन्म सन् १४८४ और मृत्यु सन् १५६४ में हुई। वल्लभाचार्यजीकी शिष्य परम्परामें अष्टछापके आठ कवियोंमें आपका प्रथम स्थान है।

सूरदासजीने अपने गुरु वल्लभाचार्यजीकी आज्ञासे श्रीमद्भागवतकी कथाको पदोंमें गाया। इनके रचे सवा लाख पद बताये जाते हैं। पर अब पाँच छः हजार पदोंसे अधिक नहीं मिलते। इन पदोंको मोटे रूपसे तीन भागोंमें बाँटा जा सकता है — (१) वात्सल्यके पद, (२) शृंगारके पद और (३) भक्तिके पद।

सूरदास बालमनोविज्ञानके गहरे पारखी थे। उनका बाल चित्रण हिन्दी-साहित्यमें ही नहीं विश्व-साहित्यमें भी बेजोड़ है।

शृंगारके पदोंमें वियोग शृंगार और भ्रमरगीतके पद बड़े अनूठे हैं। इन पदोंमें जहाँ गोपियोंके प्रेम और विरहका चित्रण हुआ है, वहाँ गोपियोंके तर्कों द्वारा निर्गुण भक्तिकी धज्जियाँ उड़वाकर बहुत ही स्वाभाविक रूपसे सगुण भक्तिका प्रतिपादन भी कर दिया गया है। निःसन्देह भ्रमरगीत सूरकी सबसे अधिक कलापूर्ण और उत्कृष्ट रचना है।

भक्तिके पदोंमें उन्होंने अपने आराध्यदेव कृष्णके लोकरंजनकारी रूप और महिमाका गुणगान किया है। इन पदोंमें तन्मयता, स्वाभाविकता और सरसता कूट कूटकर भरी है।

सूरदासजीकी भाषा स्वाभाविक, चलती हुई और मुहावरेदार ब्रजभाषा है। इसमें संगीतकी प्रधानताके कारण एक अनोखा लालित्य आ गया है। भाषा भाव और रसकी दृष्टिसे सूरके काव्यमें गीति रचना अपनी पूरी ऊँचाई पर पहुँची।

(१)

चरण कमल बंदौं हरि राई।
जाको कृपा पंगु गिरि लंघ, अंधेको सबकुछ दरसाई॥
बहिरो सुन, मूग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बंदौं तिहि पाई॥

(२)

छाडि मन हरि विमुखनको संग।
जिनके संग कुबुधि उपजति है, परत भजनमें भंग॥
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग॥
खरको कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषन अंग।
गजको कहा न्हवाये सरिता, बहुरि धरै खहि छंग॥
पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतो करत निषंग।
सूरदास खल कारी कामरि, चढत न दूजो रंग॥

(३)

मेरो मन अनत कहा सुख पावै।
जसे उडि जहाजको पंछी फिर जहाज पर आवै॥
कमलनयनको छाडि महातम और देवको ध्यावै।
परम गंगको छाडि पियासो दुर्मति कूप खनावै॥
जिन मधुकर अंबुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥

(४)

प्रभु मोरे अवगुन चित्त न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो॥

इक नदिया इक नार कहावत मलोहि नीर भरो।
जब दोऊ मिलि एक बरन भये सुरसरि नाम परो॥
इक लोहा पूजामें राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुन अवगुन नहिं चितव कंचन करत खरो॥
यह माया भ्रमजाल कहाव 'सूरदास' सगरो।
अबकी बार मोहिं पार उतारो नहिं प्रन जात टरो॥

(५)

मया मोहिं दाऊ बहुत खिजायो॥
मोसो कहत मोलको लीनो तोहि जसुमति कब जायो॥
कहा कहौं एहि रिसके मारे खेलन हौं नहिं जातु।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तुम्हरो तातु॥
गोरे नन्द जसोदा गोरी तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी द द हँसत ग्वाल सब सिख देत बलबीर॥
तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझ।
मोहनको मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझ॥
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधनकी सौं हौं माता तू पूत॥

(६)

मो देखत जसुमति तेरे ढोटा अबहीं माटी खाई।
इहि सुनकें रिस करि उठि धाई बाँह पकरि ल आई॥
इक करसो भुज गहि गाढ़े करि इक कर लीनें साँटी।
मारति हौं तोहि अबहि कन्हैया बेगि न उगिलो माटी॥
ब्रज-लरिका सब तेरे आगे झूठो कहत बनाई।
मेरे कहे नहीं तू मानति दिखरावौं मुह बाई॥

अखिल ब्रह्माड खडको महिमा दिखराई मुख माहीं।
सिंधु सुमेरु नदी वन परवत चकित भई मन माहीं॥
करते साटि गिरत नहिं जानी भुजा छाँडि अकुलानी।
सूर कहै जसुमति मुख मूदेउ बलि गई सारँग-पानी॥

(७)

खेलनके मिस कुँवरि राधिका, नन्द महरके आयी हो।
सकुच सहित मधुरे करि बोली, घर हो, कुँवर कन्हाई हो॥
सुनत स्याम कोकिल सम बानी, निकसे अति अतुराई हो।
मातासो कछु करत कलह हरि, सो डारी बिसराई हो॥
मैयारी, तू इनको चीन्हति, बारबार बतायी हो।
जमुना-तीर काल्हि म भूल्यो, बाह पकरि लै आयी हो॥
आवत यहा तोहि सकुचित है, म द सौंह बुलायी हो।
सूर स्याम ऐसे गुन आगर, नागरि बहुत रिझायी हो॥

(८)

बूझति जननि,—कहाँ हुती प्यारी?
किन तेरे भाल तिलक रचि कीन्हो,
किहि कच गूंथि माग सिर पारी?
खेलत रही नदके आगन,
जसुमति कही,—कुँवरि, ह्या आरी।
तिल चावरि गोद करि दीन्ही,
फरिया दयी फारि नव सारी॥
मेरो नाउँ बूझि, बाबाको,
तेरो बूझि, दयी हँसि गारी।
मो तन चित, चित ढोटा-तन,
कुछ सविता सौं गोद पसारी॥

यह सुनि क वृखभानु मुदितचित,
हँसि हँसि बूझत बात दुलारी।
सूरदास रस सिंधु बढ्यो अति
दपति मनमें यहै बिचारी॥

(९)

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।
प्रीत पतग करी दीपक सो आप प्रान दह्यो॥
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सो करि मुख माहि गह्यो।
सारग प्रीति करी जु नाद सो सनमुख बान सह्यो॥
हम जो प्रीति करी माधव सा चलत न कछू कह्यो।
सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो ननननि नीर बह्यो॥

(१०)

चले गये दिलके दामनगीर।
जब सुधि आवे प्यारे दरसकी उठत कलेजे पीर।
नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर स्याम सरीर॥
आपन जाय द्वारका छाए खारी मदके तीर।
ब्रज गोपिनको प्रेम बिसारयो ऐसे भये बेपीर॥
बृन्दाबन बंसीबट त्यागो निरमल जमुना नीर।
सूर स्याम ललिता उठ बोली आखिर जाति अहीर॥

(११)

हरि परदेस बहुत दिन लाये।
कारी घटा देखि बादरकी नयन नीर भरि आये॥
पा लागों तुम बीर बटाऊ कौन देस तें धाये।
इतनी पतियाँ मेरी दीजो, जहाँ स्यामघन छाये॥

दादुर मोर पपीहा बोलत, सोवत मदन जगायें।
सूरदास, स्वामी जो बिछुरे आपुन भये पराये॥

(१२)

निर्गुन कौन देसको बासी?
मधुकर! हँसि समुझाय सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी॥
को है जनक जननि को कहियत, कौन नारि को दासी।
कैसो बरन भेस है कैसो, काहे रसमें अभिलासी॥
पावगो पुनि कियो आपनो, जो रे! कहैगो गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो, सूर सब मति नासी॥

१२
मीराबाई

इनका जन्म सन १४९९ में और मृत्यु सन् १५४७ में हुई। मीरा बाई जोधपुरके मेड़ता राठौर सरदार रतनसिंहकी इकलौती लड़की थी। इनका विवाह मेवाड़के राजकुमार भोजसे हुआ मगर विवाहके थोड़े समय बाद ही ये विधवा हो गई। बचपनमें ही कृष्णके प्रति इनके हृदयमें अनुराग था। पतिकी मृत्युके पश्चात तो इन्होंने अपना मन पूर्णतया कृष्णभक्तिमें ही लगा दिया। इनकी भक्तिभावना यहाँ तक बढ़ी कि राजकुलकी मर्यादा और लोकलाजको छोड़कर ये जनसाधारणके बीचमें कृष्णकी मूर्तिके सामने नाचने-गाने लगी। इनका यह आचरण इनके स्वजनोंको पसन्द नहीं आया और इनको तरह तरहकी तकलीफें दी। इनके पदोंमें कुछ इस तरहकी बातोंका उल्लेख भी है। कहा जाता है कि अपने स्वजनोंके बुरे व्यवहारसे दुःखी होकर इन्होंने गोस्वामी तुलसीदासजीको पत्र* लिखकर उनकी सम्मति मांगी

* ऐतिहासिक दृष्टिसे यह पत्रव्यवहार संदिग्ध है।

"मेरे मातपिताके सम हो, हरिभक्तह सुखदाई।
हमको कहा उचित करवो ह, सो लिखिये समुझाई।।"

इसके उत्तरमें गोस्वामीजीने यह शिक्षाप्रद पद लिखकर भेजा था

"जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिये तिन्हें कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही।"

इस प्रकार गोस्वामीजीकी सम्मति पाकर यह यात्राके लिए घरसे निकल पडी। मथुरा और वृन्दावनमें जाकर इन्होने अपने आराध्यके गुणोका गान किया। इसके पश्चात ये द्वारिका गइ। वहाँ सन् १५४७ मे इनका स्वगवास हो गया।

मीराकी गणना सगुणोपासक कवियोमें की जाती है। इन्होने श्रीकृष्णको अपने पति प्रियतम और स्वामीके रूपमें मानकर माधुय भावसे उनक गुणोका गान किया ह। पर मीराक आराध्य कही तो सूरके श्यामकी भाँति सगुण और कही कबीरके रामकी भाँति निगुण दिखाई पडते ह। सगुण और निगुणक इस समन्वयने ही मीराक काव्यमें अलौकिकता भर दी है। सरलता, सरसता और स्वाभाविकता मीराके काव्यकी प्रधान विशेषतायें ह।

मीराके पदोकी भाषा कही राजस्थानी, कही गुजराती और कही साहित्यिक ब्रज है। कुछ पद ऐसे भी है जो मिली जुली भाषामे लिखे गये ह। मीराके पदोमे सगीतकी प्रधानता है। यही कारण ह कि मीराका काव्य केवल साहित्यिकोकी ही धरोहर न होकर भक्तो और सगीतज्ञोकी भी अमूल्य थाती ह।

हिन्दीके गोनि कवियोमे मीराका स्थान बहुत ऊचा ह।

(१)

मन रे परसि हरिके चरण।
सुभग सीतल कँवल कोमळ, त्रिविध ज्वाला हरण।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण।।

जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राख अपनी सरण।
जिण चरण ब्रह्माण्ड भेटयो, नख सिखां सिरी धरण॥
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण।
जिण चरण कालीनाग नाथ्यो, गोप-लीला-करण॥
जिण चरण गोबरधन धारयो, गर्व मघवा हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण॥

(२)

भज मन चरण-कँवल अविनासी।
जेताइ दीस धरण गगन बिच, तेताइ सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत-कासी॥
इण देहीका गरब न करणा, माटीमें मिल जासी।
यो संसार चहरकी बाजी, सांझ पड्याँ उठ जासी॥
कहा भयो है भगवां पहरयां, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी॥
अरज करूँ अबला कर जोड़े, स्याम तुम्हारी दासी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, काटो जमकी फाँसी॥

(३)

देखत राम हँसे सुदामा कूँ देखत राम हँसे।
फाटी तो फुलड़ियाँ पांव उभाणे, चलतें चरण घसे।
बालपणेका मीत सुदामा, अब क्यूं दूर बसे॥
कहा भावजने भेंट पठाई, तांदुल तीन पसे।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा मोती लाल कसे॥
कित गई प्रभु मारी गउअन बछिया, द्वारा बीच हसती फसे।
मीराके प्रभु हरि अविनासी, सरणे तोरे बसे॥

(४)

फागुनके दिन चार होली खेल मना रे।
बिन करताल पखावज बाजै अणहदकी झणकार रे।।
बिनि सुर राग छतीसू गावै रोम रोम रणकार रे।
सील सतोखकी केसर घोळी प्रेम प्रीत पिचकार रे।।
उडत गुलाल लाल भयो अंबर बरसत रंग अपार रे।
घटके पट सब खोल दिये है लोकलाज सब डार रे।।
होलि खेलि पीव घर आये सोइ प्यारी पिय प्यार रे।
मीराके प्रभु गिरधर नागर चरण-कँवल बलिहार रे।।

(५)

कोई कहियो रे प्रभु आवनकी।
आवन की मन भावन की।।
आपु न आव, लिख नाँहि भेज, बाण परी ललचावनकी।
ए दोइ नैन कह्यो नाँहि मानै, नदिया बहै जसे सावनकी।।
कहा करूँ कछु बस नाँहि मेरो, पाँख नाँहि उड जावनकी।
मीराके प्रभु, कब रे मिलोगे, चेरी भयी तेरे दावनकी।।

(६)

म्हारा जनम मरण रा साथी, थाँने नाँहि बिसरूँ दिन राती।
तुम देख्याँ बिन कल न पडत है, जानत मेरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती।।
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती।
दोउ कर जोड्याँ अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती।।
यो मन मेरो बडो हरामी, ज्यूँ मदमातो हाथी।
सतगुरु हाथ धरयो सिर ऊपर अंकुस दै समझाती।।

पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती।
मीराके प्रभु गिरधर नागर हरि चरणा चित राती॥

(७)

हेरी म तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाणे कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय।
गगन मंडल प सेज पियाकी, किस विध मिलणा होय॥
घायलकी गति घायल जान, की जिन लाई होय।
जौहरीकी गति जौहरी जान, की जिन जौहर होय॥
दरदकी मारी बन बन डोलू, बैद मिल्या नहिं कोय।
'मीरा' की प्रभु पीर मिटगी, जब बद सांवलिया होय॥

(८)

मेरे तो एक रामनाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई॥
भाई छोड्या बंधु छोड्या छोड्या सगासोई।
साधु संग बैठ बैठ लोकलाज खोई॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
प्रेम नीर सींच सींच विषबेल धोई॥
दधि मथ घृत काढ लियो डार दई छोई।
राणा विषको प्यालो भेज्यो पाय मगन होई॥
अब तो बात फल पड़ी जाणे सब कोई।
मीरा राम लगण लगी होणी होय सो होई॥

(९)

जबसे मोहि नदनँदन दृष्टि पड्यो माई।
तबसे परलोक लोक कछू ना सोहाई॥

मोरनकी चन्द्रकला सीस मुकुट सोहै।
केसरको तिलक भाल तीन लोक मोहै॥
कुंडलकी अलक झलक कपोलन पर छाई।
मानो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई॥
कुटिल भृकुटि तिलक भाल चितवनमें टौना।
खंजन अरु मधुप मीन भूले मृग छौना॥
सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा।
नटवर प्रभु भेख धरे, रूप अति बिसेषा॥
अधर बिंब अरुन नैन मधुर मंद हासी।
दसन दमक दाड़िम दुति चमके चपला-सी॥
क्षुद्रघंट किंकनी अनूप धुनि सोहाई।
गिरधर अंग अंग मीरा बलि जाई॥

(१०)

मत जा मत जा मत जा जोगी,
पांव परूँ मैं चेरी तेरी हौं॥
प्रेम भगतिका पैंडो ही न्यारो, हमकूं गैल बताजा॥
अगर चंदनकी चिता रचाऊँ, अपने हाथ जलाजा॥
जल बल भई भस्मकी ढेरी, अपने अंग लगाजा॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जोतमें जोत मिलाजा॥

१३

नन्ददास

इनके जन्म और मरणकी बाबत ठीक पता नहीं चलता। यह भी प्रसिद्ध है कि ये सूरदासके समकालीन थे और तुलसीदासजीके गुरुभाई थ। इनका कविता-काल सन् १५६८ के आसपास समझा जाता है। अष्टछाप आठ कवियोंमें से कविताके सौन्दर्य की दृष्टिसे सूरदासके बाद इन्हींका नंबर आता है। इन्होंने भाषामें भावोंको बड़ी सुंदरतासे जड़ दिया है। इनके रचनाकौशलको देखकर लोगोंने इन्हें 'जड़िया' की उपाधि दी है।

ये एक कुशल संगीतज्ञ भी थे। इनके प्रकाशित ग्रंथोंमें केवल दो ग्रंथ ही मुख्य हैं — एक 'रास पंचाध्यायी' और दूसरा 'भ्रमरगीत'।

'रास पंचाध्यायी' का विषय कृष्णकी रासलीला है। भाषा ठेठ अलंकारमयी व्रज है। 'भ्रमरगीत' की कथाका आधार सूरके भ्रमरगीतकी भाँति भागवतका १० वाँ स्कंध है। नंददासके भ्रमरगीतमें गोपियोंके तर्क वितर्क और संवादोंकी प्रधानता है। सूरका भ्रमरगीत अनुभूति-प्रधान है और इनका तर्कप्रधान। भाषा संस्कृतमयी है और अलंकारोंसे भरी हुई है।

भ्रमरगीत

ऊधौ को उपदेस सुनो, ब्रज नागरी।
रूप सील लावन्य सब गुन आगरी।।
प्रेमपुंजा, रसरूपिनी, उपजावन सुख पुंज।
सुंदर स्याम विलासिनी, नव वृंदावन कुंज।।
सुनो ब्रज नागरी।।

कहन स्याम-सदेस एक, हौं तुम प आयो।
कहन समय एकात कहूँ, औसर नहिं पायो।।
सोचत ही मनमें रह्यो, कब पाऊँ इक ठाऊँ।
कहि सदेस नँदलाल को, बहुरि मधुपुरी जाऊँ।।
सुनो ब्रज-नागरी।।

सुनत स्याम को नाम, ग्राम घरकी सुधि भूलीं।
भरि आनद रस हृदय, प्रेम बेली द्रुम फूलीं।।
पुलकि रोम सब अग भये, भरि आये जल नन।
कठ घुटे गद गद गिरा, बोले जात न बन।।
विवस्था प्रेमकी।।

उर्घासन बठारि, बहुरि परिकम्मा दीन्हीं।
स्याम-सखा निज जानि, बहुरि सेवा बहु कीन्हीं।।
बूझत सुधि नदलालकी, विहँसत मुख ब्रजबाल।
नीके ह बलबीरजू, बोलति बचन रसाल।।
सखा सुन स्यामक।।

कुसल राम अरु स्याम, कुसल सब सगी उनके।
जदुकुल सिगरे कुसल, परम आनन्द सबनके।।
पूछन ब्रज कुसलात को, हौं पठयौ तुम तीर।
मिलिहै थोरे दिनन में, जनि जिय होउ अधीर।।
सुनो ब्रज-नागरी।।

सुनि मोहन-सदेश, रूप सुमिरन ह्वै आयो।
पुलकित आनन-कमल, अग आवेस जनायो।।
विह्वल ह्वै धरनी परी, ब्रज बनिता मुरझाय।
द जल छींट प्रबोधहीं, ऊधो बन सुनाय।।
सुनो ब्रज-नागरी।।

१४

रसखान

ये दिल्लीके पठान सरदार थे। इनका जन्म सन् १५८४ में हुआ। मृत्यु कब हुई यह नहीं कहा जा सकता। हिन्दीके मुसल्मान कवियोंमें इनका स्थान बहुत ऊँचा है। गोस्वामी विठ्ठलदासजीसे दीक्षा लेकर ये कृष्णभक्तिकी कविता करने लगे। इनकी कवितामें प्रेमकी प्रधानता है। इन्होंने प्रेमका बड़ा ऊँचा और सुन्दर रूप दिया है।

रसखानकी भाषा सरल और चलती हुई व्रज है। सवया छन्द लिखनेमें तो ये अपना सानी ही नहीं रखते। इनके लिखे हुए दो ग्रंथ मिलते हैं — 'प्रेमवाटिका' और 'सुजान रसखान'। पहलेमें केवल ५२ दोहे और दूसरेमें १२८ छन्द हैं। इस तरह इनकी कविता यद्यपि अधिक नहीं है, पर है बड़ी मार्मिक और भावपूर्ण।

प्रेमवाटिका

(१)

प्रेम-अयनि श्री राधिका, प्रेम-बरन नँद-नंद।
प्रेम बाटिकाके दोऊ, माली मालिन द्वंद्व॥

(२)

प्रेम हरी को रूप है, त्यों हरि प्रेम-स्वरूप।
एक होइ द्वै यों लसैं, ज्यों सूरज अरु धूप॥

(३)

कमल तंतुसों छीन अरु, कठिन खड़गकी धार।
अति सूधो, टेढो बहुरि, प्रेम पंथ अनिवार॥

(४)

प्रेम प्रेम सब कोउ कहै, प्रेम न जानत कोय।
जो जन जान प्रेम तो, मर जगत क्यो रोय॥

(५)

सास्त्रन पढि पडित भये, क मौलवी कुरान।
जु प प्रेम जान्यो नहीं, कहा कियो रसखान॥

(६)

हरिके सब आधीन पै, हरी प्रेम-आधीन।
याही तें हरि आपु हो, याहि बडप्पन दीन॥

(७)

डर सदा चाहै न कछु, सहै सबै जे होय।
रहै एकरस चाहि क, प्रेम बखानौ सोय॥

सुजान रसखान

(१)

मानुष हौं, तो वही रसखानि,
बसौं ब्रज-गोकुल गावके ग्वारन।
जो पसु हौं, तो कहा बसु मेरो,
चरौं नित नदकी धेनु मँझारन॥
पाहन हौं, तो वही गिरि को,
जो धरयो कर छत्र पुरदर धारन।
जो खग हौं, तो बसेरो करौं,
मिलि कालिन्दी कूल कदम्बको डारन॥

(२)

या लकुटी अरु कामरिया पर,
राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवो निधिको सुख,
नन्दकी गाय चराइ बिसारौं॥
इन आँखिन सों रसखानि कबौं,
ब्रजके बन-बाग-तड़ाग निहारौं।
कोटिक हू कलधौतके धाम,
करीलके कुंजन ऊपर वारौं॥

(३)

मोरपखा सिर ऊपर राखि हौं,
गुंजकी माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पिताम्बर, लै लकुटी बन,
गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो,
तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी।
पै मुरली मुरलीधर की,
अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

(४)

सेस गनेस महेस दिनेस,
सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड,
अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रटैं,
पचि हारें तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

१५

रहीम

इनका पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था। ये अकबरके सेनापति प्रधानमंत्री और नवरत्नोंमें से एक थे। ये बडे अनुभवी उदार और कलाप्रिय व्यक्ति थे। व्रज, अवधी, संस्कृत, अरबी और फारसी आदि भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। परोपकार और दानमें ये लासानी थे। गंगकी एक कविता पर मुग्ध होकर उन्होंने उसको छत्तीस लाख रुपये दे डाले थे। अकबरकी मृत्युके बाद ये जहांगीरके दरबारमें भी रहे, पर इनके आखिरी दिन बडे ही कष्ट और संकटमें बीते।

'रहीम सतसई', 'बरवै नायिका भेद', 'मदनाष्टक', रास पंचाध्यायी' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इन्होंने पूर्वी और पश्चिमी (अवधी और व्रज) दोनों ही प्रचलित काव्य भाषाओंमें रचनायें की हैं। इनकी भाषा सरल और उक्तियां लुभावनी हैं। इनका सबसे अधिक प्रिय छंद दोहा रहा है।

दोहा

(१)

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सुचहिं सुजान॥

(२)

जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहुँ किन जाहिं।
जलमें जो छाया परी, काया भीजत नाहिं॥

(३)

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे मीत॥

(४)

तब ही लग जीबो भलो, दीबो पर न धीम।
बिन दीबो जीबो जगत, हमहिं न रुचै रहीम॥

(५)

रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहां काम आवै सुई, कहा करे तरवारि॥

(६)

अमर-बेलि बिन मूल को, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिये काहि॥

(७)

सर सूखे पछी उड़, औरे सरन समाहिं।
दीन मीन बिन पच्छके, कहु रहीम कहँ जाहिं॥

(८)

धूर धरत निज सीस पर, कहु रहीम किहि काज।
जिहि रज मुनि पत्नी तरी, सो ढूढ़त गजराज॥

(९)

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥

(१०)

कमला थिर न रहीम कहिं, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की वधू, क्यों न चंचला होय॥

(११)

रहिमन बहुत सुपेट सों, क्यों न भयो तू पीठ।
रीते अनरीते करत, भरे बिगारत दीठ॥

(१२)

यो रहीम सुख होत है, बढत देखि निज गोत।
ज्यो बडरी अँखिया निरखि, आखिनको सुख होत ।।

(१३)

ओछो काम बडे कर, तौ न बडाई होय।
ज्यो रहीम हनुमन्त को, गिरधर कहै न कोय ।।

(१४)

जो बडेनको लघु कहौ, नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ।।

(१५)

प्रीतम छबि नयननि बसी, पर छबि कहा समाय।
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरि जाय ।।

(१६)

रहिमन रिस सहि तजत नहिं, बडे प्रीतिको पौरि।
मूकन मारत आवई, नींद बिचारी दौरि ।।

(१७)

ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लग, बढ़े अँधेरो होय ।।

(१८)

धनि रहीम जल पक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बडाई कौन है, जगत पियासो जाय ।।

(१९)

गुन तें लेत रहीम जन, सलिल कूप तें काढ़ि।
कूपहुं नें कहुं होत है, मन काहू को बाढ़ि ।।

(२०)

रहिमन निज मन की व्यथा, मनहीं राखो गोय।
सुनि अठिलहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

(२१)

खर खून खासी खुसी, बैर प्रीति मधुपान।
रहिमन दाबे ना दबे, जानत सकल जहान॥

(२२)

छिमा बडन को चाहिये, छोटन को उतपात।
का रहीम हरि को घटचो, जो भृगु मारी लात॥

(२३)

रहिमन अँसुवा नैन ढरि, जिय दुख प्रकट करेइ।
जाको घर तें काढ़िये, क्यों न भेद कह देइ॥

(२४)

मैन सलोने अधर मधु, कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भाव लोन पर, अरु मीठे पर लौन॥

(२५)

रहिमन ब्याह बियाधि है, सकहु तो जाहु बचाइ।
पायन बेरी परत है, ढोल बजाइ बजाइ॥

(२६)

रहिमन यहि संसार में, सब सों मिलिये धाइ।
ना जाने केहि रूपमें, नारायण मिल जाइ॥

(२७)

अब रहीम मुसकिल परी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिले न राम॥

१६

केशवदास

इनका जन्म सन् १५४६ में हुआ और मृत्यु १६१८ ई० में।

ये रीतिकालके प्रवतक और प्रथम कवि थे। ये अपनी कविताकी क्लिष्टताके लिए प्रसिद्ध ह। कहावत ह —

'कविको देन न चहै बिदाई।
पूछै केशवकी कविताई।।

केशव सस्कृतके महापडित थे। इस पाडित्यके कारण ही उनकी कवितामें दुरूहता और क्लिष्टता आ गई है। केशव ओडछाके राजा इन्द्रजीतसिंहके दरबारमें रहते थे। वे इनका और इनकी कविताका बडा आदर करते थे। इन्द्रजीतसिंहकी मृत्युके बाद जब ओडछाका राज्य वीरसिंहदेवके हाथमें चला गया, तो ये कुछ समय तक उनके दरबार में भी रहे। पर वहाँ इनका मन अधिक नही लगा। और ये गगा-तट पर जाकर रहने लगे, जहाँ सन् १६१८ में इनका स्वगवास हो गया।

ये रीतिकाल के प्रथम आचार्य थे। इनके ये ग्रथ मशहूर ह — (१) राम अलकृत मजरी, (२) नखसिख, (३) रसिक प्रिया, (४) कविप्रिया (५) रामचन्द्रिका, (६) विज्ञान गीता, (७) रतनबावनी, (८) जहागीर जस चन्द्रिका और (९) वीरसिंह देव चरित।

इन ग्रथोंमें काव्यकी दृष्टिसे कविप्रिया रसिकप्रिया, और रामचन्द्रिका श्रेष्ठ हैं। कविप्रियामें अलकार तथा अन्य काव्यागोंका विवेचन ह। रसिकप्रियामें शृगार रसका वणन है। रामचन्द्रिका रामका चरित लेकर लिखी गई ह और रामायणके बाद रामभक्ति पर लिखी गई दूसरी सुदर प्रबन्ध रचना ह।

केशवको आलोचकोंने हृदयहीन अलंकारवादी कवि कहा है। केशवकी कवितामें उनके पांडित्यका दर्शन ही अधिक होता है। रामचन्द्रिका जैसी सुंदर प्रबंध रचना भी केवल अलंकार और छंदोंकी नुमाइश बनकर रह गई है।

इन खामियोंके साथ केशवमें कुछ खूबियां भी हैं। केशव रस अलंकार और पिंगलके माने हुए आचार्य थे। मुक्तक काव्य लिखनेमें वे सिद्धहस्त थे। कथोपकथनकी शैलीमें रचना करनेमें तो वे अपना कोई सानी ही नहीं रखते।

केशवके काव्यकी भाषा ब्रज है, जिसमें बुंदेलखंडी शब्दोंका प्रयोग भी मिलता है। संस्कृत शब्दोंकी प्रचुरताके कारण केशवकी भाषामें सरसता और सरलताका सर्वत्र अभाव है।

अंगद-रावण-संवाद

[यह प्रसंग 'रामचन्द्रिका' से लिया गया है। राम रावण युद्धसे पूर्व रावणको आखिरी बार समझानेके लिए अंगद रामके दूतके रूपमें रावणके दरबारमें आते हैं। अंगद और रावणके बीचके संवाद यहां दिये गये हैं।]

प्रतिहार

पढौ, बिरंचि! मौन बेद, जीव! सोर छंडि रे।
कुबेर! बेर कै कही, न जच्छ भीर मंडि रे।।
दिनेस! जाइ दूर बैठु नारदादि संग हीं।
न बोलु, चंद मन्दबुद्धि! इंद्र की सभा नहीं।।

अंगद मौं सुनि बानी।
चित्त महा रिस आनी।।
ठेलि के लोग अनैसे।
जाय सभा महँ बैसे।।

संवाद

कौन हो, पठये सो कौने, ह्या तुम्हें कहा काम ह ?
जाति बानर, लकनायक–दूत, अंगद नाम ह ।।
कौन है, वह बाधि क हम देह-पूछ सब दही ?
लक जारि सहारि अच्छ गयो, सो बात वथा कहो ?
कौन के सुत ? बालिके, वह कौन बालि, न जानियो ?
काख चापि तुम्हें जो सागर सात न्हात बखानियो ।।
ह कहाँ वह ? बीर अंगद देवलोक बताइयो ।
क्यो गयो ? रघुनाथ बान बिमान बठि सिधाइयो ।।
लकनायक को ? बिभीखन देव दूखन को दह ।
मोहि जीवत होहि क्यो ? जग तोहि जीवित को कह ?
मोहि को जग मारिह ? दुरबुद्धि तेरिय जानिये ।
राम को काम कहा ? रिपु जीतहिं, कौन कब रिपु जीत्यो कहा ?
बालि बली, छलसी, भृगुनदन-गव हरयो, द्विज दीन महा ।।
दीन सो क्यो, छितिछत्र हत्यो, बिन प्रानन हहय राज कियौ ।
हहय कौन ? वहै, बिसरयौ ? जिन खेलत ही तोहि बाघ लियौ ।

अंगद

सिन्धु तरयो उनको बनरा, तुम प धनुरेख गयी न तरी ।
बानर बाँधत सो न बँध्यो, उन बारिधि बाँधि क बाट करी ।
श्री रघुनाथ प्रताप की बात तुम्ह, दसकठ, न जानि परी ?
तेलहु-तूलहु पूछ जरी न जरी, जरी लक अराइ जरी ।।

रावण

महामीचु दासी सदा पाँइ धोव । प्रतिहार ह्व क कृपा सूर जोव ।।
छपानाथ लीने रह छत्र जाको । करेगो कहा शत्रु सुग्रीव ताको ।।
सका मेघमाला, सिखी पाककारी । कर कोतवाली महादडधारी ।।
पढ़ बेद ब्रह्मा सदा द्वार जाके । कहा बापुरो सत्रु सुग्रीव ताके ।।

अंगद

पेट चढ़्यो, पलना-पलका चढ़ि, पालकि हू चढ़ि, मोह मढ़्यौ रे ॥
चौक चढ़्यो, चितसारि चढ़्यो, गज-बाजि चढ़्यो गढ़ गर्व चढ़्यो रे ॥
व्योम विमान चढ्यो ही रह्यो, कहि केसव, सो कबहूँ न पढ़्यो रे ॥
चेतत नाहि, रह्यो चढ़ि चित्त, सो चाहत मूढ़ चिताहू चढ़्यो रे ॥

रावण

निकार्यो जु भैया, लियो राज जाको।
दियो काढ़ि कै जू, कहा त्रास ताको ॥
लिये भानराली, कहाँ बात तोसों।
सु कैसे जुरै राम संग्राम मोसों ॥

अंगद

हाथी न साथी न घोरे न चेरे न गाउँ न ठाउँ-कुठाउँ बिलैहै।
तात न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न तीय कहूँ संग रैहै ॥
केसव, काम को राम बिसारत, और निकाम ते काम न ऐहै।
चेति रे चेति अजौं चित अंतर, अंतकलोक अकेलोई जैहै ॥

रावण

डरै गाय विप्र, अनाथ जो भाग। परद्रव्य छाड़ै परस्त्रीहि लाग ॥
परद्रोह जासों न होवै रती को। सो कैसे लरै वेस कीन्हे जती को ॥
गेंद कर्यो मैं खेल को हर गिरि, केसोदास।
सीस चढ़ाये आपने कमल समान सहास ॥

अंगद

जमो तुम कहत उठायो एक हर गिरि,
ऐसे कोटि कपिनके बालक उठावहीं।
काटे जो कहत सीस, काटत घनेरे घाघ,
भगरके खेल क्यों सुभट पद पावहीं ॥

जीत्यो जो सुरेस रन, साप रिखि-नारि ही को,
समझहु, हम द्विज-नाते समुझायहीं।
गहो राम-पाँइ, सुख पाँइ कर तपो तप,
सीताजी को देहु, देव दुंदुभी बजायहीं॥

रावण

जपो-तपो विप्रन छिप्र ही हरौं। अदेव द्वेषी सब देव सहरौं।
सिया न दहौं, यह नेम जी धरौं। अमानुसो भूमि अवानरी करौं॥

अंगद

पाहन तें पतिनी करी पावन, टूक कियो धनु हू हर को रे।
छत्र बिहीन करी छिनमें छिति, गब हरयो तिनके बरको रे॥
पर्वत पुंज पुरनिके पात समान तरे, अजहूँ धरको रे।
होइ नराइन हू प न ये गुन, कौन यहाँ नर, बानर को रे?

रावण

देहि अंगद राज तो कहँ, मारि बानर राज को।
बाँधि देहि बिभीखन अरु फोरि सेतु समाज को॥
पछ जारहि अच्छ रिपुको, पाइ लागहि रुद्रके।
सीय को तब देहुँ रामहि, पार जाइँ समुद्र के॥

अंगद

लंक लाय दियो बली हनुमंत संतन गाइयो।
सिंधु बाँधत सोधि कै नल छीरछींट बहाइयो॥
ताहि तोहि समेत, अध, उखारि हौं उलटो करौं।
आजु राज कहा बिभीखन बैठि हैं तेंहि तें डरौं॥
अंगद रावनको मुकुट लै करि उड्यो सुजान।
मानो चल्यो जम-लोक को दससिरको प्रस्थान॥

१७

बिहारी

बिहारीलाल माथुर चौबे ब्राह्मण थे। इनका जन्म सन १६०४ में और मृत्यु १६६४ ई० में हुई। बाल्यावस्था बुंदेलखंडमें और तरुणावस्था उनकी ससुराल मथुरामें व्यतीत हुई। मथुरासे जयपुरके मिर्जा राजा जयसिंहके दरबारमें जाकर वे सम्मानसे रहने लगे। कहा जाता है कि जिस समय ये जयपुर पहुँचे उस समय राजा अपने राजपाटको भूलकर अपनी नई रानीके प्रेममें इतने लीन थे कि उन्हें राजकाजके लिए भी फुरसत नहीं थी। बिहारीने तत्काल यह दोहा लिखकर उनके पास पहुँचाया —

'नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यो आगैं कौन हवाल॥'

इस दोहेका असर महाराजके दिल पर बहुत हुआ। इसने उन्हें कर्तव्य-परायण बना दिया। वे इतने प्रसन्न हुए कि बिहारीको जागीर देकर उन्होंने जयपुरमें ही बसा लिया और उनके प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देनेका वचन दिया। परिणामस्वरूप बिहारीने ७०० दोहोंका एक संग्रह 'बिहारी सतसई' के नामसे तैयार किया।

शृंगार रसके ग्रंथोंमें जितना आदर 'बिहारी सतसई' का हुआ, उतना और किसी ग्रंथका नहीं हुआ। पचाससे भी अधिक टीकायें अबतक इस ग्रंथकी हो चुकी हैं और होती जा रही हैं। अर्थ गांभीर्यकी दृष्टिसे सतसईके दोहे अनूठे हैं। बिहारीने गागरमें सागर भरा है। किसीने ठीक ही कहा है

'सतसैया के दोहरे ज्यों नाविकके तीर।
देखनमें छोटे लगें, बेधैं सकल शरीर॥'

दोहा

(१)

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झाईं परै, स्याम हरित द्युति होइ॥

(२)

अधर धरत हरिके परत, ओठ डीठ-पट जोति।
हरित बासकी बाँसुरी, इन्द्रधनुष रंग होति॥

(३)

इन दुखिया अँखियान कौं, सुख सिरजोई नाँहि।
देखे बनै न देखते, अनदेखे अकुलाँहि॥

(४)

जो चाहत, चटक न घटै, मैलो होइ न मित्त।
रज राजसु न छुवाइये, नेह चीकने चित्त॥

(५)

चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि, ये वृषभानुजा, वे हलधरके बीर॥

(६)

कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियौ, दीरघ-दाघ निदाघ॥

(७)

तन्त्री-नाद, कवित्त रस, सरस राग, रति रंग।
अनबूडे बूडे, तरे, जे बूडे सब अंग॥

(८)

इक भीजे चहले परे, बूडे बहे हजार।
किते न अवगुन जग करत, नै व चढ़ती बार॥

(९)

बढत बढत सपति-सलिल, मन सरोज बढ़ि जाइ।
घटत घटत पुनि ना घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ॥

(१०)

जिन दिन देखे वे कुसुम, बीति सो गई बहार।
अब अलि रही गुलाबमें, अपत कँटीली डार॥

(११)

इहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाबके मूल।
हुइ है बहुरि बसंत ऋतु, इन डारन वे फूल॥

(१२)

कर लै सूँघि सराहि कै, रहै सबै गहि मौन।
गंधी गंध गुलाबको, गँवई गाहक कौन॥

(१३)

कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाइ।
उहि खाये बौराय जग, इहि पाये बौराइ॥

(१४)

बडे न हूजै गुनन बिन, बिरद-बडाई पाइ॥
कहत धतूरे सौं कनक, गहनो गढ़्यो न जाइ॥

(१५)

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूडै स्याम रँग, त्यों त्यों उज्ज्वल होय॥

(१६)

दीरघ साँस न लेइ दुख, सुख साईं मति भूल।
दई दई क्यों करत है, दई दई सु कबूल॥

(१७)

नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यो, आगें कौन हवाल॥

(१८)

जप माला, छापा तिलक, सरै न एकौ काम।
मन काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै राम॥

(१९)

सीस मुकुट, कटि-काछनी, कर मुरली, उर-माल।
यहि बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारी लाल॥

(२०)

कब को टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु जगनायक, जग बाइ॥

(२१)

गढ़ रचना, बरुनी, अलक, चितवनि, भौंह, कमान।
आघु बँकाई ही चढ़ै, तरुनि तुरंगम तान॥

(२२)

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर।
भए [redacted] केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।

(२३)

को कहि सकै बडेनु सौं, लखे बडीयौ भूल।
दीने दई गुलाबकी, इन डारनु वे फूल॥

(२४)

को छूट्यो इहि जाल परि, कत, कुरंग, अकुलात।
ज्यों ज्यों सुरझि भज्यो चहत, त्यों त्यों उरझत जात॥

(२५)

ज्यों ह्वै हौं त्यों होउँगो, हौं हरि अपनी चाल।
हठु न करौ, अति कठिनु है, मो तारिबौ, गुपाल॥

१८

भूषण

इनका जन्म सन १६१४में हुआ और मृत्यु १७१६ में।

रीतिकालके कवियोंमें भूषण ही एक ऐसे कवि हैं, जो अ
ओजस्विनी वाणीसे विलासितामें डूबी जनतामें प्राण फूकनेका प्र
करते पाये जाते हैं। भूषण शृंगार कालके वीर कवि हैं।
वास्तविक नामका पता नहीं। 'भूषण' तो उपाधि है जो चित्र
सालकी राजा रुद्रने इनकी कविता पर रीझकर इन्हें प्रदान की थ

भूषण अनेक राजाओंके दरबारोंमें रहे पर शिवाजी
छत्रसालको छोड़कर दूसरे आश्रयदाता इन्हें नहीं रुचे। शिवाजीने
इनके एक छंद पर ही लाखों रुपये दे डाले थे। पन्नानरेश छत्रस
कहते हैं इनके आदरके लिए इनकी पालकीको कंधा लगाया था।
कारण है कि भूषणने इन दोनों ही आश्रयदाताओंका मुक्त
गुणगान किया है।

भूषणकी कवितामें न केवल आश्रयदाताओंकी प्रशंसा है ब
उसमें तत्कालीन परिस्थितियोंका सच्चा चित्रण भी है। वह राष्ट्रीय
भावनासे ओतप्रोत है। भूषणके लिखे तीन ग्रंथ मिलते हैं
(१) शिवराज भूषण (२) शिवा बावनी और (३) छत्रसाल द

तीनो ही ग्रथोंमें ओजस्विनी भाषामें लिखी गयी वीररसकी रचनायें हैं। हाँ शब्दोंकी तोडमरोड और व्याकरणकी अवहेलना अवश्य ही इनके काव्यमें कहीं कहीं खटकती है।

गणेश वदना

(१)

बिकट अपार भवपथके चलेको स्रम,
हरन करन विजनासे वहा ध्याइये।
यहि लोक परलोक सुफल करन,
कोकनदसे चरन हिय आनिके जुडाइये॥
अलिपुल कलित कपोल, ध्यान ललित,
आनद रूप सरितमें भूषण अन्हाइये।
पापतरु भजन, विघन गढ गजन,
जगत-मन रजन, द्विरद मुख गाइये॥

(२)

कामिनी कत सो, जामिनी चद सों,
दामिनी पावस मेघ घटा सो।
कीरति दान सा, सुरति ज्ञान सों,
प्रीति बडी सन्मान महा सो॥
भूषण भषण सों तरुनी,
नलिनी नव भषण देव प्रभा सो।
जाहिर चारिहु ओर जहान
लस हिंदुवान खुमान सिवा सो॥

(३)

इन्द्र निज हेरत फिरत गज इन्द्र अरु
इन्द्रको अनुज हेर दुगध नदीसको।

भूषण भनत सुर सरिताको हंस हेर
विधि हर हंसको चकोर रजनीसको॥
साहि तन सिवराज करनी करी है तं जु,
होत है अचम्भो देव कोटियो ततीसको।
पावत न हेरे तेरे जस में हिराने निज
गिरिको गिरीस हेर गिरजा गिरीसको॥

(४)

तो कर सों छिति छाजत दान है,
दान हू सों अति तो कर छाज।
तें ही गुनीकी बड़ाई सजै अरु
तेरी बड़ाई गुनी सब साज॥
भूषण तोहि सों राज बिराजत
राज सों तू सिवराज बिराज।
तो बलसों गढ़ कोट गजै अरु
तू गढ़ कोटनके बल गाज॥

(५)

साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद बिहद नगारनके
नदी नद मद गबरनके रलत है॥
ऐल फैल खैल भैल खलकमें गैल गैल,
गजनकी ठैल पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

(६)

राजत अखण्ड तेज छाजत सुजस बडो
गाजत गयन्द दिग्गज न हिय सालको।
जाहि के प्रताप सो मलीन आफताप होत
ताप तजि दुजन करत बहु ख्यालको।।
साजि सजि गज तुरी पदरि कतार दीन्हे
भूषण भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को?
और राव राजा एक मनमें न ल्याऊं अब
साहूको सराहौं क सराहौं छत्रसालको।।

१९

नामदेव

महाराष्ट्रके भक्तोंमें नामदेव बडे मशहूर भक्त हुए है। इनका जन्म पढरपुरमें सन् १२७० में और मृत्यु सन १३५० में हुई। यह जातिके छीपा थे और काम दर्जीका करते थे। सत लोग सारे देशका भ्रमण किया करत थे, इसलिए ये अपनी भाषाके साथ साथ हिन्दीमें भी लोगोंको उपदेश दिया करते थे। नामदेवने भी मराठीके साथ-साथ हिन्दीमें भी रचनायें की है। बचपनसे ही इनकी रुचि ईश्वर भक्तिकी ओर थी। इन्होने अपने माहात्म्यसे साबित कर दिया कि—

'जाति पाँति पूछै नहिं कोई।
हरिको भज सो हरिका होई।।"

नामदेवकी हिन्दी रचनायें दो प्रकारकी ह—एक सगुण भक्तिकी, जो परम्परागत काव्य भाषा या ब्रजभाषामें ह। दूसरी निर्गुण वाणी, जो संतोकी सधुक्कडी भाषामें है।

(१)

आजु नामे बीठल देखा।
मरख को समझाऊँ रे॥

पाडे तुम्हारी गायत्री लोधेका खेत खाती थी।
ल करि ठेंगा टगरी तोरी, लगत लगत आती थी॥
पाडे तुम्हारा महादेव, धौल बलद चढ़ा आवत देखा था।
पाँडे तुम्हारा रामचन्द, सो भी आवत देखा था॥
रावन सेंती सरबर होई, घरकी जोय गँवाई थी।
हिंदू अंधा तुरकी काना, दुवौ ते ज्ञानी सयाना॥

हिंदू पूजे देहरा, मुसलमान मसीद।
नामा सोई सेविया जहँ देहरा न मसीद॥

(२)

हसत खेलत तेरे देहुरे आया।
भगति करत नामा पकड़ी उठाया॥
हीनड़ी जात मेरी यादव राया।
छीपेके जनम काहे को आया॥
ल कमली चल्यिो पलटाई।
देहुरे पाछे बठो जाई॥
जेम जेम नामा हरिगुण उचरे।
भगत जनाको देहुरा फिरे॥
फेरि दिय देहरो नामेको।
पडित को पिछवारला॥

(३)

मोहि लागती तालाबेली।
बछरे बिनु गाय अकेली॥
पनिया बिनु मीन तलफ। ऐसे रामनामा बिनु नामा कलप॥

जसे गायका बाछा छूटला। थन चोखता माखन घूटला।।
नामदेव नारायन पाया। गुरु भेटत अलख लखाया।।
जसे बिष हेत पर नारी। ऐसे नामे प्रीति मुरारी।।
जसे ताप ते निमल घामा। तसे रामनाम बिनु बापुरो नामा।।

२०

अखा

अखाका जन्म एक सोनी परिवारमें हुआ था। ये अहमदाबादके निकटवर्ती गाव जेतलपुरके निवासी थे और अहमदाबादमें रहकर सुनारका धधा करते थे। कुछ समय तक सरकारी टकसालमे भी इन्होंने काम किया था। इनके जीवन-कालके सम्बन्धमें प्रामाणिक जानकारीका अभाव है। अनुमानत १५९१ स १६५६ ई० तक अखाका जीवन-काल निर्धारित होता है।

अखाके जीवनमे एकके बाद एक एम दुखद प्रसग बनन चले गए कि उन्हे ससारसे विरक्ति हो गई। वे ससारको छोडकर साधु-सन्तोका सत्सग करने लगे। पर उसे भी इन्होंने शीघ्र ही त्याग दिया क्योंकि उस क्षेत्रमें भी दम्भ ढोग और मिथ्याचारका ही बोलबाला देख पडा। इन्होंने अपने पदोमें 'जगत और भगत' में फँसे हुए इन पाखडो पर जोरदार प्रहार किये हैं।

अखा एक पहुँचे हुए ज्ञानी थे। इन्होंने वेदान्तका अच्छा अभ्यास किया था। इनके 'अखे गीता' 'गुरु शिष्य सवाद' 'पचीकरण' आदि गुजराती काव्य प्रख्यात ह। हिन्दीमें भी इन्होंने सुन्दर काव्योकी रचनाएँ की हैं जिनका सग्रह 'सतप्रिया' नामसे प्रसिद्ध है।

अखाकी तत्वज्ञान और समाज समीक्षा विषयक रचनाएँ बहुत ही अनूठी और प्रभावोत्पादक ह।

(१)

कहा भयो कंचन कुंद सो अंग,
रंग सुगंध शोभा अति ओपे।
कहा भयो तान तुरंग तुरी चढ़े,
धुजे धरा जाके नेक कोपे।
धनद सो धन, करन सो दानी,
सो कहा काम सर्यो हरि तोपे।
एते गुन अवगुन भए 'सोनारा',
जो गुरुज्ञान न पायो गुरुपे॥

(२)

जावत हैं सब लोग यहां थे,
आवत नाहि जन कोइ फरी।
राय राना से बड़े भट पंडित,
कोइ न दे पठयो पतरी॥
धन दारा सुत रहत परे,
मानीनता देह सब बरी।
इतनी तो अपने नैनु देखो,
ओर 'अला' मनने पकरी॥

(३)

माला न फेरूं, टीका न बनाऊं,
शरणे न आऊं मैं कोउ किसीका।
आपा न मेटूं थापा न थापूं,
मैं मदमाता हूँ मेरो खुमीका॥
भिस्त न दोजक दोऊ न चाऊं
ना चाऊं नाम न रूप किसीका।

है नहिं को सध्य परो जो 'अखा' को,
जानेगा जो वाइ डेर उसीका ॥

(४)

निंदक नेक नारायण न जानत,
ठानत है ओगुन मुख निंदा।
काग कु चंद कपूर मानो विष्ठा,
अतर सहेज सुभावका गंदा ॥
सुंदर सरमध्य खर नहिं नहावत,
मदन छार कीने मे आनंदा।
कहत 'अखो' सतसंग न लागत,
कुबुध कुटिल नर मतिमंदा ॥

२१

मनोहरदास

मनोहरदास इसावी १८ वी शताब्दीके अंतमें हुए। इनके जन्मकालका ठीक पता नही। केवल इतना ज्ञात है कि सन् १८३८ में इन्होने चतुर्थ-आश्रममें प्रवेश किया और सन् १८४५ में इनका स्वर्गवास हुआ।

ये सौराष्ट्रके महुवा गाँवके रहनेवाले थे। संस्कृतके साथ ही साथ ये फारसीके भी अच्छे पंडित थे। वेदांत और अुपनिषदोंका इनका अच्छा अभ्यास था। गुजराती और हिंदुस्तानी दोनों ही भाषाओंमें इन्होने कविता की है। इनके पद 'मनहर पद' के नामसे प्रसिद्ध है। इन पदोंमें इन्होंने सगुण निर्गुणके भेदमें न पडकर एकेश्वरवादकी स्थापनाका प्रयत्न किया है और ढोंगियों तथा पाखंडियोंको खूब फटकारा है।

इन्होंने कहीं 'मनोहर' और कहीं 'सच्चिदानन्द ब्रह्म' नाम छाप लगाकर पदोंकी रचनायें की हैं।

मनहर पद

(१)

कोई कहे ज्ञानी जो सकल व्यवहार जाने।
कोई कहे सब शास्त्र जाने सोई ज्ञानी है।।
कोई कहे ज्ञानी काल भूत अरु भावी जाने।
कोई कहे ज्ञानी करामतहू की खानी है।।
कोई कहे ज्ञानी सकल जग माने सोई।
चालत विविध ऐसे मिथ्या मति ठानी है।।
ब्रह्मको लहे अभेद जसे बोले चारो वेद।
मनोहर सोई सत्य ज्ञानीकी निशानी है।।

(२)

तू चेतन जड तन क्या ढूंढत, क्यों भरमाया बाजीमें।
तू है ब्राह्मण क्षत्री वैश्य में, तू मुल्ला तू काजीमें।।
तू है मनुज दनुज देवनमें, तू है मात पिताजीमें।।
तू जलचर थलचर पशुपक्षी, तू ही सकल गज बाजीमें।।
सब जग व्यापक सबसे न्यारा, खोज देख दिल काजीमें।।
स्व स्वरूप इत तित चित ढूंढत, क्यों पावे बुतसाजीमें।।
पंच कोशतें पार बूझके, झीलहुं ज्ञान गंगाजीमें।।
बसहुं सच्चिदानंद ब्रह्ममें, मत रहे माया पाजीमें।।

२२

दयाराम

राष्ट्रभाषाके विकासमें योग देनेवाले अहिंदी भाषी कवियोंमें दयाराम प्रमुख है। आपका जन्म गुजरातके चादोद गांवमें सन् १७७६ में हुआ। इनके पिताका नाम प्रभुराम और माताका नाम महालक्ष्मी था।

बचपनसे ही भगवद भक्तिकी ओर इनकी रुचि थी। त्रिकालदर्शी प० इच्छाराम भट्टसे मार्गदर्शन पाकर ये देश-देशांतरोंका भ्रमण करनेके लिए घरसे निकल पड़े। लौटने पर ब्रजभाषा और कृष्णभक्तिके प्रति इनके हृदयमें अनन्य अनुराग उत्पन्न हुआ और ये तन्मय होकर कृष्णभक्तिके पदोंकी रचना करने लगे।

दयारामका गुजराती और ब्रज दोनों ही भाषाओं पर समान अधिकार था। दोनों ही भाषाओंमें इन्होंने सुंदर रचनायें की हैं। 'वस्तुवृंददीपिका' 'श्रीमद्‌भागवतकी अनुक्रमणिका' और 'ब्रज-विलास' आदि इनकी ब्रजभाषाकी सुन्दर रचनायें हैं। दयारामके 'सतसई' व सात-सौ दोहे इनकी काव्य शक्तिके सच्चे परिचायक हैं। दोहोंकी भाषा और अर्थगांभीर्य देखकर हिन्दीके कवि बिहारीकी याद आ जाती है। कवि होनेके साथ ही साथ दयाराम एक पहुँचे हुए भक्त और संगीतज्ञ भी थे।

इस महान कलाकारकी मृत्यु ७६ वर्षकी आयुमें सन १८५२ ई० में डभोई नामक स्थान पर हुई।

दोहे

(१)

चाहूँ बसाये हृदयमें, धरूँ त्रिभंगी ध्यान।
तातें राख्यो कुटिल उर, होहि असो सों म्यान॥

चूक जीउ को धरम है, छमा धरम प्रभु आप।
आयो शरन निवाजि निज, करि हरिये संताप ॥

(३)

जद्यपि रवि आतप भर्यो, सीतल लगत सरोज।
सकुचें लखि सो सुधाकर, समझ प्रेमकी चोज ॥

(४)

प्यारे मोको तीर द्दिहु, म जिन देहु कमान।
कमान लागत तीर सम, तीर लगत प्रिय प्रान ॥

(५)

ससि चकोर अरबिन्द अलि, दिप पतग मृग राग।
जिन बिन चल्यो न क्यों तजे, जदपि एक अनराग ॥

(६)

रूप भूपके राजमें, यह महान अन्याय।
नाम न लें को मूढको, व्याकुर मारें जाय ॥

(७)

सज्जन दुरिजन एकसे, कछुक बीच बिय बीच।
इक बिछरत असु लेत सद, एक मिलत हुइ मीच ॥

(८)

गग पाप शनि ताप अरु, दारिद कल्पद्रुम नास।
इत्यादिक औरहु हनें, मिलत दास अविनास ॥

(९)

दारा निंदा संपदा, परजन जिन करि प्यार।
प्यारी सोई पान ले, जनी भाट कटार ॥

(१०)

बुरो विचारो औरको, भलो आपको चहाइ।
रज डारे जिमि सूर पे, परे सु निज मुख आइ॥

(११)

भले भलेको सब दिखें, बुरो बुरेको होइ।
दुष्ट युधिष्ठिर ना मिल्यो, साधु सुयोधन कोइ॥

(१२)

पुष्ट रहे पर कष्टमें, ये ही दुष्ट सुभाय।
आक जवासा ग्रीष्ममें, हरे और दुख पाय॥

(१३)

सो बड सूधे मग चले, कुटिल गती मति मंद।
लखि लेहु शतरंज ज्यो, सूतर और गयंद॥

(१४)

जनक जननिगत परित्सा, सुनु अशक्य पितु मात।
मित सकट, दारिद्र तिय, बाटा बाटत भ्रात।

(१५)

काहु न मालुम कौन विध, दुष्ट दुष्ट भगवंत।
गिध गनिका बकुठमें, भूतल भटकत संत॥

(१६)

प्रीति जुरी प्रकृति न मिलि, वह दुहु पख दुख पाँय।
रोटी गडेरी चचो, क्यो डारे क्यो खाय॥

संतनको कहा सीकरी सों काम ?
आवत जात पन्हैया टूटीं, बिसरि गयो हरि-नाम।
जिनको मुख देखें दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम ॥
'कुंभनदास' लाल गिरिधर बिनु और सबै बेकाम ॥
(कुंभनदास)

* * *

देखहु दुरमति या संसारकी
हरि सो हीरा छांडि हाथ तें, बांधत मोट बिकारकी ॥
नाना विधिके करम कमावत, खबरि नहीं सिरभारकी।
झूठे सुखमें भूलि रहे हैं, फूटी आंख गँवारकी ॥
कोइ खेती कोइ बनजी लागै, कोई आस हथ्यारकी।
अंध धुंधमें चहूँ दिसि ध्याये, सुधि बिसरी करतारकी ॥
नरक जानि के मारग चालै, सुनि सुनि बात लबारकी।
अपने हाथ गलेमें बाही, पासी मायाजारकी ॥
बारंबार पुकार कहत हौं, सौंह सिरजन हारकी।
'सुंदरदास' बिनस करि जैहै, देह छिनकमें छारकी ॥
(सुंदरदास)

* * *

सुनो दिलजानी मेरे दिलकी कहानी तुम,
दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
देवपूजा ठानी मैं निमाज [redacted] भुलानी,
तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहूँगी मैं ॥

(३)

बुरो प्रीतको पथ, बुरो जंगलको बासा।
बुरो नारिको नेह, बुरो मूरखसों हासो॥
बुरी सूमकी सेव, बुरो भगनी घर भाई।
बुरी कुलच्छन नारि, सास घर बुरो जमाई॥
बुरो पेट पपाल हैं, बुरो युद्धसे भागनो।
'गंग' कहे अकबर सुनो, सबसे बुरो हैं मागनो॥

(गंग)

* * *

(१)

पूत कपूत, कुलच्छनि नारि,
लराक परोस, लजायन सारो।
बंधु कुबुद्धि, पुरोहित लंपट,
चाकर चोर, अतीय धुतारो॥
साहब सूम, अराक तुरंग,
किसान कठोर, दिवान नकारो।
'ब्रह्म' भन सुनु शाह अकब्बर,
बारहो बांधि समुद्रमें डारो॥

(२)

पटमें पौढ़के पौढे मही पर,
पलना पौढ़के बाल बहाये।
आइ जब तरुनाई त्रिया संग,
सेज प पौढ़के रंग मचाये।
छीर समुद्रके पौढ़नहारको,
'ब्रह्म' कबौं चितने नहीं ध्याये।

पौंढत पौंढत पौढ़त ही सो,
चिता पर पौंढनके दिन आय।
(बीरबल 'ब्रह्म')

*　　　　*　　　　*

(१)

जारको विचार कहा, गनिकाको लाज कहा,
गदहाको मान कहा, आंधरेको आरसी।
निगुनीको गुन कहा, दान कहा दारिदको,
सेवा कहा सूमकी, अरडनकी डारसी॥
मदपीको सुचि कहा, साच कहा लपटको,
नीचको बचन कहा, स्यारकी पुकारसी।
'टोडर' सुकवि ऐसे हठी ते न टारे टर
भाव कहो सूधी बात, भाव कहो फारसी॥

(२)

गुन बिनु धन जैसे, गुरु बिन ज्ञान जसे,
मान बिन दान जसे, जल बिन सर है।
कण्ठ बिन गीत जसे, हित बिन प्रीति जसे,
वेश्या रसरीति जसे, फल बिन तर है॥
तार बिन जन्त्र जसे, स्याने बिन मन्त्र जसे,
पुरुष बिन नारि जसे, पुत्र बिन घर है।
'टोडर' सुकवि तसे मनम विचारि देखो
धम बिन धन जसे, पछो बिन पर है॥
(टोडरमल)

दोहे

(१)

करत करत अभ्यासके, जडमति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।

(२)

सरस्वतिके भंडारकी, बडी अपूरब बात।
ज्यों खरच त्यों त्यों बढ़, बिन खरच घटि जात।।

(३)

ओछे नरके पेटमें रहे न मोटी बात।
आध सेरके पात्रमें कसे सेर समात।।

(४)

कछु कहि नीच न छेडिये, भलो न वाको संग।
पाथर डारे कीचमें, उछरि बिगार अंग।।

(५)

नयना देत बताय सब, हियको हेत अहेत।
जसे निमल आरसी, भली बुरी कहि देत।।

(६)

भले बुरे सब एकसे, जौं लौं बोलत नाहि।
जानि परत ह काकपिक, ऋतु वसतके माहि।।

(वृंद)

*   *   *

बिना बिचारे जो कर, सो पीछे पछताय।
काम बिगारे आपनो, जगमें होत हँसाय।।

जगमें होत हँसाय, चित्तमें चैन न पावै।
खान पान सम्मान, रागरंग मनहिं न भावै॥
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना बिचारे॥

(गिरधर)

*　　　　　*　　　　　*

ससि बिन सूनो रैन ज्ञान बिन हिरदै सूनो
कुल सूनो बिनु पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनो
गज सूनो इक दंत ललित बिन सायर सूनो
विप्र सून बिन वेद और बन पुहुप बिहूनो
हरिनाम भजन बिन संत अरु घटा सून बिन दामिनी।
'बैताल' कहे विक्रम सुनो पति बिन सूनी कामिनी॥

(बैताल)

*　　　　　*　　　　　*

गंगाके चरित्र लखि भाख्यो जमराज यह,
एरे चित्रगुप्त! मेरे हुकुमपै कान दै।
कहै 'पदमाकर' नरक सब मूँदि करि,
मूँदि दरवाजनको तजि यह थान दै॥
देखु यह देवनदी कीन्हे सब देव, याते,
दूतन बुलाइकै बिदाके बेगि पान दै।
फारि डार फरद न राखु रोजनामा कहूँ,
खाता खति जानि दै, बहीको बहि जानि दै॥

(पद्माकर)

कठिन शब्दार्थ

१ चदबरदाई

सजमरायका आत्मत्याग

लोह लागि — तलवारसे घायल होकर
चहुँवान — पृथ्वीराज चौहान
मुरछा ह्वै — मूर्छित होकर
धरतिय — जमीन पर
चुञ्च — चोच
वाहैति — चलाती है प्रहार करती है
विरितिय — जारस
दृग दाढति — आखे निकालते हुए
भखु दिया — खिला दिया
ततच्छिन — उसी क्षण
अत सम — अतिम समयमें
ध्रम पल्लियव — धमका पालन
विवान — विमान
देह सहत — सदेह
धरि चल्लियव — बठा कर चले
पल — माम गोश्त
दह हँसत — सदेह हँसत हुए

पद्मावतीका सौंदय

कुटिल केम — घुघराले बाल
सुदम — सुदर
पौहप रचियत — पुष्प गूथे हु
पिक्कमद — कोयलके समान म शब्द
गध — सुगध, खुशबू
वयमध — बचपन और जव के बीचकी अवस्था
सेत — स्वेत, सफेद
साहै — शाभित ह अ लगत हैं
नख जस — नाखून म जैसे ह
भमर भँवहि — भौर मडराते
भुल्लहि सुभाव — अपना स्वभ भूलकर
सुक — शुक, तोता
सदिन — अच्छे मुहूतमें
उमा प्रसाद — पावतीके प्रसादसे
हर हेरियत — शकरकी कृप दष्टिसे

२ अमीर खुसरो

खालिक बारी

खालिक बारी — खुदारान अप इस पद्यवाक्यमें अरबी, फारसी और तुर्की शब्दोंके पर्या हिन्दी शब्द दिये ह।

रसूल = पगम्बर = वसीठ — दूत
ईठ — इष्ट, हितकी बात
मद = मनस — आदमी
जन = स्त्री — औरत
कहत = अकाल — दुकाल
वबा = मरी — प्लेग
बिआ बिरादर = आआरे भाई — हे भाई आ
बिनशी मादर = बठरी माई — हे माता बैठ
तुरा बगुफ्तम = मैं तुझ कहा — मैंने तुझसे कहा
कुजा बिमादी = तू कित रहा — तू कहा रहा
राह = तरीक = मारग = सबील — रास्ता
लेहका — उनका

पहेलिया

पुरुव — पुरुष, आदमी
गुनभरा — गुणोंसे भरा हुआ
उलटा बेल — तारके लपेटते समय उलटा हो जाता है। माल उलटी डाली जाती है।
करतार — परमात्मा
बरन — वर्ण रग
लचकत — मुडती, झुकती
आरी — करवत, लकडी काटनेका दातेदार औजार
बाला — (१) छोटा (२) जलाया
भाया — अच्छा लगा
बडा हुआ — (१) बडा होने पर (२) बुझ जाने पर
कह नाव — (१) उसका नाम कह दिया, बतला दिया (२) उसका नाम दिया (दीपक) कहलाता है।
तरवर — वृक्ष पेड
आधो नाव बतायो — (१) पूरा नाम न बताकर आधा नाम बताया (२) पिताका नाम 'नीम' बताया (नीम — आधा)
अपने न बोली — (१) अपने नामके बारेमें कुछ न बोली (२) अपना नाम 'नबोली (नीमका फल) बतलाया
नाखून किया — (१) खून नही किया (२) नाखून बनाए
आईना — (१) नही आई (२) दर्पण
पाईना — (१) नही मिली (२) दर्पण
आरसी — (१) आलस्य (२) दर्पण
दानाईसे — बुद्धिमानीसे
भुनाना — (१) सिकवाना (२) छुटे पैसे करवाना

मुरलीधर — कृष्ण मुरली बजाने वाले
पीतांबर — पीला वस्त्र
नाद करत है — संगीतकी ध्वनि पैदा करता है
बिरला बूझे कोय — शायद ही कोई इसे बतला सकता है

मुकरियाँ

मुकरिया — एक प्रकारकी पहेलिया
मनका भारा — बड़े दिलवाला
अच्छर — अक्षर
हिया — हृदय

सुखना

सुखना — उक्ति कथन
फेरा न था — (१) उल्टा पल्टा न था (२) दौडाया न था
तला न था — (१) जूतेके नीचेका हिस्सा नही था (२) भुना हुआ न था
दाना न था — (१) दानेवाला नहीं था (२) बुद्धिमान नही था
लोटा न था — (१) बरतन नही था (२) जमीन पर लोटा न था

दो सुखना

दो सुखना — दो भाषाओंमें कही गई एक अर्थवाली उक्ति

सौदागर राचे मी बायद — सौदागरको क्या चाहिये
बूचा — जिसके कान न हो
दोकान — (१) दुकान (२) दो कान
तिश्ना राचे मी बायद — प्यासेको क्या चाहिये
चाह — (१) पानी (२) इच्छा
शिकार बचे मी बायद कर — शिकार किससे करना चाहिये
कवते मगजको — दिमागकी ताकत के लिए
बादाम — (१) जालसे (२) बदाम

गीत

बाला — छोटा
बाँका — बनठनके रहनेवाला

दोहा

गोरी दम — ऐसा प्रसिद्ध है कि अपने गुरु हज़रत निज़ामुद्दीनकी मृत्यु पर खुसरोने यह भावपूर्ण दोहा कहकर स्वयं भी प्राण त्याग दिये थे।
गोरी — सुन्दर स्त्री
रैन — रात्रि

३ विद्यापति

(१)

अवहट्ट — अपभ्रंश भाषा
सरसिज — कमल
सर — तालाब
की — क्या
सूर — सूर्य
जौवन — यौवन जवानी
पिय दूर — प्रियतमके दूर होने पर
मोर — मेरा
बड़ — बड़ा, अधिक

(२)

परिनाम — परिणाम भविष्य
तुहु — तू
जगतारन — संसारका उद्धार करनेवाला
दीन दयामय — गरीबों पर दया करनेवाला
अतए — अत, अतएव
ताहर — तेरा
आध जनम — आधी आयु
गमायनु — गँवा दी
जरा — बुढ़ापा
सिसु — शैशव बचपन
कत दिन गेला — कितने ही दिन चले गए
निधुवन — कदम्बका वृक्ष
रमनि रभस रग मातनु — रमणि योंके साथ क्रीड़ा करनेमें मस्त रहा
भजब — भजता, याद करता
कओन बेरा — किस समय
कत — कितने
चतुरानन — ब्रह्मा
मरि मरि जाओत — चक्कर मर जाते हैं
तुअ — तेरा
आदि अवसाना — आरंभ और अंत
ताह — तुझसे
समाओत — समा जाते हैं, लीन हो जाते हैं
भनइ — कहता है
सेष समन भए — शेषनाग भी शांत हो गया है
तुअ बिन आरा — तेरे बिना और गति नहीं है
आदि अनादि — जगतका मूल कारण
कहाओसि — माने जाते हो
तारन भार ताहारा — मुझे तारने का भार तुम्हारा है

(३)

बन्दौं नाय — नमन करके तेरे पदोंकी वन्दना करता हूँ

परिहरि — छोडकर
पाप-पयोनिधि — पापका समुद्र
पारक उपाय — किस उपायसे पार करूँगा
नहि सेवितु — तेरे पदका सेवन नही किया
जुवती — युवती, स्त्री
मति मये मेलि — मनमें बसाकर
हलाहल — जहर
किए पीअल — पान किया पिया
सम्पद भेलि — सपत्ति रूपी आपत्तियोको इकट्ठा कर लिया
मने गनि — मनमें सोचकर
कहल काजे — कहते हैं कि (स्नेह) कब बढेगा
साझक बेरि — सायकालके समय, अतिम अवस्थामें
सेवकाई मँगइत — भक्ति माँगता है
हेरइत — दखता है
लाजे — लज्जित हाकर

४ कबीर

साखी

(१)

समद — समुद्र
मसि — स्याही, रोशनाई
लेखनि — कलम
वनराइ — वनके वृक्ष
कागद — कागज

(२)

सा साइ — वह ईश्वर
ज्यू — जैसे
पुहुपनमें — पुष्पोंमें
वास — खुशबू
कस्तूरीके मिरग — कस्तूरीवाला मृग, हिरण जिसकी नाभिमें कस्तूरी होती है

(३)

काके पाँय — किसके चरण (पहले) छूऊँ

(४)

मुआ — मर गया
कत — पति, स्वामी

(५)

न पाइय — नही पाया जाता
दुहागिनी — विधवा

(६)

साँझ — सध्या, शाम
दिन आथव्या — दिन अस्त हो गया
चकवा चकई — पक्षी विशेष, जो शापके कारण रातको एक साथ नहीं रह सकते।
रन हाय — रात्रि कभी न हो

(७)

आँगडियाँ भाँई पड़ी — आँखोंसे कम दिखने लग गया

पंथ — रास्ता

निहारि निहारि — देखते-देखते

जीभड़ियाँ — जीभ पर

(८)

बगूला — तूफान, चक्रवात

तिनका — तृण

तिनका मिला — उनका उनमे मिल गया

तिनका पास — उनका था, उन्हींके पास चला गया

(९)

कोठरी — कमरा

पुतली — आँखके बीचका काला भाग

पिव — परम

लिया रिझाय — प्रसन्न कर लिया

(१०)

हेरत हेरत — खोजते-खोजते

हेराय रहा — खो गया

बूँद समुँदमें — बूँद समुद्रमें विलीन हो गई है (जीवात्मा परमात्मामें लीन है)

सा क्यों जाय — अब कैसे खोजा जा सकती है

(११)

समुँद बूँदमें — समुद्र बूँदमें समा गया है (परमात्मा आत्मामें है)

(१२)

मैं — अहम् मेरी

मांकरी — सँकडी

(१३)

बहुरी — फिर

बन्ध — वध

हरियर — हरेभरे

लकडा — वन

इंधण — सूखी लकडी जो जलानेके काम आती है

सत्र — सब

(१४)

विनाशाय मयुका आन देखकर आत्माका भय हुआ कि बढ़ईके बाद अब हमारी बारी है।

मालिन — बाग

(१५)

पात पड़ता — पड़ते हुए पत्ते

अबके बिछुड़े ना मिलें — इस बार अलग होने पर मिलना असंभव है

(१६)

काची काया — कच्चा (नश्वर) शरीर

मन अथिर — चचल मन
थिर थिर काम करत — स्थिरता पूर्वक काम करता है
निरडर — निडर
हसन — यमराज हँसता है

(१७)

चकरी — कालकी चक्की
दो पाटनके बीचमें — जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटोंके बीचमें।

(१८)

पतग — पतगा
भ्रमि भ्रमि — भूल भूलकर
इवै पडत — इस पर पडता है
एक आध उबरत — कोई विरला ही बचता है

(१९)

बारह फलत — जो बारह महीने फलता रहे
गहर फल — रसमे भरे फल
पखी — पक्षी
केलि करत — क्रीडा करते है

(२०)

निन्दक — निन्दा करनेवाला, बुराई करनेवाला
नियरे — पासमें
कुटी छवाय — कुटिया बनवाकर
सुभाय — स्वभाव

(२१)

मूड मूडाये — मायेका मुडन करानेसे
मूडनें — बाल काटनेमें

(२२)

रोजा — व्रत
राति हनत है — रातको मारता है
खून — हत्या
बदगी — भक्ति
कैसे खुदाय — परमात्मा कैसे खुश हो सकता है?

(२३)

घरकी नारी — पत्नी
तनकी नारी — नाडी

(२४)

लाली — लाल रग, प्रेमका रग
लालकी — प्रियतमकी
हो गई लाल — मै भी प्रेमके रगमें रग गई
विशेषार्थ सारा ससार ईश्वरके प्रेमसे रगा हुआ है। कबीरने उसे देखना चाहा तो वह भी ईश्वर भक्तिके रगमें रग गया।

(२५)

कुभ — घडा
जल जलहि समाना — जल जलमें समा गया

यह तत कथौ गियानी — ज्ञानीने यह तत्त्व कहा

विशेषार्थ इस रूपकमें कबीरने बतलाया है कि आत्मा और परमात्माके बीच मायाका आवरण है। मायाका आवरण हटते ही आत्मा परमात्मासे मिल जाती है, उसी प्रकार जैसे घड़ेके फूटते ही घड़ेका जल कुएँके जलमें मिलकर एक हो जाता है।

सबद

(१)

मीन — मछली

आतमज्ञान — आत्मज्ञान (आत्मा और परमात्माकी एकताका ज्ञान)

धरी — रखी हुई

बाहर खोजन जासी — अन्यत्र तलाश करने जायगा

उदासी — उदास, विरक्त

अबिनासी — ईश्वर

(२)

फूला फूला फिरै — मस्त फिरता है

बिर — भाई

भुजा — हाथ

लपटि झपटिके — आलिंगन करके, लिपटकर

तिरिया — स्त्री पत्नी

हंस — जीवात्मा

जब लगि — जब तक

फेर करै घर बासा — फिर घरमें वास करती है (निश्चिन्त होकर घरमें रहती है)

चार गजी चरगजी — चार गजका कफनका टुकड़ा

काठकी घोड़ी — अर्थी

फूंक दिया जस होरी — होलीकी तरह जला दिया

(३)

करमगति — कर्मोंकी गति विधाताका लिखा

सोधि धरी — खूब सोच-विचारके विवाहका मुहूर्त निकाला

बिपति — विपत्ति, संकट

फंद — फंदा

पारिधि — शिकारी

मिरग — मृग, हिरण

चरी — विचरता था

हरिचन्द — सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र जिन्हें विश्वामित्रका

कज अदा करनेके लिये डोमके हाथो बिकना पडा था।
बलि — राजा बलि जिनकी सारी भूमि वामनावतारने तीन पैंड में नाप ली थी और जिन्हें पृथ्वी छोडकर पातालमें जाना पडा था।
काटि — करोडा
नग — एक राजा जो एक करोड गाय प्रतिदिन दान करता था, पर कर्मोंकी गतिके कारण उसे भी मनुष्यसे गिरगिट बनना पडा।
गिरगिट — पेड पर रहनेवाला छिपकलीकी जातिका एक जन्तु
आपु — आप स्वय भगवान
पटाया — समाप्त किया
हानी होके रही — विधाताका लिखा सत्य होकर रहा

(४)

हमन — हमको
इश्क मस्ताना — मस्त कर देनेवाला प्रेम
हामियारी — सावधानी
यारी — दोस्ती
दरबदर — मारे मारे द्वार-द्वारपर
यार — दोस्त
इन्तजारी — प्रतीक्षा
खलक — ससार
खल्क पटकता है — ससार अपने नामके लिए निष्फल प्रयत्न करता है
नेह लागी ह — प्रेम हुआ ह
बेकरारी — बेचैनी
इश्कका माता — प्रेममें मस्त
दुई — द्वैतका भाव
राह नाजुक — सॅंकडा माग जिसमें गिरनेका डर हो

(५)

यह तन ठाठ तॅंबरेका — यह शरीर तॅंबूरे जसा है
ऐंचत खटी — तारको खींचता ह खूटीको मरोडता है
राग हजूरेका — अलौकिक सगीत
हो गया धूरम धूरेका — धूल्में मिल गया
हम तॅंबरेका — शरीरकी जीवात्मा
अगम पथ — न जाया जा सके ऐसा दुगम पथ
सूरेका — शूरवीरका

५ रैदास

(१)

कहा — क्या
मूल — जड

अनूप — जिसकी उपमा न हो, बेजोड़
थनहर दूध — थनसे निकला हुआ ताजा दूध
बछरू जुठारी — बछड़ेने जूठा कर दिया
पुहुप बिगारी—पुष्पको भ्रमरने और जलको मछलीने बिगाड़ दिया
मल्यागिर भुअंगा — चंदनको सर्पोंने विषैला बना दिया
दोउ एकै संगा — दोनों एक साथ
सेऊँ — सेवा करता हूँ
अरचा — अर्चना

(२)

अवर संग — दूसरोंके साथ
बादर — बादल
जात्री — यात्री
ठाकुर — स्वामी
भय फाँसा — डरका फंदा
भक्ति हेतु — भक्तिके लिए

(३)

संगति — साथ, सोहबत
सरन — शरण आश्रय
गली गलीको — गंदी गलियोंका
सुरसरि — गंगा
परताप — प्रताप
महातम — माहात्म्य बड़ाई, आदर
गंगोदक — गंगाजल
स्वातिबूंद — स्वाति नक्षत्रमें बरसनेवाली बूंद
फनि — सर्प
विष — जहर
वही बूंद कै — उसी बूंदसे
निपजै — उत्पन्न होना है
अधिकाई — अधिकता
रंड — अरंडके पेड़
बापुरे — बेचारे
कंमब — कम पैदा

६ गुरु नानक

(१)

इस दम दा — इस साँसका
मन — मुझे
कीबे — क्या
रैन दा — रातका
भक्तन दे — भक्तोंने
पग परसे — चरणोंका स्पर्श किया

(२)

कूप — कुआँ
धेनु — गाय
छीर — दूध
मंदिर — मकान
हीना — हीन निम्न, नीचा
रैन — रात्रि
मेह — वर्षा

वेदविहीना — वेदोंके मानसे रहित
निहारा — ध्यानपूर्वक देखा
छांड दे — छोड दे (काम भाव आदिको)

(३)

काहे रे ... जाई — किस लिए वनमें खोजने जाता है
सब निवासी — सब स्थानों पर निवास करनेवाला
सदा अलेपा — सदा अलिप्त रहनेवाला
ताहि संग समाई — तुममें रमा हुआ है
बास बसत है — सुगन्ध बसती है
मुकर माहि जस छाई — दर्पणमें जैसे परछाइ रहती है
निरंतर — सदा हमेशा
घट ही खोजा — अपने शरीरमें ही खोजो
बिन आपा चीन्हे — स्वयको जाने बिना आत्मज्ञानके बिना
काई — कीचड

७ दादू दयाल

दोहा

(१)

घीव — घी
रमि रह्या — मिला हुआ है
व्यापक — फैला हुआ
ठौर — स्थान
वक्ता — वक्ता, कहनेवाले
मथि काढ़ ते और — आत्ममंथन करके सार तत्वको निकालने वाले विरले ही होते हैं।

(२)

दीया — (१) दीपक (२) देना
दिया करो — (१) दीपक जलाओ (२) दान दिया करो
घरमें ... पाइये — घरमें रखी हुई वस्तु भी नहीं मिलती है
जो कर ... न होय — (१) यदि हाथमें दिया न हो (२) यदि हाथसे (दान) न दिया हो

(३)

केते — कितने ही
पारिख — पारखी परीक्षा करने वाले
पचि मुये — प्रयत्न करते करते मर गए
कामति — मूल्य
हैरान है — आश्चर्यमें डूबे हुए है
गूंगेका गुड खाई — गूंगेका-सा गुड खाकर। जिस तरह गूंगा गुडका स्वाद अनुभव करता है पर व्यक्त नहीं

कर सकता उसी प्रकार राम-
नामकी महिमाका अनुभव
सब करते हैं पर उसका मूल्य
कोई नही आक सक्ते।

(४)

मसीत — मसजिद
देहरा — मदिर
भीतर — मनमे अदर

(५)

म — अहम खुदी
बरीक — सँकडा, बारीक
ठाम — जगह स्थान
दूको नाही ठाम — दो आदमियो
का एक साथ रहना मुश्किल
है।

(६)

मिसरी करि — मिस्रीमें मिल
कर
माल बस — बाँसका टुकडा
माल (मिस्री) क भाव बिक
गया।
यो महिमा हस — इसी प्रकार
हस (आत्मा) परमात्मामें
मिल कर महत्त्वशाली हो
गया ह।

(७)

कमान — धनुप

बिरला कोइ — बहुतोमें से कोई
एक इक्का दुक्का
पाचौ मिरगला — पाच हिरण —
पाच ज्ञानेंद्रिया, (आख
जिह्वा नाक कान और
त्वचा) अथवा उनके गुण
(रूप रस, गध शब्द स्पश)
सूरा — शूरवीर

(८)

हस्ती छटा — हाथीके जैसे स्वतत्र
काहु जाइ — किसीसे नही बाधा
जाता है
महावत — हाथीका चलानेवाला
पचि गए — प्रयत्न करक हार गए
कछु न बसाई — कुछ भी वश
नही चला

(९)

अमोलक — अमूल्य
आपणा — अपना
चले खाइ — व्यथ ही खो चले

(१०)

कहि कहि — कह कहकर समझा
समझाकर
जीभ रहि — जीभ थक गई
बपुरा — बेचारा
मढ — मूख
अजान — अनजान

(११)

निंदा — बुराई

गए ममूल — जडमूल्मे नष्ट हो गए

नाव — वनियाद

नाव धल — उनका नाम, स्थान यहा तक कि उनकी मिट्टी भी नष्ट हो गई।

सबद

(१)

ऐसे — इस तरह

गरीव नेवाज — गरीवो पर दया करनेवाले

हस्तकँवल — हाथरपी कमल

टारियो हूँ न टर — हटायेसे भी न हटे

छाति — छूत, वीमारी

तापरि त ही ढर — उस पर त ही कृपा करता है

हरि सा सबै सर — भगवानकी कृपासे सबका काम बन जाता है।

(२)

तत — तत्व

जव लग — जव तक

जिभ्या वाणी — जीभकी बोलनेकी शक्ति

सारगपाणा — विष्णु

पवना — पवन

श्रवन सुणीजै — कानसे सुनाई पडता है

साच मबद — अच्छे शब्द, साधुओंकी शिक्षा

श्रवणों सुरति — सुननेकी शक्ति

तवका सुणि है — तव क्या सुनेगा

पेखै — देखे

नीका — अच्छा

जीवनि जीवा — प्राणके प्राण, ईश्वर

(३)

जिकर — चर्चा

फिकर — चिंता

आशिक — प्रेमी

मुश्ताक — इच्छुक

तस तस — तरस तरसकर

खलक खेश — ससार अपना है

दिगरनेस — दूसरा कोई नही है

दिन भरते है — दिन व्यतीत करते है

दायम — सदा हमेशा

गैर — दूसरा पराया

शहीद — बलिदान होनेवाला

जिंद — जिंदगी

दीवान — दीवाना

जर खरीद बरक है — धनसे खरीदे हुए दास है

८ मलूकदास

(१)

मेरी तन — मेरी तरफ

हेरिये — देखिये

जाके ढिग — जिसके पास
सलया — शलाका सलाई
रुपा — चादी
कौडी नाहि — गाठमें (अटीमें) कुछ भी नही है
साहु — साहूकार
पराई — दूसरोकी
धनी — मालिक
काकी — किसकी

(२)

दीदार — दर्शन
अलमस्त — पूरी तरह मस्त
ठाढ होऊँ — खडा होऊँ
नजाजादा — सेवक
कुल्लाह — कलगी
गले पैरहन साजा — गलेमें आभूषण पहन रखे है
तौजी — तौजीज कर्मोंके हिसाब का चिट्ठा
धरि रोजा — रोजा (व्रत) रखना
बाग — पुकार
जिकिर — धार्मिक चर्चा
कजा — हत्या
दिल लाया — दिल लगाया
हज्ज — यात्रा
मुरसिद — गुरु

(३)

पयगम्बर — मुहम्मद साहब
मत खाई है — बुद्धि खा दी है
दीनिमान — दीन और ईमान
दुविधा — सदेह शका
दूजी — दूसरी
हजरत — पैगम्बर
सा — सौगन्ध
छाडि — छोडकर

(४)

भील — भगवानका एक भक्त
कद — कब
फील — हाथी, जिसे भगवानने मगरसे बचाया था
मुरीद — शिष्य
गीध — गिद्ध, जटायु, जिसका भगवानने उद्धार किया था
व्याध और बधिक — शिकारी, जिनके पापोंको भूलकर भगवानने मोक्ष प्रदान किया था
निसाफ कहु तिसका — इनका इन्साफ करो
नाग — सर्प, शेषनाग
अजामिल — भगवानका एक भक्त
हिसका — स्पर्धा
बदराह — कुमार्गी
बदी — बुराई

माफ जन — क्षमा
अजानी — जो अच्छी जातिका न हो
रिस — रोष

९ जायसी

सन्देश

एहि — इसका
पंडितह पूछा — पंडितोंसे पूछा
कहा सूझा — उन्होंने कहा कि हमें तो इसके सिवा कुछ और नहीं सूझा
तर उपराही — नीचे ऊपर
मानुषके घट माहीं — मनुष्यके शरीरके अन्दर
चितउर — चित्तौड़
कीन्हा — किया
हिय — हृदय
सिंहल — सिंहल द्वीप
बुधि — बुद्धि
चीन्हा — पहचाना
देखावा — दिखाया
निरगुन — ब्रह्म
दुनिया धंधा — जगका जंजाल
बाचा सोइ न — वही नहीं बचा
एहि चितबंधा — जिसने अपना चित्त इससे बांधा
सोइ — वही
बझि लेहु पारहु — इस लौकिक कथाको पारलौकिक अर्थ इस प्रकार समझ लो।
आहि — है
मारग प्रेमकर — प्रेमका मार्ग
यह जोरि सुनावा — इसे जोड़कर सुनाया, कविता रूपमें व्यक्त किया
पीर प्रेमकर — प्रेमकी वेदना
जोरी भेई — इस कविताको मनें रक्तकी लेई लगाकर जोड़ा है और प्रीतिके आंसुओंसे भिगो भिगाकर गीला किया है।
जानि — जान-बूझकर
गीत अस कीन्हा — ऐसे गीत (काव्य) बनाये हैं
मकु चीन्हा — संसारमें यह मेरी यादगार बनी रहे
अस बुधि उपराजा — जिसने रतनसेनके मनमें ऐसी बुद्धि उत्पन्न की
सुरूप — सुन्दर
धनि सोई — वही धन्य है
केइ मोल — किसीने संसारमें यश नहीं बेचा, किसीने यश मोल भी नहीं लिया।

दुइ बोल — दो शब्दोंमें दो बार
हम्ह वाल — थोडा बहुत हमें याद करेगा
बिरिध बैस — वृद्धावस्था
जोबन हुत गई — किसी समय जवानी थी पर अब वह अवस्था नष्ट हो गई है।
खीन — क्षीण
दिस्टि — दृष्टि
नर्नाहि लेइ नीरू — आँखोंसे पानी बहने लगा
दसन — दाँत
पचा कपोला — गाल पिचक गए
बन — शब्द
अनरुच देइ बोला — बोलनेमें अरुचि हो गई
बौराई — बावलापन, पागलपन
तरहँत सिराई — सिरको नीचे की ओर झुकाकर
सरवन — श्रवण, कान
ऊँच जो सुना — ऊँचा सुनाई देने लगा
स्याही — कालाका काला रंग
सीस भा धुना — माथा धुनी रूईके जैसा सफेद हो गया
नया — बौंरका फल
भँवर भए — भौंरे जैसे बाल बाल कासिन जस सफेद हो गए

जीति लेइ जुवा — जुआमें जीत ले गया
जौ लहि — जब तक
जो लहि हाथा — कवि कहता है कि जब तक जिन्दगी रहे जवानीके साथ रहे, फिर जब दूसरेका आश्रित होना पड़े तब तो मरना ही अच्छा है।
सीस डोलाव — सिर हिलाव
सीस धुनै लेहि रीस — इसी क्रोधसे सिर पीटे
"बूढ़ी तुम्ह" — आओ तुम भी बूढ़े हो जाओ
केइ असीस? — किसने ऐसा आशीर्वाद दिया

बसंत-खण्ड

नवल — नवीन, सुन्दर
चन्दन चीर — पीली साड़ी, चन्दन की सुगन्धसे युक्त साड़ी
धनि — स्त्री
बिहँसि — हँसकर प्रसन्न होकर
सेंदुर भरा — प्रसन्न होकर माँगमें (स्त्रियोंने) सिंदूर भर
परिमल — पराग, पुष्परज
मरयागिरि कैलासू — मानो कैलास पर चन्दन छिड़क दिया हो

सौर — चादर
डामी — बिछाई हुई
सौर डामी — सफेद फलाकी चादर बिछी हुई है
सजोग — मिलन
कत — स्वामी पति
जोबन वारी — यौवनवाली
करहिं धमारी — होली खेल रहे है
फाग — होली
बिरह हारी — विरहको होली की तरह जलाकर नष्ट कर दिया है
धनि ससि सूरू — पत्नी चन्द्रमाकी तरह शीतल और पति सूर्यकी तरह उत्तप्त है।
नखत चरू — नक्षत्रोंके समान शृगार चूर चूर होता है
नित्त — नित्य प्रतिदिन
कित्त — कहाँ

बारहमासा-वर्णन

असाढ़

चढ़ा असाढ़ — असाढका महीना आन ही
गगन घन गाजा — आसमानमें बादल गरजने लगे
दुंद — दुंदुभी, नगाडा
साजा बाजा — मानो विरहने अपने दलको दुदुभी और बाजेसे सजाया हो
धूम — धूमले रंगके
साम — श्याम, काले
धौरे — धवल, सफेद
घन — बादल
धाए — दौडे
सेत धजा — सफेद झडिया
बकपाँति — बगुलोकी पक्तिया कतारें
खडगबीजु — तलवारकी चमकती बिजली
बुंदबान — बूंदोंके बाण
घनघोरा — बहुत अधिक मात्रामें
ओनई — झुकी
आइ चहुँफेरी — आकर चारो तरफसे मुझे घेर लिया
उबारु — बचा
मदन हौ घेरी — कामदेवने मुझे चारो तरफसे घेर लिया है
पीऊ — पपीहा
बीजु — बिजली
घट — शरीर
जीउ — जीव, प्राण
पुष्य नखत — पुष्य नक्षत्र आठवाँ नक्षत्र जिसकी आकृति बाणकी-सी है।

नाह — नाथ, स्वामी

मदिरका छावा ? — मेरे मकानकी छावन कौन ठीक करेगा ? (वर्षा ऋतुके पहले मकानकी छतें ठीक की जाती है।)

अद्रा लाग — आर्द्रा नक्षत्र

लागि भुइँ लेई — पृथ्वी पानीसे भर गई

तिन्ह गारौ जौ गव — उन्होंको गौरव और गव है

सव — सब

फागुन

पवन थकारा वहा — पवनके झोंके चलने लगे

चागुन सीउ — चौगुनी सर्दी

तन जस पियर पात भा — शरीर पीले पत्ते जसा हो गया

झकझोरा — झकझोरना, पकडकर जोरसे हिलाना

परहिं — पडना पत्तोंका गिरना

ढाखा — वृक्ष विशेष

ओनत — अवनत, नीचे भुकी हुई

बनसपति — पेड-पौधे

हुलासू — प्रसन्नता, आनन्द

मो कहँ भा — मेरे लिए हो गया

दून — दूना

फाग जारी — चाचर गाकर सब होली खेलते हैं

मोहि होरी — मेरे शरीरमें जस होली जला दी गई हो

जौ पै पावा — ऐसे जलते हुए भी यदि प्रीतमको पा लू

रोप — क्रोध

लगौं निहोर — निहोर लगना, काम आना यह शरीर किसी तरह तुम्हारे काम आ जाय

जारौ छार कै — जलाकर राख कर दूँ

मकु — काश !

जेठ

चलै लुआरा — लू (गर्म हवा) चलती है

बवडर — बगूला आँधी

परहिं अँगारा — आग बरसती है

गाजि — गर्जना करके

लका दाह तनु लागा — लकाको जलाकर अब शरीरके लग गया है

चारिह पवन — चारों तरहके पवन

झकोरै आगी — आगको प्रज्वलित करते हैं

पलका — पलग

साम — श्याम काली

कालिंदी — यमुना

विरहक अति मदी — बिरह की आग धीरे धीरे जलनेवाली होते हुए भी बडी कठिन होती है।

दु ख वाधी — दु खसे व्याकुल हाकर

अधजर — अधजली

हाड ह लागै — हाडाका (खाने) लगा है

अवहुँ आउ भागै — अव भी आ जा, शायद तेरे आगमनको सुनकर यह विरह (जो मेरा काल होकर मेरे हाड मांसको खाने लगा है) भाग जाय।

१० तुलसीदास

प्रसग —

यह काव्य 'रामचरित मानस' के अयोध्या काडसे लिया गया है। पिताकी आज्ञाका पालन करनेके लिए जब रामचद्रजी वनमें जाने लगे, तो माता कौशल्याजीको बडा दु ख हुआ। रामचद्रजीने किसी तरहसे उन्हे तो समझा-बुझा लिया पर सीताको घर पर रहनेके लिए वे किसी प्रकार भी राजी न कर सके। विवश होकर रामचद्रजीको उन्हे साथ ले जाना पडा। पति-पत्नीके बीचके इस वाद विवाद का कविने बडा ही मनोहारी वर्णन किया है।

विवेकमय — ज्ञानसे भरे हुए

कीन्ह मातु परितोष — माताको सतुष्ट किया

लगे प्रबोधन — कहने लगे, समझाने लगे

विपिन — वन

समउ — समय, परिस्थिति

सिखावन — शिक्षा

आन भाति गुनहु — जीमें कुछ और बात न समझो

आपन मोर — अपना और मेरा

नीक — भला

आयसु — आज्ञा

भामिनी — स्त्री

सब विधि भलाई—हे भामिनी घरमें रहनेमें सब तरहमें भलाई ही है।

सुधि — याद

मति भोरी — भोली बुद्धिवाली

कथा पुरानी — पुरानी कथाए

कहहुँ सुभाय — सीधे स्वभावसे कहता हूँ

सपथ मत माही — मैं सैकडा सौगन्ध खाकर

गुरु-स्रुति-समत — गुरु जनो और वेदके मत हुए

पाइय कलेस — बिना परि श्रमके ही पा जाओगी

हठ बस — हठके कारण

गालव — गालव मुनि विश्वामित्रके शिष्य थे। शिक्षा समाप्त हो जाने पर उन्होंने गुरुको दक्षिणा देनेका हठ किया। गुरुने ८०० श्यामकर्ण घोडे मांगे जिनका इकट्ठा करनेमें गालवका बडे कष्ट उठाने पडे।

नहुप — नहुप बडे सदाचारी और धर्मात्मा राजा थे। अपने गुणोंके कारण इन्हें इन्द्रासन मिला। इन्द्रासन मिलने पर ये राजमदमें चूर हो गए और इन्द्राणीको पानेका हठ करने लगे। मदांध होकर एक दिन पालकीमें बैठकर ये इन्द्राणीको लेने चले। पालकीका सप्तर्षियोंके कंधों पर रखा गया। जल्दी चलनेके लिए ये बार बार मुनियोंसे संस्कृतमें सर्प' 'सर्प' कहने लगे। मुनियोंने क्रोधित होकर शाप दिया कि 'जा तू ही सर्प हो जा।'

पुनि — फिर

करि प्रमान पितुबानी — पिताकी आज्ञाको पूरा करके

बेगि फिरब — जल्दी ही लौटूंगा

बारा — बार, दर

सिखवनु — उपदेश

वामा — स्त्री (हे वामा!)

परिनामा — परिणामस्वरूप, परिणाममें

कानन — जंगल

घोर घाम — तेज धूप

हिम — बर्फ सर्दी

बारि — वर्षा

बयारी — बयार, पवन

चलब पयादहि — पैदल चलना पडेगा

बिनु पदत्राणा — बिना जूतियोंके

मृदु मंजु — कोमल और सुंदर

अगम — मुश्किल जहां कोई न जा सके

भूमिधर भार — बडे पर्वत

कंदर — गुफा

खोह — कंदरा

नारे — नाला, पहाडी नदी

अगाध — बहुत गहरे

भालु — रीछ

वृक — भेडिये

केहरि — सिंह

नागा — हाथी

घर्राह नाद — ज़ोरसे चिल्लाते हैं
धीरजु भागा — धैर्य नष्ट हो जाता है
भूमिसयन — धरती पर सोना
बल्कल बसन — पेड़की छालके कपड़े पहनना
असन — भोजन
ते कि — वे भी क्या
नर अहार — मनुष्योंको खानेवाले
रजनीचर — राक्षस
कोटिन्ह — करोड़ों
लागइ पानी — पहाड़का पानी बहुत लगता है
बिपन बिपति — वनकी विपत्ति
ब्याल कराल — डरावने साँप
बिहग — पक्षी
घोरा — घोर, भयंकर
निसि चर निकर — राक्षसोंके झुंड
नारी-नर चोरा — स्त्री-पुरुषोंको चुरानेवाले
धीर — धैर्यवान, बहादुर
तुम्ह भीरु सुभाये — तुम तो स्वभावसे ही डरपोक हो
हंसगवनि — हंसकी जैसी सुन्दर चालवाली
तुम्ह नहिं बन जोग — तुम वनमें जानेके लायक नहीं हो
मानस — मानसरोवर

प्रतिपाली — पाली हुई
लवन पयोधि — खारा समुद्र
मराली — हंसनी
मानस मराली — जो हंसनी मानसरोवरके अमृतरूपी जलमें पाली गई है वह क्या खारे समुद्रके किनारे रहकर जी सकती है ?
नवरसाल सीला — नये आमों के बगीचेमें विहार करनेवाली
सोह कि — क्या शोभा देता है
बिपिन करीला — करीलके जंगलमें
सुहृद — मित्र भला चाहनेवाला
सिख — शिक्षा
अघाइ उर — दिल भरकर खूब
अवसि — अवश्य
लोचन ललित — सुन्दर नेत्र
दाहक — जलन उत्पन्न करनेवाली
उतरु न आव — कुछ उत्तर नहीं दिया गया
बदेही — जानकीजी
तजन चहत — त्यागना चाहती हैं
बिलोचन बारी — नेत्रोंके आँसू
अवनिकुमारी — पृथ्वीकी कन्या जानकी
छमबि देबि — हे देवि ! क्षमा करना
अबिनय — ढिठाई

म पुनि माहीं — मैंने फिरसे इसे मनमें समझकर देख लिया है
करुनायतन — दयाके सागर
सुखद — सुखप्रद, सुख देनेवाले
सुजान — चतुर
रघु-कुल-कुमुद बिधु — रघुकुल रूपी कुमुदको खिलानेवाले चन्द्र
सुरपुर — स्वर्ग
भगिनी — बहिन
सुहृद समुदाई — मित्रोंका समूह
सजन — स्वजन
जहँ लगि — जहा तक
तरनि — सूर्य
नेह अरु नाते — स्नेह और संबंध
तिय — स्त्री
पिय बिनु ताते — स्त्रीके लिए पति बिना वे सब सूर्यसे भी अधिक तपानेवाले हैं।
धामु — मकान
धरनि — पृथ्वी
सोक समाजू — शोकका समूह, दुःखका भंडार
भूषन — आभूषण
सरिस — समान
कतहुँ — कहीं भी
तइसिअ — वैसे ही
सरद बिमल बिधु-बदन — शरद ऋतुके स्वच्छ चन्द्रमाके समान मुख
निहारे — देखकर
परिजन — कुटुम्बी
बल्कल — पेड़ोंकी छाल
बिमल दुकूल — अच्छे कपड़े
सुर सदन — देवताओंका घर, स्वर्ग
परनसाल — पर्णशाला, पत्तोंकी झोंपड़ी
किसलय — कोमल पत्ते
साथरी — बिछौना
मंजु मनोज तुराई — कामदेवकी तोशकके समान सुंदर
अमिअ — अमृत
अवध पहारू — वनके पहाड़ अयोध्याके राजमहलोंके बराबर होंगे।
छिनु छिनु — क्षण क्षणमें
बिलोकी — देखकर
मुदित — प्रसन्न
कोकी — चकवी
परिताप — संताप, दुःख
घनेरे — बहुतसे
प्रभुबियोग समाना — स्वामीके वियोगके एक क्षणके बराबर
सुजान सिरामनि — हे चतुर शिरोमणि!
छाड़िअ जनि — न छोड़िये
उर-अंतर-जामी — दिलकी बात जाननेवाले

अवध — अयोध्या
अवधिलगि — चौदह वर्षकी अवधि तक
राखिय अवध ... अहि प्रान — अगर आप यह जानते है कि चौदह वर्ष तक (आपके बिना) मेरे प्राण बचे रहेंगे तो मुझे अयोध्यामें छोड़ जाइये।
हारी — थकावट
चरन सरोज — चरणकमल
मारग जनित सकल स्रम — रास्ता चलनेकी सारी थकावट
पखारि — धोकर
बाउ — वायु, हवा
पखे — देखकर
कहँ ... पेखे — प्राणपतिका देख लेने पर दुःखका अवसर कहाँ?
सम ... डासी — बराबर जमीन पर घास और वक्षोके पत्ते बिछाकर
पाय पलोटिहि — पाँव दाबा करेगी
ताति बयार — गरम हवा
मोहि चितवनिहारा — मेरी तरफ आँख उठाकर देखनेवाला
सिंघ-बधु — सिंहकी स्त्री शेरनी
ससक — खरगोश
सियार — गीदड़
हृदय बिलगान — दिल नहीं फटा
पाँवर प्राण — नीच प्राण

रघुपति जिय जाना — रामचन्द्रजीने दिलमें जान लिया
हठि राखे ... प्राना — यदि हठपूर्वक इस यहा छोड जाएँगे तो यह निश्चय ही प्राणोंको न रखेंगी।
भानुकुल नाथा — सूर्यकुलके स्वामी
परिहरि — छोड़कर
विषादक अवसरु — दुःख करनेका अवसर
बेगि करहु बन गवन समाजू — जल्दी वन चलनेकी तयारी करो
लगे मातुपद — माताके पाँव पड़े
मेटव — मिटाओ
बिसरि जनि जाई — भूल मत जाना
फिरिहि ... मारी — हे विधाता क्या फिर मेरी दशा फिरेगी
बच्छु — वत्स पुत्र

पद

(१)

दयाल — दयालु दीनो पर दया करनेवाला
हौं — मैं
पातकी — पापी
पाप-पुंजहारी — पापके समूहका नाश करनेवाला
मोसो — मुझ जैसा
आरत — दुःखी
तोसो — तुझ जैसा

जीव — आत्मा
ठाकुर — स्वामी
चेरो — सेवक
हितु — हितकारी
ताहि माहि नात अनेक — तेरे मेरे अनेक संबंध है
जो भावै — जो अच्छा लगे
ज्यो-त्यो — जैसे तैसे, किसी भी तरह

(२)

ममता — मोह, आसक्ति
पाके केस — बाल पककर सफेद हो गए
लाज गई लोकन न — ससारसे लज्जा जाती रही
सुनहि बुलावत करन — बोला नहो जाता (पुत्रको भी हाथके इशारेसे बुलाते है)
लोभ पराये धनतें — यह शरीर पराया धन है इस पर लोभ करना व्यर्थ है।

(३)

गरीब निवाज — गरीबोकी सहायता करनेवाला
पतित उधारन — पतितोका उद्धार करनेवाला
बिरद — यश, बडाई
स्रवनन सुनी अवाज — कानोसे यह ध्वनि सुनी है

पतित — पापी
पुरातन — पुराना
अघखडन — पापोका नाश करने
दुखभजन जनके — मनुष्
दुखोको दूर करनेवाले

(४)

उर बाहु बिसाल — वक्ष (सीना) और हाथ बड़े
बिलोचन — नेत्र
सून धरे — धनुष पर धरे हुए
सुठि सोहै — बडे सुदर हो रहे है
चितै तुम त्यौं — तुम्हारी देखकर
रावरे को है ? — आपके कौन

(५)

सुधारस-साने — अमृतके भीगे हुए
सयानी — चतुर
दै सैन — इशारा करके
औसर — अवसर समय
लोचन लाहु — लोचनोका
तड़ाग — तालाब
बिगसी — खिली
कज-कली — कमलकी कली

रामसतसई

(१)

काम — वासना
इक ठाम — एक जगह एक

(२)
सरगुती — सरस्वती नदी
चातक मन — पपीहा लिए
धर — धूर

(३)
बिलम्य — दूर
तन तरवस — शरीररूपी तरकस
स्वास मार सो तीर — स्वासरूपी
मार तत्त्व जैसा तीर

(४)
असन — भोजन
बसन — वस्त्र
सत समागम — सत लोगोंका मिलन
रामधन — भक्ति
दुलभ — जो आसानीसे न मिले

(५)
रामसनेह — रामकी भक्ति
उपचारु — उपाय
अंक नव — नौका अंक
पहारू — पहाडा
जस पहार — नौके पहाडेमें
नौका अंक कभी घटता नहीं,
उसका जोड सदा नौ ही
बना रहता है जैसे—१८ २७
३६ आदिका जोड सदा ९ ही
रहता है।

(६)
सुअवतरु — अच्छे आमका पेड
इतत — इधरसे
उतत — उधरसे
पाहन हनत — पत्थर मारते

(७)
गा — गाय
गज — हाथी
बाजि — घोडे

(८)
गौर करि देखा — विचार करके
देख ला
सन्मुख — (१) सामने (२) प्रसन्न
विमुख — पीठ पीछे, अप्रसन्न

(९)
मनि — मणि
जीह देहरी — जीभ रूपी देहली
भीतर बाहिरो — अन्दर और बाहर
उजियार — उजियाला प्रकाश

(१०)
भय आस — भयके कारण अथवा
किसी प्राप्तिकी आशास
तीन कर — इन तीन चीजोंका
राज नास — मन्त्रीके कारण
राज्य, गुरुके कारण धर्म और
वैद्यके कारण तन, इन तीनोंका
जल्दी ही नाश हो जाता है

(११)
दीरघ रागी — पुराना मरीज
दारिदी — दरिद्री

कटु बच — कडे वचन बोलनेवाले
लालुप लाग — लालची आदमी
त्यागिबे योग — छोड देने लायक

(१२)

कीरति — कीर्ति, बडाई
मसि — स्याही, कालिख
तिनके मुह मसि लागि है — उनका मुह अवश्य काला होगा
मुये — मरने तक

(१३)

कचन बरसे मेह — चाहे वहाँ सोने की ही वर्षा होती हो

(१४)

भूषण — आभूषण (शोभा)
इदु — चद्रमा
भान — भानु, सूर्य

(१५)

अमल अदाग — स्वच्छ दाग रहित

११ सूरदास

(१)

बदौं — बन्दना करता हूँ
हरिराई — श्रीकृष्ण
पगु — अपग
लघै — उल्घ जाना, कूदकर पार कर जाना
दरसाई — दिखलाई पडना
रक — गरीब
सिर छत्र धराई — राजा बनकर
पाई — पाँव
पुनि — पुन फिरसे

(२)

छाडि — छोड दे
छाँडि को सग — जो लोग ईश्वरके विमुख (खिलाफ) हैं उनका साथ छोड दे
कुबुधि — कुबुद्धि खराब काम करनेकी इच्छा
उपजति है — उत्पन्न होती है
पय पान करायें — दूध पिलानेसे
नहिं तजत — नहीं छोडता है
भुजग — सर्प
स्वान — कुत्ता
न्हवाये — स्नान करानेसे
खर — गधा
अरगजा लेपन — चदनका लेप
मरकट — बन्दर
भूषण — आभूषण
गज — हाथी
खेहि — मिट्टी
बहुरि धर खेहि छग — फिरसे अपने मस्तक पर मिट्टी डालता है
पाहन पतित — नीच पत्थर
निषग — तरकश

सन्त भागी बामरि — दुष्ट लोग
भागी बमली (बउर) के
समान है

(१३)

अनत — अन्यत्र
कमलनयन — श्रीकृष्ण
महातम — माहात्म्य महिमा
ध्यावै — भजता है स्मरण करता है
दुमति — मूर्ख
कूप खनावै — कुआ खुदवाता है
मधुकर — भ्रमर, भौंरा
जलज रस — कमलका रस
करील फल — कड़वे फल
प्रभु कामधेनु — प्रभु (श्रीकृष्ण) रूपी सब इच्छाओंको पूरा करनेवाली गाय
छेरी — बकरी
दुहावै — दूध निकलवाना

(४)

अवगुन — अवगुण बुराइया
समदरसी — समद्रष्टा, बराबरकी नजरसे देखनेवाला
नार — गन्द पानीकी नाली
एक बरन — एक वर्णके एक रगके
सुरसरि — गगा
वधिक — कसाई
पारस — एक पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है
पारस गरो — पारस लोहेके गुण अवगुणको नही देखता, वह तो उसे खरा सोना बना देता है।
सगरो — सब
प्रन जात टरो — नहा तो पतितों का उद्धार करनेका आपका प्रण टट जायगा।

(५)

खिजायो — तग किया, चिढ़ाया
मोसो — मुझसे
मोल्को लीनो — खरीदा हुआ
कब जायो — कब जन्म लिया
कहा कहौ — क्या बतलाऊँ
एहि रिसके मारे — इसी गुस्सेके कारण
पुनि पुनि कहत — बार बार कहते है
तुम कत स्याम सरीर — तुम काले रगके कैसे हो?
सिखै देत बलबीर — बलदाऊजी उन्हें सिखा देते हैं
न खीझ — कभी नाराज नहीं होती
रिस समत लखि — गुस्सेसे भरा हुआ देखकर
रीझ — प्रसन्न होती है
चबाई — चुगलखोर
धूत — धूर्त दुष्ट
गोधनकी सौ — गायोंकी सौगन्ध
हौं — मैं

(६)

ा — लड़का
कि करि उठ धाई — गुस्सा करके जल्दीसे उठकर गई
गहि गाढे करि — मजबूतीसे हाथ पकड़कर
री — उड़ी
ाल — उगलना खाई हुई वस्तुको मुहसे थकना
का — लड़का
बाई — मुह खोलकर
ल महिमा — सारे ससारका ऐश्वय
धु — समुद्र
ह — सोनेका एक पवत
लानी — व्याकुल हो गई
गपानी — विष्णु

(७)

लके मिस — खेलनेके बहानेसे
व महित — सकोचके साथ
हो — हे कुँवर कन्हाई।
घर पर हो क्या?
कि करि बोली — मधुर शब्द बोली
अतुराई हो — अत्यत आतुरतासे
— लड़ाई, झगड़ा
डारी बिसराई हो — उसे भूल गए
ति — पहचानती है?

तौहि सकुचति है — तुझसे शर्माती है
दै सौह — सौगध देकर
गुन आगर — गुणोंके भडार
नागरि — राधिका

(८)

बूझति जननि — माता पूछती है
कहा हुति — कहा थी?
भाल — मस्तक, ललाट
कच गथि — बाल सँवार कर
ह्यां — यहा
तिल करि दीन्ही — तिल और चावलासे गोद भर दी (सगाई का एक दस्तूर)
फरिया — बिना सिला लहँगा
नवसारी — नई साड़ी
नाऊँ — नाम
दयी हँसि गारी — हँसकर गाली दी (ब्याह सगाई आदिके अवसरा पर दूसरे पक्षवालोंका गाली गाने या गाली देनका एक रिवाज)
मो तन — मेरी तरफ
चित — देखे
सविता — सूय
कुछ पसारी — सूयके सामने झोली फलाकर कुछ मागा
वृषभानु — राधाके पिता

दुलारी — प्यारी (पुत्री)
दपती — राधाके मातापिता

(९)

काहू सुख न लह्यो — किसीको सुख नही मिला
प्रान दह्यो — अपने प्राणोको जला डाला
अलिसुत — भ्रमर, भँवरा
करि गह्यो — हाथीके मुहमें चला गया
जलसुत — कमल
सारग — हिरण
नाद — सगीत
सनमुख बान सह्यो, — छाती पर बाण सहना पडा
दामनगीर — सहारा देनेवाला
सुधि — ध्यान ख्याल
दरस — दर्शन
पीर — पीडा
नटवर भेप — चतुर नटके जसा भेप
रतनारे — लाल
बेपीर — जो दूसरेके दुखको न जाने निमम
अहीर — गाय भस रखनेवाले ग्वालोकी एक जाति
आखिर जाति अहीर — नीच जातिका है (इसीलिए गोपियो को भूल गया ह)

(११)

वहुत दिन लाये — बहुत दिन लगाये व्यतीत किये
पालागो — पैरा पडती हूँ
वीर बटाऊ — हे भाई राहगीर
ते धाये — मे आये हो
पतिया — चिट्ठी सदेशा
स्याम घन — घनश्याम, काले बादल
सावत, मदन जगाय — सोते हुए कामदेवको भी (इन दादुर, मोर आदिने) जगा दिया ह
आपुन भये पराये — अपने पराए हो गए ह

(१२)

निर्गुण — निगुण ब्रह्म
निगुण वासी — तुम्हारा निगुण किस देशका रहनेवाला है?
मधुकर — भँवरा
सौह द — सौगध दकर
जनक — पिता
काहे रसमे अभिलासी — किस चीजके शौकीन ह
कहगो गासी — यदि कपट रख कर कहगा
पावगो आपनो — अपना किया भोगेगा
ठग्योसो — (उद्धव) ठगासा रह गया
मति नासी — सारी बुद्धिमानी जाती रही

१२ मीराबाई

(१)

परसि — स्पर्श कर
सुभग — सुन्दर
त्रिविध ज्वाला — तीन प्रकारके ताप (१) आध्यात्मिक (२) आधिदैविक और (३) आधिभौतिक
जिण — जिन
हरण — हरनेवाले
धरण — धारण की प्राप्त की
अटल कीने — आकाशमें अचल बनाकर स्थापित कर दिया
ब्रह्माण्ड भेट्यो — विश्वको नापा
नख सिग्याँ सिरी धरण — नखसे शिखा तक भूषण श्री (शोभा) को धारण करनेवाले भगवान
जिण परसि रागे — जिन चरणोंका स्पर्श करके
तरी गोतम धरण — गौतम ऋषिकी पत्नी अहिल्याका उद्धार हो गया।
काली नाग — यमुनामें रहनेवाला कालिय नामका साँप
नाथ्या — नाथकर नकेल डालकर वशमें किया
गोवधन धार्या — ऐसा प्रसिद्ध है कि इंद्रका कोप होने पर श्रीकृष्णने गोवर्धन पर्वतको सात दिन तक अपने हाथ पर रखा था।
मघवा — इंद्र
अगम — दुस्तर
तारण — तारनेवाला
तरण — तरणी, नौका
अगम तारण तरण — भव-सागर से पार करनेवाला

(२)

अविनासी — जिसका नाश न हो, परमात्मा
जेताई — जितने ही
दीसँ — दिखाई देते हैं
धरण गगन बिच — पृथ्वी और आकाशके बीच
तेताई — उतने ही
उठ जासी — उठ जायँगे नष्ट हो जायँगे
करवत कासी — काशीमें करवत लेना। (यह कहा जाता है कि काशीमें जाकर करवत खाकर मरनेसे स्वर्ग मिलता है।)
इण देहीका — इस शरीरका
न करणा — नहीं करना चाहिये
चहरकी बाजी — चिड़ियोंका खेल
साँझ पड्याँ — सन्ध्या होने पर
भगवाँ — गेरुए वस्त्र

जुगत — युक्ति, उपाय
उल्ट आसी — लौटकर फिर ससारमें जन्म लेगा अर्थात् आवागमनसे छुटकारा नही होगा

(३)

अबला — दुबल स्त्री
काटो जमकी फासी—मृत्युका फदा काट दो, आवागमनमें मुक्ति दो।
राम — श्रीकृष्ण
फाटी तो फुलडिया — टटी जतियाँ
उभाणे — नगे
घसे — घिसते हैं
मीत — मित्र
भावज — भाभी
भेंट पठाई — सौगात भेजी है
तादुल — चावल
तीन मुट्ठी — तीन मुट्ठी
टपरिया — कुटिया
फसे — जडे हुए है
हसती फसे — हाथी फँसे हुए है रास्ता रोककर खडे ह

(४)

खेल मना रे — हे मन तू होली खेल
बिन करताल — विना हथेलियोके आघातके स्वत
पखावज — ढोलकके आकारका बाजा
अणहदकी झकार — अनाहत नाद ईश्वरीय सगीतकी ध्वनि
राग छतीसू गाव — ६ राग और ३० रागिनियाँ
रणकार — ध्वनि
सील सतोख — शील और सतोष
पिचकार — पिचकारी
गुलाल — होली खेलनेके लिए रोलीके जैसा लाल रगका पदार्थ
अबर — आकाश
घटके पट — दिलके दरवाजे
डार — छोडकर
होरी आये — तेरे प्रीतम घर आये ह, त होली खेल
सोइ प्यार रे — वही प्यारा है जिसे प्रीतम प्यार कर

(५)

आवनकी — आनेकी
मन भावन — मनको भानेवाला (श्रीकृष्ण)
बाण — आदत, स्वभाव
चेरी — दासी
दावन — दामन

(६)

थाने — आपको
नही बिसर्रू — नही भूलू
कल न पडत है — शाति नही होती ह
जानत मारो छाती — मेरा दिल ही जानता ह।

रातो — लाल
कुलरा न्याती — कुटुम्बके सम्बन्धी
दोउ कर जोड्या — दोनों हाथ जोड़कर
वाती — बात
हरामी — अधर्मी दुष्ट
मदमातो — मतवाला
अंकुस — अंकुश, एक हथियार, जिससे हाथीको चलाया जाता है

(७)

हेरी — अरी
सेज — शय्या, पलग
किस विध — कैसे
की जिन लाई होय — अथवा वह जान सकता है जिसने (कभी प्रेम करके उसकी पीड़ा) लगाई हो।
साँवलिया — कृष्ण

(८)

सकल लोक जोई — सारा संसार देख लिया
सगा साई — सब सगे-सम्बन्धी
साध संग — साधुओंके साथ
लोक लाज खोई — समाजकी मर्यादा नष्ट कर दी
भगत — भक्त
छोई — छाछ
पाय — पीकर

(९)

दृष्टि पड्यो — नजर आय
कछु ना सोहाई — कुछ भी सुहाता है
मोरनीकी चन्द्रकला — मोरप चँदोवा
कुंडलकी अलक झलक — पर पड़ा हुआ घुघराले का प्रतिबिम्ब
कपाल — गाल
मीन — मछली
मकर — मगर
कुटिल भृकुटि — टेढ़ी भ
चितवनमें टौना — दृष्टिमें
खंजन — एक पक्षी जिस बड़े सुन्दर होते है
मधुप — भ्रमर
मृग छौना — मृगशावक, बच्चा
नासिका — नाक
सुग्रीव — अच्छी गर्दन
नटवर भेष धरे — च समान भेष धारण
रूप अति बिसेखा — भी विशेष प्रतीत

अधर बिंब — बिंबाफलके समान होंठ
मद हाँसा — धीमी हँसी, मुस्कान
दसन — दाँत
दुति — द्युति, कांति चमक
चपला — बिजली
क्षुद्र घंट किंकनी — छोटी छोटी घंटियोवाली करधनी
अनूप — जिसकी उपमा न दी जा सके
बलि जाईं — बलिहारी जाती है

(१०)

[illegible] — [illegible]
पहा — माग
[illegible] — जुदा
[illegible] — [illegible]
अगर — [illegible] सुगन्धित पदार्थ
[illegible] — [illegible]

१३ नन्ददास

भ्रमरगीत

ब्रज-नागरी — ब्रजकी चतुर नारी
[illegible] — [illegible]
मन मन आगरा — मन [illegible] भरी हुई
प्रेमध्वजा — प्रेमकी ध्वजा [illegible]
रस [illegible] — [illegible] समान प्रान[illegible]
उपजावन पुंज — सुख-समूहको उपजानेवाली
स्याम बिलासिनी — श्रीकृष्णके साथ आनन्द करनेवाली
हौं — मैं
तुम पै — तुम्हारे पास
कहूँ — कहीं पर
औसर — अवसर
इक ठाऊँ — एक स्थान, एक मौका
बहुरि — पुन फिरसे
मधुपुरी — मथुरा नगरी
पुलकि भई — मारे शरीरमें रोमांच हो आया
गद गद गिरा — वाणी प्रेमकी अधिकताके [illegible] गई
[illegible] — [illegible]
विवस्था — व्यवस्था [illegible]
उर्चासन बैठारि — ऊँचे आसन पर बैठाकर
बहुरि — फिरसे पुन
परिक्रमा — परिक्रमा [illegible] और [illegible]
स्याम [illegible] — [illegible] का अपना [illegible]
सुधि — [illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible]

वचन रसाल — मीठे वचन
राम अरु स्याम — बलदाऊजी और कृष्ण
पूछन व्रज कुसलात को — व्रजकी कुशलता (हालचाल) पूछने के लिए
हौं तीर — मै तुम्हारे पास भेजा गया हूँ
जनि अधीर — हृदयमें व्याकुल मत हो
सुमिरन ह्वै आयो — याद आ गया
आनन कमल — मुख कमल
अंग आवेस जनायो — शरीरमें भावातिरेकके कारण दौरा आ गया
विह्वल ह्वै — घबराकर
धरनी — पृथ्वी
व्रज बनिता — व्रजकी स्त्रियाँ
प्रबोधही — कहता है

१४ रसखान

प्रेम वाटिका

(१)

प्रेम-अयनि — प्रेमका घर
प्रेम-वरन — प्रेम-स्वरूप
प्रेम वाटिका — प्रेमका बगीचा
द्वद — दोनो

(२)

एक ह्वाइ द्वै में लसैं — एक होकर दो मालूम पडते हैं

(३)

कमल तंतु — कमल नाल
छीन — क्षीण पतला दुबल
खड्ग — तलवार
अति बहुरि — अत्यन्त सीधा और फिर टेढा भी
अनिवार — अनीवाला, तीक्ष्ण

(४)

मरे जगत क्या राय — मृत्यु पर ससार क्यो रोता है ? क्याकि यदि शरीरसे प्रेम है तो शरीर पडा रहता है। और यदि आत्मासे प्रेम है तो चिंताका आवश्यकता ही नही, आत्मा तो अमर है।

(५)

क — अथवा
जु पै — (इतने पर भी) यदि

(६)

याही तें — इसीलिए
हरि आपु ही — स्वय परमात्माने
याहि — इसे प्रेमका

(७)

एव रस — समान

सुजान रसखान

(१)

मानुष हौं — यदि मैं मनुष्य देह पाऊँ

बसौं — वास करूँ रहूँ

पसु — पशु

धेनु मँझारन — गायोंके बीचमें

पाहन — पत्थर

छत्र — छत्ता

पुरन्दर — इन्द्र

जो धरयो धारन — जिस (गोवधन) पवतको श्रीकृष्ण ने इन्द्रके कोपसे व्रजवासियो की रक्षा करनेके लिए हाथ पर छत्र बनाकर धरा था।

खग — पक्षी

बसेरो करौं — घोसला बनाऊँ

कालिन्दी — यमुना

कूल — किनारा, तट

कदम्बकी डारन — कदम्बकी डालियाँ

(२)

लकुटी — लकडी छडी

कामरिया — कमली कम्बल

तिहूँ पुर को — तीनो लोकोंका

तजि डारौं — छोड दू

आठहूँ सिद्धि — योगकी आठ सिद्धियाँ

नवा निधि — कुबेरकी नौ निधियाँ

बिसारौं — भुला डालू

कबौं — कभी

तडाग — तालाब

निहारौं — देखू

कोटिक — करोडो

कलधौतके धाम — सोनेके महल

करील — एक कँटीली झाडी जिसमें पत्तियाँ नही होती

(३)

मोर पखा — मोरका पख चँदोआ

गुंजकी माल — घुघचीके फूलोंकी माला

गरे — गलेमें

पिताम्बर — पीला वस्त्र

गोधन — गायोका झुण्ड

भावतो वोहि मेरो — (१) मेरा चहेता तो वही ह (२) मेरा तो उनके प्रति वही (प्रेमका) भाव है

स्वाँग भरौंगी — भेष बनाऊँगी

पै — लेकिन

अधर — होठ

धरी — रखी हुई

अधरान धरौंगी — पर उनके होठो पर धरी मुरली को मैं अपने होठो पर नही धरूँगी

(४)

सेस — शेषनाग

गनेस — गणेशजी

महेस — महादेवजी

दिनेस — सूर्य

सुरेस — इन्द्र

जाहि निरंतर गाव — जिसके गुणोका गान हमेशा करते रहते हैं।

जाहि — जिसे

अनादि — जिसका प्रारम्भ न हो

अनंत — जिसका अंत न हो

अखंड — संपूर्ण, खंडरहित

अछेद — जिसका छेदन न हो सके

अभेद — जिसे भेदा (काटा) न जा सके

सुबेद बतावै — वेद वर्णन करते है

नारदसे रटै — नारदसे लेकर श्री शुकदेव और व्यास तक उसका स्मरण करते हैं।

पचि हारे पार न पाव — प्रयत्न करके हार गए पर फिर भी जिसका पार न पा सके।

ताहि — उसे, परमात्माको

अहीरकी छोहरिया — अहीरकी छोकरिया, ग्वालनें

छछिया — मिट्टीका छोटा बरतन

छछिया भरि छाछ पै — थोडीसी छाछके लिए

१५ रहीम

(१)

तरुवर — वृक्ष

सरवर — सरोवर, तालाब

पान — पानी

पर काज हित — दूसरोके कामके लिए

संपति सुचहिं — संपत्तिका संचय करते हैं।

सुजान — चतुर, सज्जन

(२)

मन हाथ है — मन पर अधिकार है

मनसा — इच्छा

कहुँ किन जाहि — कही भी क्यो न जाय

काया — शरीर

(३)

संपति सगे — धनके सम्बन्धी

बिपति कसौटी जे कसे — विपत्तिकी कसौटी पर जो कसे जा

सकें मुसीबतमें जो काम आ सकें
मीत — मित्र

(४)

तब ही लग — तब ही तक
जीबो — जीना
दीबो — दान देनेकी शक्ति
धीम — धीमा मन्द
हमहिं न रुचै — हमको अच्छा नहीं लगता है

(५)

देखि बडेनको — बडी वस्तुओंको देखकर
लघु — छोटी वस्तु
तरवारि — तलवार

(६)

अमरबेलि — एक प्रकारकी वृक्षों पर फलनेवाली बिना जडकी बेल
मूल — जड
प्रतिपालत है ताहि — ईश्वर उसको भी पालता है
काहि — किसलिए, किसे

(७)

सर — तालाब
औरे सरन समाहि — दूसरे तालाबोंमें आकर समा गए
मीन — मछली
बिन पच्छके — बिना पंखोंकी

(८)

धूर धरत — धूल धारण करता है, धूल डालता है।
किहि काज — किस कामके लिए
जिहि रज मुनि पत्नी तरी — जिस (चरण रज) से अहिल्या का उद्धार हो गया
गजराज — हाथी

(९)

कैसे निभे — किस तरह निभ सकता है
बेर केर को सग — बेर और केल की मित्रता
वे डोलत रस आपने — वह अपने आनन्दमें झूमता है

(१०)

कमला — लक्ष्मी, धन-सम्पत्ति
थिर — स्थिर
पुरुष पुरातन — (१) विष्णु (२) बुड्ढा आदमी
चचला — चचल

(११)

रीतें — याने भला होने पर
अनरीत करत — कुरीत बुरे काम करता है

भरे — भर जाने पर, तप्त होने पर
दीठ — दृष्टि
रीतें दीठ — भूखके कारण आदमी कुकम करता है और भराधरा होने पर घमड करने लगता है।

(१२)

निज गात — अपना गात्र, अपना समुदाय
बडरी अँखियाँ निरखि — बडी आँखोंको देखकर

(१३)

ओछो — छोटा आदमी
गिरिधर काय — हनुमानको कृष्णकी भाति गिरिधर (पहाडको उठानेवाला) कोई भी नही कहता

(१४)

बडेनको — बडे आदमियोंका
नहिं घटि जाहि — छोटे नही होते

(१५)

छबि — शोभा, सुदरता
कहाँ समाय — कहाँ समा सकती है
सराय — धर्मशाला
आप फिरि जाय — राहगीर स्वय ही लौट जाता है

(१६)

रिस — गुस्सा
प्रीतकी पौरि — प्रेमका दरवाजा
मूकन मारग — मुक्कियोंका प्रहार करने पर (थपथपानेसे)
दौरि — दौडकर

(१७)

गति — दशा
दीप — दीपक
कुल कपूत — कुलके कुपुत्र
वारे — (१) जलाने पर (२) बचपनमें
बढे — (१) बुझ जाने पर (२) बडे हो जाने पर

(१८)

जलपक — गड्ढेका पानी
पियत अघाय—तृप्त होकर पीते है
उदधि — समुद्र

(१९)

गुन — (१) रस्सी (२) गुण
सलिल — जल
बाढि — बढकर, गहरा

(२०)

निज मनकी व्यथा — अपने मनका दुःख

मनही गाय — मनमें ही छुपा कर रखो
अठिन्ह — हँसेंगे

(२१)

खैर — कुशल क्षम निश्चिन्तता
खून — हत्या
मधुपान — शराब पीना
दाबे ना दबे — छुपाएसे नही छुपते

(२२)

छिमा — क्षमा
उतपात — उत्पात
हरि — विष्णु
भृगु — एक ऋषि, जो विष्णुको सोता हुआ देखकर उचित सत्कार न पाने पर क्रोधित हुए थे और जिन्होंने विष्णुके सीने पर लात मारकर उन्हें जगाया था।

(२३)

नन ढरि — नेत्रोंसे निकलकर
जाका — जिसे

(२४)

सलौने — नमकीन
मधु — मीठे
घटि कौन — कौन घटता है यानी कोई भी किसीसे कम नहीं है
लौन — नमक

(२५)

बियाधि — व्याधि, संकट, दुःख
सकहु बचाइ — यदि हो सके तो इससे बच जाओ
बेरी — बेड़ी
ढोल बजाइ बजाइ — सरे आम ढोल बजा-बजाकर

(२६)

धाइ — दौड़कर
कहि रूपमें — किस रूपमें

(२७)

गाढे दाऊ काम — दोनों ही काम मुश्किल है
जग नहीं — (सच बोलनेमें) सांसारिक सफलता नहीं मिलती।

१६ केशवदास

अंगद रावण-संवाद

प्रतिहार — द्वारपाल, दरबान
विरंचि — ब्रह्मा
मौन — चुपचाप
जीव — बृहस्पति
सोर छंडि दे — शोर मचाना छोड़ दे
कुबेर — धनपति देवताओंके कोषाध्यक्ष

बेर कै कही — कितनी बार कहा
जच्छ — यक्ष, कुबेरकी निधियाके रक्षक
न जच्छ मंडिरे — यक्षोंकी भीड मत इकट्ठी कर
दितेय — सूर्य
नारदादि संग ही — नारद वगैराके साथ ही
मद बुद्धि — मूर्ख
बानी — वाणी, वचन
चित्त आनी — चित्तमें बड़ा क्रोध आया
ठेल्वि — धक्का देने
लोग जनैसे — (अन्+ईन) राक्षस लोग
पठ्यो सो कौने — किसने भजा है ?
लंकनायक-दूत — लंकाके राजा (भावी राजा विभीषण) का राजदूत
दही — जला दी
संहारि अच्छ — अक्षयकुमारको मारकर
न जानियो — नहीं जान पाया
कौन चौपि बखानियो — जिसके लिए प्रसिद्ध है कि तुम्हें बगलमें दबाकर सात समुद्रों में स्नान करता था।

देवलोक — स्वर्ग
रघुनाथ सिधाइयो — रघुनाथ के बाणरूपी विमान पर बैठकर चला गया अर्थात रामचंद्रजीके बाणमें मरनेके कारण उसका मोक्ष हो गया
देव दूखनको दह — देवताओंसे बैर रखनेवाले राक्षसोंका मारने वाला
दुरबुद्धि — दुर्बुद्धि, मूर्खता
रिपु जीतहिं — दुश्मनोंको जीतते हैं
भृगनंदन — परशुराम
द्विज दीन महा — अत्यंत दीन ब्राह्मण
छिति छत्र — पृथ्वीकी रक्षा करने वाले क्षत्री
हत्यो — नष्ट किया
बिन प्राणन कियो — सहस्रार्जुनको मारा
वहै बिसर्‍यो ? — वही भूल गया क्या ?
सिंधु तर्‍यो — सागरको तैर गया
धनुरेख — धनुषकी रेखा जिसे लक्ष्मणजीने पर्णकुटीके द्वार पर रामचन्द्रजीके खाजमें जाते समय खींचा था
उन बारिधि बाट करी — उन्होंने समुद्रको बाँधकर उस

परमें लकामें आनेका रास्ता (पुल) बना दिया।

दसकठ — रावण

तेल्ह जराइ जरी — तेल और रुईसे हनुमानजीकी पछ तो जली या नही जली (जरा भी नही जली) पर रत्नजटित लका बिल्कुल जल गई।

मीचु — मत्यु

सूर — सूय

छपानाथ — चद्रमा

लीने रहै — लिये रहता है

छत्र — राजाओके सिर पर रहने वाला सुनहरी छाता

सका मेघमाला — बादल भिश्तीका काम करते है

सिखी पाककारी — अग्नि रसोइयेका काम करती ह

कोतवाली — पुलिस विभागकी देखरेख

महादडधारी — भैरव

पेट चढ्या — पेटमें आया

पल्का — पलग

चौक — आगन

चितसारि — चित्रसारी विलास भवन

गज बाजि — हाथी घाडे

गढ गव — गवका गढ

व्योम — आकाश

रह्या चढि चित्त — अब भी तेरा चित्त चढा हुआ है

त्रास — डर

बानराली — बदरोकी सेना

घोरे — घाडे

चेरे — चाकर

ठाऊँ — स्थान

कुठाऊँ बिलहै — बुरी जगह मारा जायगा

तात — पिता

बित्त — धन

कहूँ सग रहै — साथ रहगे क्या ? अर्थात् कोई भी साथ नही रहेगा

कामको राम — ईश्वर, जा आड समय काम आता है

निकाम — व्यथ

काम न ऐह — काम नही आयेंग

चेति अजौं चित अतर — अब भी मनमें चेत जा

अतक लोक — परलोक

जैह — जायगा

बिप्रै — विप्र, ब्राह्मण

अनार्थं जो भाज — जो अनाथ कहलाते ह जो यतीमो पर दया करते ह

छाड — त्यागे

परद्रोह — अपकार

तीको — किंचित, थोडासा भी
ंस — भेप
ती — यति योगी
रगिरि — कैलाश
हास — खुशीस
नरे — बहुतसे
घ — जादूगर
गर — इन्द्रजाल
भट पद — योद्धाकी पदवी
रेम — इन्द्र
— रण युद्ध
प — शाप
खि-नारि — ऋषिकी पत्नी — अहिल्या
ज-नाते — तुम ब्राह्मण हो इस लिए
ी — पकड लो
न-पाँइ — रामके चरण
ी — तपस्वी
बजावही — देवता लोग नगाडे बजाकर जयजयकार करेंगे
— क्षिप्र तुरन्त
व द्वेषी — राक्षसोस बर रखने वाले
ौ — मार डालू
नुसी — बिना मनुष्याकी
नरी — बिना बदराकी
ी — मुनि पत्नी, अहिल्या

पावन — पवित्र,
हर धनु — शिवका धनुष
छत्र बिहीन — क्षत्रिया (राजाओ मे) रहित
छन — क्षण
छिति — पृथ्वी
तिनके बरको — परशुरामके बलका
पुज — समूह
पुरैनि के तरे — कमलके पत्तेके समान तर गए
अजहू धरको रे — अब भी तेरे मनमें शका है
नराइन ह प — नारायणमें
ता कहँ — तुझे
बानर राज — सुग्रीव
सतु — पुलिया
अच्छ रिपु — अक्षयकुमारका दुश्मन हनुमान
रुद्र — महादव
लाय दिया — जला दिया,
सोधि कै — जान बझकर
नल — रामकी सेनाका एक प्रमुख बानर
छीर छीट बहाइया — बिल्कुल जलमग्न कर दिया
ताहि नाहि समेत — उस (उसका) कुल सहित

प्रस्थान — वह वस्तु जो यात्राके महूर्त पर घरसे निकलकर यात्राकी दिशामें रख दी जाती है।

१७ बिहारी

दोहा

(१)

यह बिहारी सतसईका पहला दोहा है। इसमें कविने राधाकी वंदना की है।

भव — संसार

बाधा — रुकावट, विघ्न

राधा नागरि सोइ — वही चतुर राधिका

झाँइ परै — (१) परछाईं पड़नेसे (२) झलक दिखनेसे (३) ध्यान आनेसे

हरित दुति — (१) हरे रंगवाला (२) प्रसन्न (३) जिसकी द्युति हर ली गई हो तेजहीन

(२)

अधर धरत — ओठ पर धरते ही

परत — पड़ती है

दीठ — दृष्टि

पट — वस्त्र

हरित बाँस — हरे बाँसकी

इंद्रधनुष रंग — इंद्रधनुषके जैसे विविध रंगोंवाली

(३)

भिरजाई नाहि — बनाया ही नहीं

दर्पं दरसन — नायकके दिखने पर लज्जावश उसकी ओर देखा नहीं जाता है

अकुलाहि — व्याकुल होती है

(४)

जौ चाहत — यदि चाहत हो

चटक — चमक

मित्त — मित्रता

रज राजस — रजोगुणकी धूल

नेह चीकने चित्त — स्नेह (प्रेम, तेल)से चिकनाये हुए चित्त पर

(५)

चिर जीवौ जोरी — इन दोनोंकी जोड़ी चिरजीवी हो

जुरै — जुड़े

को घटि — कौन कम है?

वृषभानुजा — (१) वृषभानुकी बेटी (२) वृषके सूर्यकी बेटी (३) वृषभ अनुजा बैलकी बहन

वे हलधरके बीर — (१) बलदेवजीके भाई (२) शेषनागके भाई (३) हलको धारण करनेवाले बैलके भाई

(६)

बहरानै — व्याकुल होकर किस कारणसे?

एकत्र बसत — इकट्ठे हो गए हैं
अहि — सर्प
तपोवन — तपस्वियोंके रहनेका वन जहाँ जीवधारी आपसका बैर छोड़ कर बसते हैं।
दीरघ दाघ निदाघ — प्रचंड ताप वाली गर्मी

(विशेष ऐसा प्रसिद्ध है कि इस दोहेकी पहली पंक्ति बिहारीके आश्रयदाता महाराज जयसिंहने चित्रकार द्वारा बनाए गए एक चित्रको देखकर कही थी। दूसरी पंक्ति बिहारीने उसके उत्तरमें कही।)

(७)

तन्त्रीनाद — वीणाके मधुर स्वर
कवित्त रस — काव्यका आनन्द
रति रंग — स्त्री प्रेम
अनबूड़े बूड़े — जो आधे ही डूबे वे डूब गए, नष्ट हो गए
तरे जे बूड़े सब अंग — जो पूरे डूबे वे तर गए उनका उद्धार हो गया

(८)

चहले परे — फिसल जाय
नै वै — नदी और उम्र
अवगुन — भूल

(९)

संपति सलिल — संपत्ति (धन) रूपी जल
मन सरोज — मन रूपी कमल
पुनि — फिरसे पुन
बरु — चाहे
समूल — जड़ सहित

(१०)

बहार — बसंत ऋतु
अलि — भ्रमर
अपत — बिना पत्तोंकी
कँटीली डार — काँटावाली डाल

(११)

अटक्यो रहै — लगा रहता है, उलझा रहता है
मूल — जड़ सूखी टहनी
हुइ है बहुरि — फिरसे होगी

(१२)

कर लै — हाथमें लेकर
सराहि कै — प्रशंसा करके
गहि मौन — चुप होकर
गंधी — इत्र बेचनेवाला
गँवई गाहक कौन — गाँवमें कौन ग्राहक है

(१३)

कनक — (१) सोना (२) धतूरा

कनक कनक तें — सोनेमें धतूरसे
मादकता — नशा
अधिकाइ — अधिक
पाय बौराय — पानेसे ही पागल हो जाना है

(१४)

बिरद — यश बड़ाई
कहत कनक — धतूरेको कनक कहते हैं

(१५)

अनुरागी — प्रेमी
गति — रीति चाल
स्याम रंग — (१) श्रीकृष्णके प्रेम में (२) काले रंगमें
उज्ज्वल — (१) निर्मल (२) सफेद

(१६)

दीरघ साँस — लम्बी साँस
साइ — स्वामीका
दई दई — हाय दया! हाय दया!
दइ कबूल — जो विपत्ति विधाताने दी है उसे स्वीकार कर

(१७)

पराग — पुष्परज, जवानीकी रंगत
मधुर मधु — मीठा मकरंद, सरसता

कलीही सों बँध्यो — कलीके प्रेममें ही बँध गया है
हवाल — दशा
(विशेष ऐसा कहा जाता है कि यह दोहा बिहारीने जयपुरके राजा जयसिंहको लक्ष्य करके लिखा था।)

(१८)

सरै काम — कुछ भी काम नहीं बनता
मन काँचे — कच्चे मनवाला
साँचे राम — ईश्वर तो सच्चाईसे प्रसन्न होता है

(१९)

कटि — कमर
काछनी — छोटी धोती
यहि बानिक — इस भेषमें
बिहारीलाल — (१) वृंदावनमें विहार करनेवाले श्रीकृष्ण (२) कविका अपना नाम

(२०)

टेरतु — पुकारता है
रट — नामका जप
जगवाइ — जमानेकी हवा

(२१)

गढ रचना — किलेकी बनावट
बरुनी — आँखकी पलकके किनारे के बाल

अलक — केश, बाल
चितवन — दृष्टि
कमान — धनुष
आध बँकाई ही चढ — इनका माल इनके बाँकेपनसे ही बढता है
तरुनि — सुंदर स्त्री
तुरगम — घोडा
तान — संगीतके स्वरोंका उतार चढाव

(२२)

सबी — (अरबी शबीह), चित्र
गहि गरूर — खूब घमंड करके
केते — कितने ही
चतुर चितेरे — कुशल चित्रकार
कूर — अपमानित

(२३)

को मौं — बडे आदमियोंको कौन कह सकता है
रूखे — दगबर
दीने दई — विधाताने बनाई है

(२४)

को छूटयो — कौन मुक्त हुआ है
इहि — इस
कत — क्या
कुरंग — हिरन
अकुलात — व्याकुल होता है

सुरझि — सुलझकर
भज्यो चहत — भागना चाहता है

(२५)

ज्यों ह्वाउँगो — जैसा होना होगा वैसा ही हो जाऊँगा
चाल — चालचलन, कर्मका फल
मो तारिबौ — मेरा उद्धार करना

१८ भूषण

(१)

विकट — कठिन
भव — संसार
पथ — राह
श्रम — परिश्रम
हरन — हरण करनेवाला
करन — कण, कान
विजना — पंखा
ब्रह्म ध्याइये — ब्रह्मकी तरह मान कर ध्यान कीजिये
कोकनद — कमल
अलि — भौंरा
वलित — सुशोभित
कपोल — गाल
ध्यान ललित — जिनका ध्यान सुन्दर है
सरित — नदी

नहाइये — स्नान कीजिये
तरु — वृक्ष
भंजन — तोडनेवाले
विघन — विघ्न, आपत्ति
गढ — किला
गंजन — नष्ट करनेवाले
द्विरदमुख — हाथीके जैसे मुहवाले, गणेशजी

(२)

कामिनी — स्त्री
कंत — स्वामी पति
जामिनि — रात्रि
दामिनि — बिजली
पावस — वर्षा ऋतु
सो — से
कीरति — कीर्ति बडाई
सूरत — दशा हालत
सनमान — सम्मान आदर
भूपने — गहना
तरुनी — युवती
नलिनी — कमलिनी
नव — नए
पूपन — पूपण सूर्य
प्रभा — चमक
जाहिर — प्रसिद्ध
लस — शोभा पाता है
हिंदुवान — हिन्दू समूह

(३)

(इस पदमें भूपणने बडी ही अनूठी कल्पना की है। काव्यमें यशका रंग सफेद माना जाता है। शिवाजीके अत्यधिक यशके कारण सारी वस्तुएँ सफेद हो गई है। इस सफेदीके कारण जो मुश्किलें पदा हुई उनका कवि यहाँ वर्णन करता है)

निज — अपना
हेरत फिरत — ढूढता फिरता है (क्योंकि पहले तो एक ऐरावत हाथी ही सफेद था पर अब तो सभी हाथी सफेद हो गए है)
गज इंद्र — गजेन्द्र ऐरावत हाथी
इंद्रका अनुज — इंद्रका छोटा भाई, विष्णु
दुगध नदीस — दूधका समुद्र, क्षीर सागर
सुरसरिता — गंगाजी
विधि — ब्रह्मा
रजनीस — चंद्रमा
करनी — काय
देव कोटियो ततीसको — ततीस करोड देवताओंको
गिरीस — महादेव ---

निज गिरि — अपना पहाड, हिमालय
गिरिजा — पार्वती

(४)

ता — तव, तुम्हारे
छिति — पृथ्वी
छाजत — शोभित होता है
तै ही — तेरेसे ही
बिराजत — शोभा पाता है
गजैं — गरजते है

(५)

साजि — सजाकर
चतुरग — वह सेना जिसमें रथ, हाथी, घोडे और पैदल, ये चारो होते है।
तुरग — घोडा
सरजा — शिवाजीकी पदवी
जग — लडाई
भनत — कहता है
नाद — शोर
बिहद — बृहद, बहुत अधिक
नदी नद रलत ह — शिवाजीकी सेनाके मस्त हाथियोंके मदसे नदी-नद भर गये हैं।
ऐल — झुड
फैल — फैलनेसे
खल भैल — खलभल

खलक — ससार
ठैल पैल — धक्का, रगड
उसलत है — उखड जाता है
तरनि — सूर्य
थारा — थाल
पारा — धातु विशेष
पारावार — समुद्र

(६)

आफताब — सूर्य
साज सजि — आभूषणासे सजाकर
तुरी — घोडा
पैदर क्तार — पैदलोकी पक्ति
साहू — छत्रपति शिवाजीके पौत्र
छत्रसाल — भूषणके एक आश्रय दाता राजा

१९ नामदेव

(१)

आजु — आज
नामे — नामदेवने
बीठल — विट्ठल, नामदेवके आराध्य देव
पाँडे — पडित
गायत्री — गायत्री मत्र (कर्मकाड)
लोधा — एक जाति विशेष
लैकरि — लेकर
ठेंगा — लकडी

लैकरि तोरी — लकडी लेकर टाग तोड दी
लगत — लँगडाते हुए
धौल बल्द — सफेद बल
सेंती — स
सरवर होई — आमना सामना होने पर
जोय — जोरू, स्त्री
तुरुकी — मुसलमान, तुक
सयाना — चतुर
देहरा — मदिर
मसीद — मस्जिद
सोई सविया — उमीकी उपासना की

छीपा — कपडेकी छपाईका काम करनेवाली एक जाति
लै — लेकर
कमली — कम्बल
चलियो पलटाई — पलट चला, मुड गया
जेम जेम — जसे जसे, जिमि जिमि
उघरे — याल
भक्त जनाको — भक्त लोगोका
फेरि दिय नामका — मदिरकी देहरी नामदवकी तरफ फेर दी
पिछवारला — पीछेका हिस्सा

(२)

प्रसग ऐसा प्रसिद्ध है कि एक बार नामदेवको एक मदिरमें से नीच जातिका समझकर निकाल बाहर किया गया। वे मन्दिरके पीछे बठकर ईश्वरकी भक्ति करने लगे। थोडी देरमें मदिरका द्वार घूमकर नामदेवकी आर हो गया।

हसत खेलत — हँसते खेलते हुए
देहरा — मदिर
भगति करत नामा — भक्ति करते हुए नामदवका
हीनडी — नीची

(३)

तालाबेली — बेचैनी
मीन — मछली
तलफ — बेचैन रहती है
कलप — व्याकुल हो रहा है
बाछा — बछडा
छूटला — छूट गया हो
थन चाखता घूटला — और थनसे मक्खनके घूट पी रहा हो
गुरु भेटत — गुरुसे मिलने पर
अलख लखाया — जो न दिखलाई पडनेवाला (परमात्मा) था वह भी दिखलाई पडने लगा
विषयहत — कामवासनाके लिए

रनारी — पर स्त्री
मे ताप धामा — विना
गर्मीकी धूप
पुरो — बेचारा

२० अखा

(१)

द सो — मोगरेके फूलके जैसा
पे — चमके
न — कसकर, सगीतकी तान
ग तुरी — घोडा घोडी
जे धरा — पृथ्वी धूजती है
— थोडासा
के — जिसके (परमात्माके)
पे — क्रोध करने पर
द — कुबेर, धनका देवता
न — कर्ण, दानियामें प्रमुख
ा काम नयों — क्या काम
चल पाया ?
ो — तेरे बिना
— इतने
— हो गए
पे — गुस्स

(२)

ा — फिरकर, लौटकर
राना — राजा और राणा
— योद्धा

कोई पतरी — किसीने भी
वहाँसे पत्र लिखकर नही भेजा
रहत पर — पडे रह जाते ह
मानीनवा वरी — वह मान्यता
तो देहके साथ ही जुडी हुआे है

(३)

पेरु — पहले
आपा न मटू — अपने आपको कष्ट
न दू
थापा न थापू — सप्रदायाकी छाप
न लगवाऊँ
भिस्त — बहिश्त स्वग
दोजक — दोजख, नक
दोउ न चाऊँ — दोनोको ही
नही चाहूँ
डेर — डेरा, स्थान
है नहि उसीका — जो 'है'
और नही है के सशयमें
नही पडा है वही उस
(ब्रह्म) के स्थानका जान
सकेगा।

(४)

नेक — थोडा
ठानत है — करता है
कु — को, के लिए
कद — गूदेदार जड मावा
विष्ठा — मैल

अतर — मनमें
मर — तालाव
मदन करना — ममलना, लपेटना
छार — मिट्टी
मतिमदा — मूख

२१ मनोहरदास

मनहर पद

(१)

सकल — सब
भावी — भविष्य
करामत — करामात चमत्कार
गानी — गान
सकल जग माने साई — जिसे सारा ममार माने वही
विविध — कितनी ही तरहम
मिथ्या मति ठानी है — व्यथकी धारणाएँ बना ली है
एहै अभेद — जीव और ब्रह्म एक है इस रहस्यको जो जान जाय
जग जाने धारा यह — जैसा कि सारा जमाने जाना है

(२)

जड तन — जड पदाथ
भरमामा — भ्रममें पड गया
वाजा — राग मामारिक निस्सार
मनुख — मनुष्य, मानव
दनुख — राक्षस दानव

गजबाजी — हाथी घोडे
स्वस्वरूप — स्वयका स्वरूप (परमात्मा)
बुतसाजी — मूतिपूजा
पच कोश — वेदातमें माने गए आत्माके पाँच आवरण
झीलहु गगाजीमें — ज्ञानरूपी गगामें निमग्न हो जाओ
पाजी — नीच

२२ दयाराम

दोहा

(१)

चाहूँ — चाहता हूँ
त्रिभगी — जो तीन जगहसे मुडा हुआ हो। श्रीकृष्णका एक विशेष प्रकारका खडे होने का ढग जिसमें गरदन कटि और चरणोंमें खम रहता है।
तातें — इसलिए
कुटिल उर — बाँका हृदय
होहि म्यान — बाँके खड्गके लिए बाँकी ही म्यान चाहिए

(२)

भूख — भूख
नियारि — सतुष्ट करना
निज करि — अपनाकर
मंतान — दु ख

(३)

आतप — धूप, गर्मी

सकुचें — मुरझाना

लखि — देखकर

सुधाकर — चन्द्रमा

प्रेमकी चोज — प्रेमका चमत्कार

(४)

तीर — (१) बाण (२) समीपता

जिन नेहु — मत दो

कमान — (१) धनुष (२) अपमान

(५)

अरविन्द — कमल

जिन तजे — जिसके बिना काम न चले उसे कैसे छोड़े

एक अनुराग — एकांगी प्रेम, एक तरफा प्यार

(विशेष इन सबमें एकांगी प्रेम है, जैसे चकोरको चन्द्रसे प्रेम है पर चन्द्रको चकोरसे नहीं है। पर प्रेमीसे प्रेमपात्रके बिना रहा ही नहीं जाता इसलिए लाचारी है।)

(६)

भूप — राजा

मूढ़ — मूर्ख, अज्ञानी

च्यातुर — चतुर

(७)

कछुक बीच बिय बीच — दानोंके बीच कुछ फर्क है

असु लेत सद — फौरन् प्राण हर लेते हैं

मीच — मृत्यु

(८)

दारिद — दरिद्रता गरीबी

कल्पद्रुम — कल्पवृक्ष

हनना — नाश करना

दास अबिनास — अविनाशी श्रीकृष्णके भक्त

(९)

दारा — स्त्री

निंदा — बुराई

सपदा — धन दौलत

परजन प्यार — दूसरोंकी इन चीजोंसे प्यार मत करो

भाट कटार — भाटकी प्यारी तलवार जो उसका ही प्राण हर लेती है

(११)

सुयोधन — दुर्योधन

(विशेष महाभारतकी एक कथाके अनुसार युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों हस्तिनापुरका निरीक्षण करने निकले। युधिष्ठिर

को कोई बुरा नही मिला और दुर्योधनको कोई भला नही दिखलाई पडा।)

(१२)

पुष्ट — भरा पूरा

सुभाय — स्वभाव

आक — अक मन्दार, एक पौधा जो गरमीमें हरा रहता है

जवास — जवासा, एक कँटीली झाडी जो गरमीमें हरी रहती है

(१३)

सो बड — वही बडा है

मग — माग

कुटिल गति — टेढी चाल

मतिमद — नीच, मूर्ख

सूतर — शुतुर ऊँट

गयद — हाथी

(१४)

जनक — पिता

जननिगत — माताकी मत्युके बाद

परिखा — परीक्षा

सुनु — सुत पुत्र

अशक्य पितु मात — माता पिताके शक्तिहीन हो जाने पर

बाटा बाँटत — सपत्तिका विभाजन करते समय

(१५)

तुष्ट — सतुष्ट, प्रसन्न

रुष्ट — नाराज, अप्रसन्न

गिध — जटायु

गुनिका — गणिका, वेश्या

भूतल — पृथ्वी, मत्युलोक

(१६)

वह पाय — वे दोनो (अलग रह कर और साथ रहकर) दोनो ही तरह दु ख पाते है क्याकि प्रीति टूट नही सकती और स्वभाव बदल नही सकता।

गडेरी — गन्नेका छोटा टुकडा

चबी — चबा ली गई

रोटी खाय — रोटी और गडेरी यदि एक साथ चबा ली जाय तो बडी मुश्किल हो जाती है क्योकि गडेरीको चूसकर थूकना पडता है और रोटीका निगलना पडता है।

२३ कविता-कुज

(१)

कहा — क्या

सीकरी — फतहपुर सीकरी

पन्हैया — जूतिया

बिसरि गयो — भूल गया

करिने परी — करनी पड़ी
बेकाम — व्यर्थ

(२)

दुरमति — कुबुद्धि, पागलपन
छाँडि — छोड़कर
मोट — पोट
बिकार — कुविचार
सिरभार — माथेका बाझ
बनजी — व्यापार
हथ्यार — हथियार शस्त्र
अध धुधमें — बिना सोचे समझे
करतार — ईश्वर
नरक जानि कै — नकमें जानेके
ल्बार — व्यर्थकी बकवास करने वाला, वाचाल
पासी — फासी
मायाजार — मायाजाल
सौं ह — सौगन्ध है कसम है
बिनस करि जहै — बरबाद हो जायगी
छिनकमें — क्षणभरमें
छार — मिट्टी, राख

(३)

दिल्जानी — प्रिय
इस्म — नाम
ठानी — स्वीकार की
निमाज — उपासनाका एक ढग
कलमा — मुसलमान धर्मका मूल मंत्र
गुनन गहूँगी — गुणोंको अपनाऊँगी
स्यामला सलोना — साँवरे रंग वाला सुन्दर कृष्ण
सिरताज — सिरमौर
कुल्हे — कलगी
दाग — आग
निदाग — निदाघ, गरमी
दहूँगी — जलूँगी
ताणी — तेरी

मग

(१)

जोत — ज्योति, प्रकाश
सूर — सूर्य
बादर — बादल
रन — रण
दाता — दानी
मांगन आये — मँगताके आने पर
पीठ दिखाये — उपेक्षा करनेसे
कर्म — तकदीर
भभूत लगाये — भस्म लगानेमे

(२)

कहेते — कहनेसे
असारसी — व्यर्थ
मक्का — मुसलमानोंका तीर्थस्थान

मीर — मुसल्मानोंके धर्मगुरु
बनारसी — बनारस
सवाद — आनन्द
हिजड़ा — नपुंसक
अँगार — आग
मूढ़ — मूर्ख
आरसी — दर्पण

(३)

प्रीतको पथ — प्रेमका मार्ग
बासो — मुकाम
नारिको नेह — स्त्रीका प्रेम
मूरखसों हाँसो — मूर्खसे हँसी
सूमकी सेव — कंजूसकी सेवा
भगनी पर भाई — बहिनके सहारे
जीनेवाला भाई
कुलच्छन नारि — कुलक्षणा स्त्री
जमाई — जामाता जवाँई
पेट पपाल — पेटके ऊपर हाथ
फेरना

बीरबल

(१)

पूत कपूत — खराब पुत्र
कुलच्छनि नारि — खराब लक्षणो
वाली स्त्री
लराक परोस — झगडालू पडोसी
लजायन — लजानेवाला
सारो — साला, पत्नीका भाई
बधु कुबुद्धि — मूर्ख भाई

पुराहित लंपट — व्यभिचारी पुजारी
चाकर चोर — चोर सेवक
अतीथ धुतारा — धूर्त (छली)
अतिथि
माहेब सूम — कंजूस मालिक
अराक तुरंग — अरवरा घोड़ा,
अडनेवाला घोडा
किसान कठोर — अविनयी किसान
दिवान नकारो — हरएक बातमें
विरोध करनेवाला मंत्री
'ब्रह्म' — बीरबलका उपनाम
शाह — बादशाह
समुद्रमें डारो — समुद्रमें डाल देना
चाहिये, नष्ट कर देना चाहिये

(२)

पौंढ़वे — लेटकर
महीपर — पृथ्वीपर
बाल — बालक
तरुनाई — जवानी
छीर पौंढ़नहार — भगवान्
विष्णु जो क्षीरसागरमें पौढ़ते हैं
कबौं — कभी भी
चित्तमें नहिं ध्याये — मनसे स्मरण
नही किया

टोडरमल

(१)

जार — उपपति पराई स्त्रीसे प्रेम
करनेवाला

विचार — समझ

गनिका — वेश्या

निगुनी — मूर्ख

अरडनकी डारसी — अरडकी डालके समान, जिसकी छाया ही नहीं होती

मदपी — शराबी

सुचि — पवित्रता

लपट — व्यभिचारी

भाव कहो फारसी — चाहे बोलचालकी भाषामें सीधी तरह समझाओ चाहे फारसी में समझाओ

(२)

सर — तालाब

रसरीत — प्रेमकी रीति

तर — वृक्ष

जन्त्र — वाद्ययन्त्र, बाजा

स्याना—मंत्रसे उपचार करनेवाला

दोहे

(१)

जडमति — मूर्ख

सुजान — पंडित

सिल पर — पत्थर पर

(२)

अपरब — अपूर्व, अनोखी

(३)

ओछा नर—निम्न कोटिका आदमी

पात्र — बरतन

(४)

पाथर — पत्थर

उछरि — उछलकर

(५)

हियकी — हृदयकी

हेत — प्रेम

अहेत — वैर

निमल — साफ

आरसी — दर्पण

(६)

जौं लौं — जब तक

जाति परत हैं — पहचाने जाते हैं

काक पिक — कौआ और कोयल

गिरधर

हँसाय — हँसी, बदनामी

चित्त — मन

खानपान — खानापीना

समान — आदर

गगरस — मनोरंजन

न भाव — अच्छे नहीं लगते हैं

टरत न टारे — हटाने पर भी नहीं हटता है

खटकत हैं — चुभती है

मीर — मुसल्मानोंके धर्मगुरु
बनारसी — बनारस
मवाद — आनन्द
हिजड़ा — नपुंसक
अंगार — आग
मृग — मृग
आरसी — दर्पण

(३)

प्रीतको पथ — प्रेमका मार्ग
बासो — मुकाम
नारिको नेह — स्त्रीका प्रेम
मूरखसा हांसो — मूर्खसे हँसी
सूमको सेव — कजूसकी सेवा
भगनी पर भाई — बहिनके सहारे जीनेवाला भाई
कुलच्छन नारि — कुलक्षणा स्त्री
जमाई — जामाता, जवाई
पेट पपाल — पेटके ऊपर हाथ फेरना

बीरबल

(१)

पूत कपूत — खराब पुत्र
कुलच्छनि नारि — खराब लक्षणा वाली स्त्री
लराक परोस — झगडालू पडोसी
लजायन — लजानेवाला
सारा — साला पत्नीका भाई
बधु कुबुद्धि — मूर्ख भाई

पुरोहित लपट — व्यभिचारी पुजारी
चाकर चोर — चोर सेवक
अतीथ धुतारा — धूर्त (ढोंगी) अतिथि
साहब सूम — कजूस मालिक
अराक तुरग — अरबका घोड़ा, अड़नेवाला घोड़ा
विमान कठोर — अविनयी विमान
दिवान नकारा — हरएक बातमें विरोध करनेवाला मंत्री
'ब्रह्म' — बीरबलका उपनाम
शाह — बादशाह
समुद्रमें डारा — समुद्रमें डाल देना चाहिये, नष्ट कर देना चाहिये

(२)

पौढ़के — लेटकर
महीपर — पृथ्वीपर
बाल — बालक
तरुनाई — जवानी
छीर पौढ़नहार — भगवान् विष्णु जो क्षीरसागरमें पौढ़ते हैं
कबीं — कभी भी
चितते नहिं ध्याये — मनसे स्मरण नहीं किया

टोडरमल

(१)

जार — उपपति पराई स्त्रीसे प्रेम करनेवाला

बिचार — समझ
गनिका — वेश्या
निगुनी — मूर्ख
अरडनकी डारसो — अरडकी डालके समान, जिसकी छाया ही नही होती
मदपी — शराबी
सुचि — पवित्रता
लपट — व्यभिचारी
भाई कहौ फारसी — चाहे बोलचालकी भाषामें सीधी तरह समझाओ, चाहे फारसी में समझाओ

(२)

सर — तालाब
रसरीत — प्रेमकी रीति
तर — वृक्ष
जन्त्र — वाद्ययन्त्र, बाजा
स्याना—मंत्रसे उपचार करनेवाला

दोहे

(१)

जडमति — मूर्ख
सुजान — पंडित
सिल पर—पत्थर पर

(२)

अपूरब — अपूर्व अनोखी

(३)

ओछा नर—निम्न कोटिका आदमी
पात्र — बरतन

(४)

पाथर — पत्थर
उछरि — उछलकर

(५)

हियको — हृदयका
हेत — प्रेम
अहेत — वैर
निमल — साफ
आरसी — दर्पण

(६)

जौ लौं — जब तक
जानि परतु है — पहचाने जाते है
काक पिक — कौआ और कोयल

गिरधर

हँसाय — हँसी बदनामी
चित्त — मन
खानपान — खानापीना
समान — आदर
रागरग — मनोरंजन
न भाव — अच्छे नही लगते हैं
टरत न टारे — हटाने पर भी नही हटता है
खटकत है — चुभती है

बताल

ससि — चन्द्रमा

हिरदै — हृदय

पत्र बिन — पत्तोंके बिना

तरुवर — वृक्ष

गज दंत — एक दाँतसे हाथी सूना लगता है

ललित — कला

सायर — चतुर व्यक्ति

विप्र — ब्राह्मण

बिहून — बिना रहित

घटा — बादल

दामिनी — बिजली

कामिनी — सुन्दर स्त्री

पद्माकर

जमराज — मृत्युका देवता

भाख्यो — बोला

चित्रगुप्त — मनुष्यके कर्मोंका लेखा-जोखा लेनेवाला

हुकुममें कान द — मेरी आज्ञाक सुन

मूद करि — बन्द कर दे

तजि यह थान दै — इस स्थानक छोड़ दे

देवनदी — गंगा

कीन्हें सब देव — सबका देवत बना दिया है

दूतन बुलाइकैं — कर्मचारियोंक बुलाकर

बिदा के पान दै — नौकरीसे बिदा करनेका परवाना दे दे

फरद — सूची

रोजनामा — व्यक्तियोंके कर्मोंकी दिनचर्या

खाता दै — खातेका नष्ट हो जाने दे

बही दै — बहीको बह जाने दे
